

સ્વર્ગવાસી શેઠ નરોતમ નાગજી

જન્મ,
સંવત ૧૯૩૬ ના પોષ વદી ૧૦

દેહોત્સર્ગ,
સંવત ૧૯૬૨ ના ભાદરવા વદી ૮

અર્પણપત્રિકા.

स्वर्गस्थ श्रावक रत्न शेठ नरोत्तम-

दास नागजी.

जेनुं टुंकुं जीवन आदरणीय, अने अनुकरणीय हतुं, अने लघु वयथीज जेनुं मन अनेक सद्गुणोथी भरपूर हतुं, जेओनी धर्म तरफनी श्रद्धा दृढ हती, जिन आगमना जेओ अभ्यासी हता, अने जिन भगवाननी भक्तिमां जेओ घणा प्रेमी हता, पोताना श्रावक बंधुओमां धार्मिक ज्ञाननो प्रचार जोवाने जेओ हमेशां उत्सुक हता, एवा श्री मांगरोळ निवासी स्वर्गवासी श्रावक रत्न शेठ नरोत्तमदास नागजीने अमो आ पुस्तक सद्भावथी अर्पण करीए छीए.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

श्रेष्टीवर्य शेठ नरोत्तम नागजी मोतीचंदनी जींदगीनो टूंक वृत्तांत.



आ वीर नरनो जन्म श्रीमुम्बापुरी मध्ये संवत १९३६ ना पोष वद १० ने दीवसे थयो हतो. शेठ मोतीचंद देवचंदना श्रीमान् कुटुंबमां लाड साथे उछरतां बीजना चंद्रनी पेठे वृद्धि पामतां पामतां तेमने ब्रह्मचर्यावस्था प्राप्त थइ. तेमना पूज्य पितामह तथा पिताश्रीनी खंत अने देखरेख नीचे गुजराती तेमज अंग्रेजी भाषानुं समयोचित ज्ञान मेळववामां तेओ फत्तेहमंद नीवड्या हता. जैन तत्त्व ज्ञानमां पण तेओ कुशळता धरावता हता. गीत वाजींत्राकदिनुं ज्ञान पण तेओए संपादन करेलुं हतुं. आ ब्रह्मचर्यावस्थानो समय पुरो थतां संवत १९५१ ना वैशाख मासमां पोतानी ज्ञातिना रीवाज मुजब पोतानी व्यवहारिक आबरु प्रमाणे घणा आडंबर तथा धामधुमथी ज्ञातिमां उंच कुळमां गणाती कन्या नामे नंदकुंवर साथे तेमनां लग्न करवामां आव्यां हतां. एटले पंदर वरसनी उम्मरथी तेओए गृहस्थावासमां प्रवेश कर्यो हतो. आ समयथी तेओना गृहस्थ तरीकेना गुणो व्यक्त जणावा लाग्या हता. धार्मिक वृत्ति पण द्रढ थती जणाती हती. सत्संग पूज्य पूजन इत्यादि मार्गानुसारीना गुणो तेमां

मोटे भागे उपलब्ध थता हता. माध्यस्थादि श्रावकना एकवीश गुणोए पण तेने विषे प्रथमथी वास करेलो होय, एम बाह्य चिन्होपरथी जणातुं हतुं. गुरु वंदन, शास्त्र श्रवण, आवश्यक क्रिया इत्यादि श्राद्ध कृत्योमां मग्न होवा साथे जिन पूजा तरफ तेमनुं लक्ष विशेष चोटेलुं जणातुं हतुं.

क्रमे क्रमे ते जिन पूजानुं स्वरुप घणा उंचा प्रकारे समजवा लाग्या हता. दुर्गतिवारक, सुगतिदायक, आपत्तिक्षायक, संपत्तिधायक, सौभाग्य, निरोगता, पुण्य, प्रीति, इत्यादि उत्पादक जिनेश्वरनी पूजाज छे, एम तेओ शुद्ध श्रद्धापूर्वक समजता हता, जे तेमनी पूजा करती वखतनी मुखाकृति उपरथी स्पष्टपणे जणाइ आवतुं हतुं.

आवी उंचा प्रकारनी शुद्ध पुष्प, चंदन, धूप दीपादि द्रव्यथी द्रव्य पूजा तेओ करता तेथी कायर पुरुषोने पण दुस्तर संसार सुतर बनाववा अने मोक्ष वधूने स्वयंवरा बनाववानी इच्छा उत्पन्न करावनारा तेओ जणाता हता. अष्ट, सप्तविंशति, एकविंशति इत्यादि नाना प्रकारनी पूजाओमां पण तेओ विशेष कुशळ हता. आ प्रकारनी द्रव्य पूजामां तेओ प्रवीण हता, एटलुंज नहि, पण दयारुप जळथी स्नान करी, संतोषरुप शुद्ध वस्त्र पहेरी, विवेकरुप तिलक करी, शुद्ध भावनाथी पावन बनी, भक्ति अने श्रद्धारुपी केशर मिश्रित चंदन लइ, शुद्ध आत्मस्वरुप

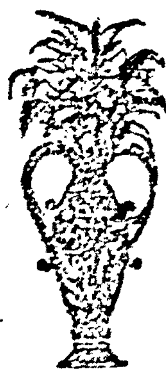
देवनी नवांग भाव पूजा रचवामां पण तेओ पांडित्य धरावता हता, उपरांत भाव पूजाना जुदा जुदा भेदोमां पण तेओ पटुत्वने धारण करतां हता.

आवी उच्च प्रकारनी शुद्ध वृत्ति होवा उपरांत व्यवहारनां मुख्य साधनरूप द्रव्यने मेळववामां पण तेओ कुशळ हता. पोताना पितामह तथा पिताश्रीए ग्रहण करेला अर्थ शास्त्रना व्यवहारमांज तेओए पण एक न्यायोपार्जित द्रव्य मेळवनार तरीके शरुआत करी हती, अने धीमे धीमे एक बाहोश अर्थ शास्त्रना अनुभवी तरीके झळकी निकळवानां चिन्हो तेओमां जणातां हतां. आ रीते धर्मपूर्वक व्यवहार चलावतां लगभग अगीयार वरस थवा आव्या काळ पोतानुं काम कर्या करे छे. दरेक अवस्थानो अंत होय छे. एवा कुदरतना कानुनोने अनुसरी कर्म परिणामि महाराजाए पोतानी दाहक द्रष्टि आ कोमळ पुष्पाकार नर तरफ फेरवी, अने काळ परिणति राणीनी प्रेरणाथी स्वरसुंदरीओए करेला हावभाव अने कटाक्षथी प्रेमांतकग्रस्त थयो होय, तेम टुंक मुदतनी व्यथा अनुभवी, अमर स्त्रीओए करेला संकेतने अनुसरीने होयनी, जाणे, तेम आ युवान नर रत्न पोताना पितामह, मातामह, पिता, माता, भार्या, भगिनी, त्रण पुत्री, एक पुत्र, अने सगांसंबंधी तेमज मित्र मंडळोने शोक सागरमां डुबतां मुकीने सं. १९६२ ना भादरवा वद ७ ने मंगळवारनी पण अमंगळ रात्रिना दश वागे अंधकारने समये

२५ वरसनी बालवये आ फानी दुनिआनो त्याग करी चालता थया.

तेमनी पाछळ तेना वडीलोए तेमज तेमनी पाछळ तेनी धर्म पत्नीए जुदां जुदां शुभ खातामां तेमना नामने अमर राखवा रु. ९००० जेवडी एक नादर रकम जुदी काढेली छे, जे मरण पाछळ पोतानी शक्ति अनुसार करवुं ते योग्यज छे.

आवा एक नर रत्नना स्मरण साधनरुप तेनां आ टुंक जीवन चरित्र शिवाय बीजुं कशुं छेज नहि, तेथी तेटलाथीज संतोष मानी ते उत्तम आत्मानी शुभ गति थाओ, एवी निरंतर इच्छा धराविशुं.





प्रस्तावना.

श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी अमारा तरफथी प्रसिद्ध थइ चुकी छे, तेनुं आ बीजुं पुस्तक " श्री जैन धर्मनी बीजी चोपडी " छे. पहेली चोपडीनी प्रस्तावनामां आ वांचनमाळा प्रसिद्ध करवानो अमारो हेतु स्पष्टपणे बताव्यो छे, तेथी अत्र ते संबंधी पुनः विवेचन करवुं, ए काळक्षेपन करवा जेवुं छे, एम समजी ते करता नथी.

आ जैन धर्मनी बीजी चोपडी सुद्धां श्री जैन धर्म वांचनमाळानां अमारा तरफथी कुल ६ पुस्तको प्रसिद्ध थयां छे. प्रथमनां चार पुस्तको " श्री जैन धर्म प्रवेश पोथी " ए नामनां छे, अने पछीनां बे श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी अने बीजी चोपडी, ए मळी कुल ६ पुस्तको अमारी जैन वांचनमाळामां प्रसिद्ध थयां छे.

आधुनिक शाळाओमां विशेष करीने व्यावहारिक विषयोनुं

शिक्षण आपवामां आवे छे, पण धार्मिक शिक्षणनी योजना जोवामां आवती नथी. बीजा व्यावहारिक शिक्षणने मुकावले धर्म शिक्षणनी केटली अगत्यता छे, ए विचार करीए तो सर्वथा एमज कहेवुं पडे छे के, दरेक शाळाओमां धर्मशिक्षण अवश्य अपावुंज जोइए. आपणा जैन धर्मना शिक्षणने माटे जुदा जुदा स्थळोमां शाळाओ स्थापित थइ छे, अने थती जाय छे, ए एक हर्षनी वात छे. आपणा धर्मशिक्षण प्रत्येनी आ जागृति अभिनंदनीय छे, पण मात्र जागृति थइ एटला उपरथीज हर्ष पामी वेसी रहेवानुं नथी, पण तेने संपूर्णपणे पार पाडवाने माटे प्रयत्न थवानी जरुर छे, अने एम थाय, तोज खरेखरो अर्थ सिद्ध थाय छे. ए कहेवुं सत्य छे के, आपणो धार्मिक शिक्षण संबंधी हेतु पार पाडवाने माटे साधनोनी जरुर छे, अने ते साधनोमां आवा प्रकारनी धार्मिक विषयनी वांचनमाळाओनो समावेश थाय छे.

जैन धर्मना शिक्षणने माटे वांचनमाळानी अगत्य सर्व कोइ स्वीकारे छे, पण अद्यापि सुधी एवा प्रकारनी वांचनमाळानां पुस्तको थोडांज वहार पड्यां छे, जे खामी पुरी पाडवाने माटे अमोए आ वांचनमाळानां पुस्तको प्रसिद्ध कर्यां छे, अने अमे इच्छीए छीए के, ते जैन विद्यार्थीओने सर्व रीते उपयोगी थाय, अने धार्मिक ज्ञान लेवाने तेओने सुगमता थाय, एवी अमारी धारणा छे.

प्राचीन आचार्य मुनि महाराजोए आपणा धर्मना जे

महान ग्रंथो रच्या छे, तेनी पासे तो आ पुस्तको लेश मात्र पण नथी, तोपण ते महात्माओनां वचनोनेज अवलंबी चालु जमानाने अनुकुळ थाय, एवां पुस्तकोनी अमोए रचना करी छे, अने आ पुस्तक वांची श्रावक वर्ग धर्मनो बोध मेळववा शक्तिमान थशे, अने प्राचीन ग्रंथो वांचवा तेमनी अभिरुची वधशे, तो अमे अमारो श्रम सफळ थयो गणीशुं.

अमने कहेवाने हर्ष थाय छे के, आ वांचनमाळानां प्रसिद्ध थएलां पुस्तको जैन शाळाओमां घणे ठेकाणे चलाववां शरु थयां छे, अने विद्यार्थीओने ते द्वारा धार्मिक बोध सुगमताथी थइ शके छे, एवुं अनुभवमां आवेलुं छे. आ प्रमाणे घणे स्थळे शाळाओमां आ पुस्तको उपयोगी थइ पडवाथी तेमांनां केटलांक पुस्तकोनी पुनः आवृत्ति काढवानी जरुर पडी छे. आ प्रमाणे आ वांचनमाळा आपणी शाळाओमां उपयोगी थवाथी अमोने ते प्रसिद्ध करावबा संबंधी उत्साह वध्यो छे, अने अमो आशा राखीए छीए के, आ वांचनमाळानां बाकीनां पुस्तको पण जेम बने तेम जलदी तैयार करी, सद्गुणी श्रावको पासे अमे रजु करीशुं.

श्री जैन आगमना द्रव्यानुयोग, चरण करणानुयोग, कथानुयोग, अने गणितानुयोग, ए चार योगनुं मूळ तत्वरुप ज्ञान मेळववाने विद्यार्थीओने सुगम पडे, अने ते

ज्ञान मेळववानी तेमने जिज्ञासा उत्पन्न थाय, अने सरळताथी तेओ बोध मेळवी शके, ए वांचनमाळानो मुख्य उद्देश छे. श्री जैन आगम जे चार योगथी विराजीत छे, तेनुं क्रमसर ज्ञान थाय, एवा पाठो आ पुस्तकोमां दाखल करेला छे. सर्व स्थळे विद्यार्थीओनी शक्ति उपर विचार करीने तेमने दरेक विषयना रहस्य समजाय, तेवी रीते सरल भाषामां पाठो लखेला छे. दरेक पाठमां शाळाओमां भणता अभ्यासीओने एक दिवसना अभ्यास जेटलो विषय समावेलो छे, अने ज्यां ज्यां विषयनो संबंध पाछळना पुस्तको जोडे छे, त्यां आ पुस्तकमां पण तेनुं थोडुं पुनरावर्तन करी, विद्यार्थीओने पाछळना पाठो स्मरणमां राखवाने सहाय मळे तेम करेलुं छे.

आ पुस्तकना चार खंड करेला छे. पहेला खंडमां सम्यक्त्वनुं स्वरुप स्पष्टपणे समजाव्युं छे, अने तेज संबंधमां अतिचार, श्रद्धा, लिंग, दश प्रकारना विनय, त्रण शुद्धि, पांच दूषण, आठ प्रभावक, पांच भूषण, पांच लक्षण, छ यतना, छ आगार, छ भावना, समकितना ६७ बोल, पच्चखाण ए वगेरे पाठो गोठवेला छे.

बीजा खंडमां श्रावकना सामान्य आचार, अने नीतिना पाठो आपेला छे. एटले सदाचार, विधि अने निषेध कार्य, भोजन विधि वगेरे संबंधी पाठो आपेला छे. त्रीजा खंडमां नव तत्वना बोधक पाठो आपेला छे.

ए खंडमां कुल ५२ पाठो छे. तेमां नव तत्वनो संपूर्ण सार समावेलो छे. चोथा खंडमां कथानुयोगना पाठो आपेला छे, तेमां श्री अजितनाथ, सगर चक्रवर्त्ति वगेरेनां चरित्रो आपवामां आवेलां छे. चारे खंडमां कुल मळीने ८५ पाठो आवेला छे. आ पुस्तकनी पहेलांनां पुस्तकोमां आवेला कोइ कोइ पाठो वधारे विस्तारथी आ पुस्तकमां आपेला छे.

शिक्षक अने शिष्य बंनेने सुगम पडे, माटे प्रत्येक पाठने छेडे सारांश प्रश्नो आपेला छे. जो विद्यार्थीओ ते प्रश्नोना उत्तर यथार्थ आपी शके, तो पुस्तक मांहेनो सघळो विषय तेमना हृदयमां द्रढ थाय एवी योजना छे. वळी शिक्षक वर्गने विद्यार्थीओना पाठ तैयार छे के नहीं, ते बाबतनी परीक्षा करवाने ए प्रश्नो घणा उपयोगी छे. पाठ रचवामां विद्यार्थीओथी केटलो विषय ग्रहण करी शकाशे, ते उपर खास लक्ष आप्युं छे, अने जे विषयो मोटा छे, तेना भागो पाडी बे त्रण के तेथी वधारे पाठो लखेला छे.

आ पुस्तक तैयार करवामां ते शुद्ध अने सरल थाय, तेने माटे अमोए खास ध्यान आपेलुं छे. विद्वान मुनि महाराजो अने श्रावक गृहस्थो पासे शोधावी दोष रहित थाय, तेने माटे प्रयत्न करेलो छे, छतां पण धर्म-तत्वनो विषय घणो गंभीर छे, एथी आ पुस्तकमां जे

कांइ दोष रही गया होय, ते संबंधी अमो पूज्य मुनि महाराजो अने विद्वान श्रावक वर्ग पासे क्षमा मागीए छीए, तथा तेमने विनति करीए छीए के, आ पुस्तकमां कोइ स्थळे कंइ दोष तेमना जोवामां आवे, तो ते अमारी उपर लखी मोकलवा कृपा करवी, जेथी अमो तेमनो उपकार मानीशुं, अने बीजी आवृत्ति कढाववाने प्रसंगे ते सुधारीशुं.

आ वांचनमाळाना प्रथम प्रसिद्ध थयेलां पुस्तको अमोए विद्वान मुनिराजो तथा सुज्ञ श्रावकवर्ग तरफ तेमना अभिप्राय अर्थे मोकलेलां, के जेथी तेमां रहेला दोष विगेरेनुं बीजी आवृत्ति प्रसंगे संशोधन थाय. तेओए कृपा करी अमारा पुस्तकोनुं अवलोकन करी पोताना अभिप्रायो मोकल्या छे, जे आ पुस्तकना पछवाडेना भागमां अमोए आपेला छे. आ प्रमाणे आ पुस्तकने माटे पण विद्वान मुनिराजो तथा श्रावक गृहस्थो पोतानो अभिप्राय लखी अमोने ते संबंधी सुचना आपवा कृपा करशे, एवी आशा राखीए छीए.

आ पुस्तक रचवामां अमोने पूज्य मुनि महाराज श्री चारित्रविजयजीए घणी अमूल्य सहाय आपेली छे. उक्त मुनि महाराज श्री अमारा वर्गना कार्यने वखतोवखत सहाय आपवानी कृपा करे छे; जेथी तेमनो अमो आ प्रसंगे उपकार मानीए छीए.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां मांगरोळवाळा शेठ नागजी मोतीचंदे पोताना स्व० पुत्ररत्न नरोत्तमदास, के जेमनुं जीवनचरित्र आ पुस्तक साथे अमोए प्रसिद्ध कर्युं छे, तेमना स्मरणार्थे रु. ३००) नी सहाय आपेली छे, जेथी आ पुस्तक प्रसिद्ध करावावाने अमो शक्तिवान थया छीए. अमो उक्त श्रावकरत्न शेठ नागजीभाइनो आ प्रसंगे आभार मानीए छीए, अने अन्य श्रावक गृहस्थोने उक्त शेठनो दाखलो लइ अमारा पुस्तक प्रसिद्धीना खाताने सहाय आपवाने माटे विज्ञप्ति करीए छीए.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

अनुक्रमणिका.

खंड १ लो.

खंड २ जो.

खंड ३ जो.

23678

खंड ४ थो.

श्री जैन धर्म बीजी चोपडी.



खंड १ लो.

पाठ १ लो.

सम्यक्त्व भाग १ लो.

सम्यक्त्व ए आत्मानो शुभ परिणामरुप गुण छे. ते सम्यक्त्व एवी वस्तु छे के, जे छद्मस्थ विगेरेने प्रत्यक्ष थइ शके तेम नथी. सम्यक्त्व आत्मानो शुभ परिणाम छे. सम्यक्त्वनो प्रभाव अलौकिक छे, जैन धर्मनी वधी महत्ता सम्यक्त्वने आश्रीने रहेली छे, जैन तत्त्वज्ञान संपादन करवानो उत्तम अधिकार सम्यक्त्वथी प्राप्त थाय छे. जो हृदयमां सम्यक्त्व होय तो ते जैन धर्मना रहस्यने जाणी शके छे. कुदेव, कुगुरु अने कुधर्मनो परित्याग करी शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी आस्था राखवी, ते सम्यक्त्वनुं मूळ स्वरुप छे. ते सम्यक्त्व ओळखवाने माटे सम्यक्त्वना जुदाजुदा सडसठ प्रकार छे. ते जैन संप्रदायमां 'समकितना सडसठ बोल' एवा नामथी ओळखाय छे. सम्यक्त्वनुं बीजुं प्राकृत नाम समकित छे, अने प्राये करीने जैन प्रजामां

ते नामथी ते वधारे मख्यात छे. समकितना सडसठ बोलनी गणना आ प्रमाणे थाय छे. सदहणाना चार भेद छे, लिंगना त्रण भेद छे, विनयना दश भेद छे, शुद्धिना त्रण प्रकार छे, दूषणना पांच प्रकार छे, प्रभावक आठ कहेवाय छे, भूषण पांच छे, लक्षणना पांच भेद छे, छ प्रकारे यतना कहेवाय छे, छ आगार कहेवाय छे, छ भावना अने छ स्थान कहेवाय छे. आवी रीते समकितना आश्रयी कुल मळीने सडसठ बोल थाय छे. दरेक श्रावकनां संताने आ सडसठ बोल बराबर समजीने याद करवा जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्व ए शुं छे ? २ सम्यक्त्व प्रत्यक्ष थइ शके तेवी वस्तु छे के केम ? ३ सम्यक्त्वथी शो लाभ थाय छे ? ४ हृदयमां सम्यक्त्व होवाथी शुं थाय छे ? ५ सम्यक्त्वनुं मूळ स्वरुप शुं छे ? ६ सम्यक्त्वना केटला प्रकार छे ? अने ते जैन संप्रदायमां केवा नामथी ओळखाय छे ? ७ सम्यक्त्वनुं बीजुं नाम शुं छे ? ८ सम्यक्त्वना बधा बोल गणावो. ९ स्थान अने आगार केटला छे ? १० भूपण अने लक्षण केटलां छे ? ११ विनय, लिंग अने दुपणना केटला प्रकार छे ? १२ शुद्धि अने

प्रभावक केटला छे ? १३ सद्दहणा अने यतनाना केटला प्रकार छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ परिणाम, छद्मस्थ, अलौकिक, महत्ता, रहस्य, अधिकार, आस्था, सद्दहणा, लिंग, शुद्धि, दूषण, प्रभावक, यतना, आगार, भावना, स्थान.

पाठ २ जो.

सम्यक्त्व भाग २ जो.

शुद्ध देव, गुरु, अने धर्म—ए त्रण तत्व उपर जे निश्चळ परिणामरुप श्रद्धा ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. कदि कोइ जीवने उपरनां त्रण तत्त्वनो बराबर बोध न होय, पण जो ते जीव कदि पक्षपात छोडी दइने मनमां एवुं धारे के, " जिनेश्वर भगवाने जे अर्थ कह्या छे, ते बधा निःशंकपणे सत्य छे. " आवी तेनी तत्त्व उपरनी जे श्रद्धा, ते पण सम्यग् दर्शन कहेवाय छे, तेनाथी जे विपरीत ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. वळी मिथ्यात्वनो त्याग करवो, ते पण सम्यक्त्व कहेवाय छे.

देव, गुरु, अने धर्मना स्वरुपने जाणीने निश्चय करवो, ते पण सम्यक्त्व कहेवाय छे. चार अनंतानुबंधी कषाय, सम्यक्त्व मोह, मिश्र मोह, अने मिथ्यात्व मोह—आ सात प्रकृतिनो जे जीव उपशम करे, तथा क्षयोपशम करे, ते जीवने उपशम अने क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय छे. ए सम्यक्त्व प्रत्यक्ष ज्ञाननो विषय नथी. "आ जीवने सम्यक्त्व छे," एवुं केवळी जाणी शके छे. जे जीवने सम्यक्त्व प्रगट थाय छे, ते जीवने नरक तथा तिर्यंच आ बन्ने गतिना आयुष्यनो बंध थतो नथी.

ए सम्यक्त्वना पांच अतिचार छे. १ शंका अतिचार, २ आकांक्षा अतिचार, ३ वितिगिच्छा अतिचार, ४ मिथ्या द्रष्टि प्रशंसा अतिचार, अने ५ मिथ्या द्रष्टि परिचय अतिचार—आवां तेनां नाम छे.

जिन वचनमां शंका करवी नहि. जो शंका करवामां आवे तो, शंका नामे पहेलो अतिचार छे. बीजा मतवाळाओनां अज्ञान कष्ट देखी, कोइ पाखंडीना विद्या मंत्रना चमत्कार देखी, तेमज पूर्व जन्मनां अज्ञान कष्टथी फळ पामेळा अन्य मतवाळाओने सुखी, तेमज धनवान् देखी, पोताना मनमां ते मतनी प्रशंसा करे, अने तेने अंगीकार करवानी आकांक्षा राखे, ते आकांक्षा नामे बीजो अतिचार लागे छे. तेथी बीजा मतनी आकांक्षा न करवी. पोताना पूर्व जन्मनां करेलां पापना उदयथी दुःख

भोगवतो जीव एवो विचार करे के, " हुं धर्म करुं छुं, तेनुं फळ मने शुं मळशे ? अथवा मळशे के नहीं ? वळी जेओ धर्म करता नथी, तेओ सुखी छे, अने हुं धर्म करुं छुं, तथापि दुःखी थाउं छुं. " आ प्रमाणे विचारवुं, ते वितिगिच्छा नामे त्रीजो अतिचार छे, तथा जैन साधुनां मलिन शरीर तथा मलिन वस्त्र देखीने मनमां दुगंछा करे के, " आ साधु गंदा छे. आवा मलिन साधु शी रीते संसारने तरी शके ? " आवो विचार करवाथी पण वितिगिच्छा नामे त्रीजो अतिचार लागे छे, माटे उपर प्रमाणे दुगंछा न करवी.

जिन प्रणित आज्ञाथी जे बाहेर छे, ते मिथ्या द्रष्टि छे. कारण के तेओ सर्वज्ञनां वचनोने मानता नथी, अने असर्वज्ञनां वचनोने सत्य माने छे. आवा जिनाज्ञानी बाहेर अज्ञान कष्ट करनारा मिथ्यात्वीओनी प्रशंसा करवी, तेओनां तप, व्रत, अने पर्वोत्सवनां वखाण करवां, ते मिथ्या द्रष्टि प्रशंसा नामे चोथो अतिचार छे, तेथी सम्यक्त्ववाळा भविजनोए मिथ्या द्रष्टिनी प्रशंसा न करवी.

मिथ्या द्रष्टिनी साथे बहुज मेळाप राखे, खानपान करे, अने वास करे, ते मिथ्या द्रष्टि परिचय नामे पांचमो अतिचार छे, एवा अनेक प्रकारे सहवास करवाथी मिथ्या द्रष्टिनी वासना लागी जाय छे, अने तेम करतां छेवटे धर्मभ्रष्ट थइ जवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्व एटले शुं ? २ सात प्रकृति कइ कइ ? ३ आ जीवने सम्यक्त्व छे, एवुं कोण जाणी शके ? ४ सम्यक्त्वना पांच अतिचार गणावो. ५ पांच अतिचारनी समजुती आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

श्रद्धा, सम्यक्त्व, अनंतानुबंधी कषाय, उपशम, क्षयोपशम, आकांक्षा, वितिगिच्छा, पर्वोत्सव, धर्मभ्रष्ट.

पाठ २ जो.

श्रद्धा अथवा सद्दहणा.

आस्तिकपणानी जे बुद्धि ते श्रद्धा अथवा सद्दहणा कहेवाय छे. ते सद्दहणानो संबंध समकितनी साथे रहेलो छे. ते सद्दहणाना चार प्रकार छे. जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास करवो, ते संबंधी सारो विचार करवो, ते श्रद्धानो पहेलो प्रकार छे. जीव विगेरे नव तत्वो श्री जिन भगवंते कहेला छे, अने तेमां जे जे कहेवामां आव्युं छे, ते बराबर छे. तेमज तेनी अंदर जे जे कहेलुं छे,

ते सत्य छे. आ प्रमाणे विचार करी ते नवतत्वनुं ज्ञान यथार्थ मेळववुं, ते श्रद्धानो पहेलो प्रकार छे.

गुरुसेवा ए श्रद्धानो बीजो प्रकार छे. साधु मुनिराजनी शुद्ध बुद्धिथी सेवा करवी, तेमनुं निर्मळ चारित्र जोइ उत्तम प्रकारे तेमनी भक्ति करवी, ए श्रद्धाना बीजा प्रकारमां आवे छे. जे समकितथी भ्रष्ट होय, तेमनो संग करवो नहि, ए श्रद्धानो त्रीजो प्रकार छे. पासथ्था, कुशीलिआ अने वेषविडंबक, एवा लोको धर्मथी भ्रष्ट होय छे. जेओ धर्मीपणाना डोळघालु होय, तेमज खोटा आडंबरथी धर्मनो विपरीत बोध आपनारा होय, ते पासथ्था कहेवाय छे. जेमनामां शीलगुण न होय, ते कुशीलिआ कहेवाय छे, अने खोटो वेष धरी बीजाने ठगनारा होय, ते वेषविडंबक एवा नामथी ओळखाय छे, ते पासथ्था, कुशीलिआ अने वेषविडंवक ए बधा समकितथी भ्रष्ट होय छे, तेवाओनो संग करवो नहीं, ते सद्दहणाना त्रीजा भेदमां आवे छे.

मिथ्यात्वीनो संग न करवो, ते श्रद्धानो चोथो प्रकार छे. मिथ्यात्वी एटले अन्य दर्शनी—जे बीजा दर्शन—(मत)ने माननारा होय, तेवाओनो संग न करवो. कारण के तेवाओनो संग करवाथी समकितनो नाश थाय छे.

आ चार श्रद्धाना प्रकार छे. जे भव्य मनुष्यने

समकित उपर श्रद्धा होय, ते जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास करे छे, अने सर्वदा तेनोज विचार करे छे. समकितनी श्रद्धावाळो मनुष्य साधु-मुनिराजनी सेवा करे छे. पासथ्था, कुशीलिआ अने वेष विडंबक एवा समकितथी भ्रष्ट थयेलानो तेमज मिथ्यात्वीनो संग करता नथी, ए समकितनी श्रद्धानो प्रभाव छे.

सारांश प्रश्नो.

१ श्रद्धा अथवा सद्दहणा एटले शुं ? २ सद्दहणाना केटला प्रकार छे ? ३ जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास अने तेनो विचार करवो, ते श्रद्धानो क्यो प्रकार छे ? ४ पासथ्था, कुशीलिआ विगेरेनो संग करवो नहीं, ते श्रद्धानो क्यो प्रकार ? ५ साधु मुनिराजनी सेवा करवी, ते क्यो प्रकार छे ? ६ मिथ्यात्वीनो संग न करवो, ते क्यो प्रकार छे ? ७ खोटा वेषधारी बीजाओने ठगनारा होय, ते केवा कहेवाय छे ? ८ पासथ्था अने कुशीलिआ एटले शुं ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

भ्रष्ट, पासथ्था, कुशीलिआ, वेषविडंबक, आडंबर, विपरीत, मिथ्यात्वी, अन्य दर्शनी, दर्शन, भव्य मनुष्य.

पाठ ४ थो.

त्रण लिंग.

जेनामां समकित होय, तेवा माणसने ओळखावनारां जे चिन्ह ते लिंग कहेवाय छे. ते समकितनां लिंग त्रण प्रकारे छे. सिद्धांत एटले श्री वीतराग प्रभुनी वाणी, तेने सांभळवानी अति अभिलाषा थाय, ते समकितनुं पहेलुं लिंग छे. कहेवानो आशय एवो छे के, जे मनुष्यने सिद्धांत सांभळवानी अभिलाषा थती होय, ते चिन्ह उपरथी एम समजवुं के, तेनामां समकित छे.

चारित्र धर्म एटले व्रत पच्चखाण करवानी जेने अति अभिलाषा थाय, ते समकितनुं बीजुं लिंग छे. जे मनुष्य व्रत पच्चखाण करवानी अति अभिलाषा राखतो होय, तो समजवुं के, ते मनुष्यमां समकित छे.

देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच्च करवामां सावधान रहेवुं, ते समकितनुं त्रीजुं लिंग छे. जे माणस देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच्च करवामां सावधान रहेतो होय, तो तेनामां समकित छे, एम समजवुं.

उपर कहेलां त्रण लिंगो ते समकितने ओळखवानां खरेखरां चिन्हो छे. जो हृदयमां समकित होय, तो माणसने सिद्धांत सांभळवानी अभिलाषा थाय छे. व्रत

पच्चखाण करवानी इच्छा थाय छे, अने तेनाथी देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच्च करवामां सावधान रहेवाय छे. संक्षेपमां एटलुंज समजवानुं के, सिद्धांत श्रवणाभिलाष, चारित्र धर्माभिलाष, अने देव, गुरु सेवा ए त्रण सम्यक्त्वनां लिंगो छे.

सारांश प्रश्नो.

१ लिंग एटले शुं ? २ व्रत-पच्चखाण करवानी अभिलाषा ते समकितनुं क्युं लिंग छे ? ३ वीतरागनी वाणी सांभळवानी इच्छा ते क्युं लिंग छे ? ४ चारित्र धर्म एटले शुं ? अने ते क्युं लिंग ? ते कहो. ५ त्रण लिंगोनां संक्षेपथी नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

चिन्ह, लिंग, वीतराग, वैयावच्च, सावधान.

पाठ ५ मो.

दश प्रकारना विनय.

सम्यक् ज्ञान अने दर्शन विगेरे सघळा गुणोनुं मूळ विनय छे. जेनाथी आठ प्रकारनां कर्मने वि एटले वि-

शेषे, नय एटले दूर करी शकाय, ते विनय कहेवाय छे. अथवा जे संसारनो लय करे, ते विनय कहेवाय छे. सेवा, भक्ति, बहु मान करवा, अंदरनो प्रेम वतावचो, गुण गावा, अने अवगुण छोडवा, ए वधां विनयनां लक्षण छे. ते विनय दश प्रकारे थाय छे. १ अरिहंत देवनो विनय, २ सिद्ध भगवान्नो विनय, ३ जिन प्रतिमानो विनय, ४ श्रुत धर्मनो विनय, ५ चारित्र धर्मनो विनय, ६ सर्व साधुनो विनय, ७ आचार्यनो विनय, ८ उपाध्यायनो विनय, ९ चतुर्विध संघनो विनय, अने १० सम्यग् दर्शननो विनय—एम तेना दश प्रकार पडे छे. देवनी चोराशी प्रकारनी, अने गुरुनी तेत्रीश प्रकारनी आशातना टाळवी—ए पण विनयमां गणाय छे.

विनयना बीजी रीते पांच प्रकार पण थइ शके छे. १ दर्शन विनय, २ ज्ञान विनय, ३ चारित्र विनय, ४ तप विनय, अने ५ औपचारिक विनय—एवां तेनां नाम छे. दर्शनमां कहेला धर्मास्तिकायादि पदार्थ उपर श्रद्धा करवी, ते पहेलो दर्शन विनय कहेवाय छे. ते पदार्थनुं ज्ञान मेळववुं, ते बीजो ज्ञान विनय कहेवाय छे. क्रिया करवी, ते त्रीजो चारित्र विनय गणाय छे, अने सम्यक् रीते तपस्या करवी, ते चोथो तप विनय कहेवाय छे. पांचमा औपचारिक विनयना बे भेद छे. १ प्रतिरूप विनय अने २ अनाशातना विनय. तेमां

प्रतिरुप विनयना त्रण प्रकार छे. १ कायिक प्रतिरुप विनय, २ वाचिक प्रतिरुप विनय, अने ३ मानसिक प्रतिरुप विनय.

तेमां पहेला कायिक प्रतिरुप विनयना आठ प्रकार छे. १ अभ्युत्थान, २ अंजलिबंध, ३ आसन प्रदान, ४ अभिग्रह, ५ कृति कर्म, ६ शुश्रूषा, ७ अनुगमन, अने ८ संसाधन—एवां तेमनां नाम छे. गुणवान् जननी तरफ उठी सामा जवुं, ते **अभ्युत्थान**, तेनी सामे हाथ जोडी उभा रहेवुं, ते **अंजलिबंध**, तेमने आसन आपवुं, ते **आसन प्रदान**, तेमनी चीज—वस्तु लइ, ठेकाणे राखवी, ते **अभिग्रह**, तेमने वंदन करवुं, ते **कृति कर्म**, तेमनी आज्ञा सांभळवा तैयार रहेवुं, ते **शुश्रूषा**, तेमनी पाछळ जवुं, ते **अनुगमन**, अने तेमनी पगचंपी करवी, ते **संसाधन** कहेवाय छे. आ प्रमाणे कायिक विनयना आठ प्रकार थाय छे.

वाचिक प्रतिरुप विनयना चार प्रकार छे. १ हित, २ मित, ३ अपरूप, अने ४ अनुपाति–एवां तेनां नाम छे. हित एटले हितकारी बोलवुं, मित एटले खप पूरतुं बोलवुं, अपरुष एटले मधुर बोलवुं, अने अनुपाति एटले अनुसरतुं बोलवुं. आवी रीते वाचिक प्रतिरुप विनयना चार भेद छे.

मानसिक प्रतिरुप विनयना बे भेद छे. १ अकुशल

मनोनिरोध, अने २ कुशळमन उदीरणा-आवां तेनां नाम छे. अकुशळ मननो निरोध करवो, एटले कोइनुं भुंडुं चिंतवकुं नहि, ते अकुशळ मनोनिरोध कहेवाय छे, अने सर्वेनुं भलुं चिंतववुं, ते कुशळमन उदीरणा कहेवाय छे. आ प्रतिरुप विनय वीजानी अनुवृत्ति करवारुप छे, एटले बीजाने अनुसरीने ते विनय थइ शके छे, तेथी केवलज्ञानी प्रतिरुप विनय करता नथी, तेओ अप्रातिरुप विनय करे छे.

औपचारिक विनयनो बीजो भेद जे अनाशातना विनय छे, तेना बावन प्रकार थाय छे. तीर्थंकर, सिद्ध, कुल, गण, संघ, क्रिया, धर्म, ज्ञान, ज्ञानी, आचार्य, स्थविर, उपाध्याय अने गणी ए तेर पदनी आशातना करवाथी दूर रहेवुं, ते तेर पदनी भक्ति करवी, ते तेर पदनुं बहु मान करवुं, अने ते तेर पदनी प्रशंसा करवी, ए चार प्रकारे तेर पद गणतां बावन प्रकार थाय छे.

आवो विनय गुण सर्वथी उत्तम छे. विनयथी ज्ञान प्राप्त थाय छे, ज्ञानथी दर्शन प्राप्त थाय छे, दर्शनथी चारित्र प्राप्त थाय छे, अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्त थाय छे, एथी सर्व गुणोनुं मूळ विनयज छे.

सारांश प्रश्नो.

१ विनय ए शब्दनो अर्थ शो थाय ? २ विनयना कयां लक्षणो छे ? ३ विनयना मूळ केटला भेद छे ? तेनां नाम गणावो. ४ देवनी अने गुरुनी केटली केटली आशातना कहेवाय छे ? अने ते आशातना टाळवी, ते शेमां गणाय छे ? ५ विनयना बीजा केटला प्रकार थइ शके छे ? ते गणावो. ६ तपविनय अने दर्शनविनय शुं छे ? ते समजावो. ७. पदार्थनुं ज्ञान मेळववुं, अने क्रिया करवी, ते कया विनय कहेवाय छे ? ८ औपचारिक विनयना केटला भेद छे ? ९ प्रतिरुप विनयना केटला भेद छे ? तेनां नाम आपो. १० कायिक प्रतिरुप विनयना केटला भेद थाय ? ते गणावो. ११ संसाधन, अभ्युत्थान अने अनुगमन, ए केवा विनयमां आवे छे, अने तेनो शो अर्थ थाय छे ? ते समजावो. १२ गुणवान् जननी सामे हाथ जोडी उभा रेहेवुं, ते केवो विनय ? १३ मोटा जननी आज्ञा सांभळवा तैयार रेहेवुं, ते केवो विनय ? १४ मोटाओने आसन आपवुं, ते केवो विनय ? १५ अभिग्रह अने कृतिकर्म विनयमां शुं करवानुं छे ? १६ वाचिक प्रतिरुप विनयना केटला प्रकार छे ? १७ हित तथा अनुपाति ए केवां वचन कहेवाय ? १८ खप पूरतुं बोलवुं, अने मधुर बोलवुं, ते केवा विनयमां गणाय छे ? १९ मानसिक प्रतिरुप विनयना केटला भेद छे ? २० अकुशळ मनोनिरोध अने कुशळमन उदीरणा एटले

शुं ? ते समजावो. २१ अनाशातना विनयना केटला भेद छे ? २२ तेर पद कयां ? ते गणावो. २३ तेर पदने केवी रीते गणतां बावन प्रकार थाय छे ? २४ सर्व गुणोनुं मूळ विनय छे, ते केवी रीते ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

लय, बहुमान, श्रुतधर्म, चतुर्विध संघ, द्रव्य, हित, मित, अपरुष, अनुपाति, निरोध, उदीरणा, अनुवृत्ति, स्थविर, गणी.

पाठ ६ ठ्ठो.

त्रण शुद्धि.

सम्यक्त्व मेळववामां त्रण प्रकारनी शुद्धिनी जरुर छे. ते शुद्धि ते सम्यक्त्वनी शुद्धि कहेवाय छे. ए शुद्धिना त्रण प्रकार छे. १ मनःशुद्धि, २ वचनशुद्धि अने ३ कायशुद्धि, एवां तेनां नाम छे.

" आ संसारमां श्री वीतरागनो कहेलो धर्मज सार छे. बीजुं कांइ सार नथी. " आ प्रमाणे मनमां भाववुं, ते मनःशुद्धि कहेवाय छे.

" जिन धर्मनुं आराधन करवाथी कल्याण न होय,

तो बीजा कोनाथी होय ? कल्याण तो श्री वीतरागना धर्म-थीज छे, बीजाथी नथी. " आ प्रमाणे वचनथी कहेवुं, ते वचनशुद्धि कहेवाय छे.

" कदि कोइ आवीने मारो, छेदो, भेदो अने अनेक प्रकारनी पीडा उपजावो, पण वीतराग विना बीजानी आगळ कायाथी मस्तक न नमाववुं, एवी द्रढता, ए कायशुद्धि कहेवाय छे.

आ त्रणे प्रकारनी शुद्धि, ते खरेखरी समकितनी शुद्धि गणाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ शुद्धि एटले शुं ? २ शुद्धिना केटला प्रकार छे ? ३ जिन धर्मनुं आराधन करवाथीज कल्याण थाय छे, बीजाथी थतुं नथी—आवां वचन केवी शुद्धिमां गणाय छे ? ४ मनःशुद्धि अने कायशुद्धि विषे समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सार, छेदो, भेदो, द्रढता.

पाठ ७ मो.

पांच दूषण.

सम्यक्त्वना पांच अतिचार, ते तेनां पांच दूषण कहेवाय छे. तेमनां १ शंका, २ कांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ प्रशंसा अने ५ संस्तव—एवां नाम छे. वीतरागे कहेलां वचनमां जे संशय करवो, ते शंका नामे पहेलुं दूषण छे. जिनमत विना बीजा मतनी वांछा करवी, ते कांक्षा नामे बीजुं दूषण छे. "धर्मनुं फळ मळशे के नहीं?" एम संदेह करवो, ते विचिकित्सा नामे त्रीजुं दूषण छे. कुलिंगी एवा पाखंडी लोकोनी प्रशंसा करवी, ते प्रशंसा नामे चोथुं दूषण छे, अने उपर बतावेला पाखंडी लोकोनो परिचय करवो, ते संस्तव नामे पांचमुं दूषण छे.

समकितना आराधक एवा पुरुषे ए पांच दूषणनो सर्वथा त्याग करवो जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्वना अतिचार अने दूषणमां तफावत छे के नहीं? २ सम्यक्त्वनां दूषण केटलां छे? ते दरेकनां नाम आपी गणावो. ३ संस्तव अने प्रशंसा एटले शुं? ते समजावो. ४ वीतरागनां कहेलां वचनमां संशय करवो,

अने बीजा मतनी वांछना करवी, ते कयां दूषण कहेवाय? ५ धर्मनुं फळ मळशे के नहीं? एवो संदेह करवो, ते कयुं दूषण कहेवाय?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कुलिंगी, संस्तव, आराधक.

पाठ ८ मो.

आठ प्रभावक.

सम्यक्त्वना आठ प्रभावक छे. जे पुरुष सम्यक्त्वना प्रभावने वधारे, ते प्रभावक कहेवाय छे. जे जिनमतनां अने परमतनां शास्त्रोनो जाणनार होय, ते पहेलो प्रभावक छे. जे धर्मनो उपदेश आपनार होय, ते बीजो प्रभावक छे. जे न्यायथी वाद करी वादीओनो पराभव करे, ते त्रीजो प्रभावक छे. जे निमित्त-शुकन तथा ज्योतिष शास्त्रने जाणनार होय, ते चोथो प्रभावक छे. जे क्षमावंत निर्लोभी अने तपस्वी होय, ते पांचमो प्रभावक छे. जे विद्या मंत्रनो जाणनार होय, ते छठो प्रभावक छे. जे सिद्धसंपन्न होय, एटले आकाशगामनी विद्याए युक्त होय, ते सातमो प्रभावक छे. जे कवि होय, एटले कविताना

गुणथी वर्णन करनारो होय, ते आठमो प्रभावक छे. आ आठ गुणथी मोटा मोटा राजाओने प्रसन्न करी जैनी बनावे, ते प्रभावक जाणवा.

आ आठ प्रभावक जिनमतने दीपावनारा छे. हमेशां एवा प्रभावक थवानो उद्यम करवो, के जेथी जिनमतने दीपावनार थइ शकाय, अथवा तेमना समकितवाळा गुण जोइने एवा प्रभावक पुरुषोनी सेवा करवी.

सारांश प्रश्नो.

१ प्रभावक केटला छे ? २ प्रभावक कोने कहेवाय ? ३ जे आकाशगामनी विद्याए युक्त होय, ते केटलामो प्रभावक कहेवाय ? ४ कवि होय ते केटलामो प्रभावक ? ५ जिनमत अने परमतनां शास्त्रोने जाणनार केटलामो प्रभावक ? ६ बीजो प्रभावक कयो ? ७ जे न्यायथी वाद करे, ते केटलामो प्रभावक ? ८ धर्मनो उपदेश आपनार केटलामो प्रभावक ? ९ क्षमावंत, निर्लोभी अने तपस्वी होय, ते केटलामो प्रभावक ? १० ज्योतिः शास्त्रने जाणनारो केटलामो प्रभावक ? ११ सिद्धसंपन्न एटले शुं ? १२ शुं करे तो प्रभावक कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रभावक, परमत, निमित्त, ज्योतिषशास्त्र, सिद्धसंपन्न, आकाशगामीनी.

पाठ ९ मो.

पांच भूषण.

समकितनां पांच भूषण कहेलां छे. भूषण धारण करवाथी जेम शोभा प्राप्त थाय छे, तेम आ पांच भूषण धारण करवाथी समकित शोभे छे. १ कुशळता, २ प्रभावना, ३ तीर्थ सेवा, ४ द्रढता, अने ५ वैयावृत्य—ए पांच भूषणनां नाम छे. जिन धर्मने विषे कुशळता राखवी, ते पहेलुं भूषण छे. जिन शासननी प्रभावना करवी, एटले जिन शासनने दीपाववुं, अथवा वृद्धि थाय तेम करवुं, ते बीजुं भूषण छे. तीर्थ सेवा एटले गीतार्थ मुनिराज अने तीर्थनी सेवा करवी, ते त्रीजुं भूषण छे. द्रढता एटले जिन धर्मने विषे स्थिरता राखवी, ते चोथुं भूषण छे. वैयावृत्य एटले देवगुरु तथा सिद्धांतनो विनय करवो—वैयावच्च करवी—ते पांचमुं भूषण छे.

समकितनां आ पांच भूषणो समकितने दीपावनारां

छे. तेना विना समकित जरा पण शोभतुं नथी, तेथी दरेक श्रावके ते पांच भूषण संपादन करवां जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ भूषण एटले शुं ? २ ते भूषण केटलां छे ? तेनां नाम आपो. ३ देवगुरु तथा सिद्धांतनो विनय के वैयावच्च करवी, ते क्युं भूषण ? ४ तीर्थ सेवा अने कुशळता ए बे भूषण विषे समजावो. ५ जिन धर्मने विषे द्रढता राखवी, ते क्युं भूषण छे ? ६ प्रभावना एटले शुं ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रभावना, कुशळता, गीतार्थ, द्रढता, स्थिरता.

पाठ १० मो.

पांच लक्षण.

समकितनां शुं लक्षण छे ? अने " आ जीवमां समकित छे, " एम शी रीते जणाय ? ए प्रत्येक श्राव-

के जाणवुं जोइए. ते जाणवाने माटे समकितनां पांच लक्षणो कहेलां छे. ए पांच लक्षणोथी समकितनुं खरेखरुं स्वरुप जणाइ आवे छे. ए पांच लक्षणोनां १. उपशम, २ संवेग, ३ निर्वेद, ४ अनुकंपा, अने ५ आस्तिक्य एवां नाम छे. क्रोध, मान, माया, अने लोभ—ए चार कषायनो त्याग, ते उपशम नामे समकितनुं पहेलुं लक्षण छे. जे जीवमां अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभनो उपशम देखाय, एटले अपराध करनार उपर पण जेने क्रोध विगेरे तीव्र कषाय उत्पन्न न थाय; जो कदि उत्पन्न थाय, तो तेने निष्फळ करी दे, एवी शमता जेनामां जोवामां आवे, ते जीवमां समकित छे, एम जाणवुं. जेना हृदयमां मोक्षना सुखनी अभिलाषा राखवाने लीधे संसार उपर वैराग्य थाय, ते संवेग नामे समकितनुं बीजुं लक्षण छे. जे जीवने तेवो वैराग्य उत्पन्न थतो मालम पडे, ते जीवमां सम्यक्त्व छे, एम जाणवुं. संसारना दुःखथी कंटाळो पामी उदास रहेवुं, ते निर्वेद नामे समकितनुं त्रीजुं लक्षण छे. जे जीव संसारनां सुख उपर द्वेष करे, कुटुंब विगेरेनी परतंत्रताना दुःखरुप गृहस्थावासमां रेहतां, पण मोक्षनी अभिलाषा करे, ते निर्वेद लक्षणवाळा जीवमां सम्यक्त्व छे एम जाणवुं. बीजा जीवने दुःखथी निवारण करवानी इच्छा, अर्थात् सर्व जीव उपर दयाभाव राखे, ते अनुकंपा नामे समकितनुं चोथुं लक्षण छे. जेना हृदयमां दुःखी जीवने देखी अनुकंपा उत्पन्न थाय;

दुःखी जीवनां दुःख दूर करवानी इच्छा थाय, तेमज बीजा जीवने दुःखी जोइ, पोताना मनमां दुःखी थाय, अने पोतानी शक्ति प्रमाणे दुःखी जीवना दुःखने दूर करे, तेवां अनुकंपानां लक्षणथी समजवुं के, ते जीवमां समकित छे. " श्री वीतराग प्रभुए कह्युं, ते सत्य छे, तेमां कंइ पण जुटुं नथी. " आवी द्रढ आस्था राखवी, ते आस्तिक्य नामे समकितनुं पांचमुं लक्षण छे. जे जीवमां एवी द्रढ आस्ता जोवामां आवे, ते जीवमां सम्यक्त्व छे, एम जाणवुं.

ए प्रमाणे उपशम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, अने आस्तिक्य—ए पांच लक्षण उपरथी जीवमां रहेलुं सम्यक्त्व ओळखाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ समकितनां लक्षणो शुं छे, अने ते केटलां छे? तेनां नाम गणावो. २ श्री वीतरागनां वचन उपर द्रढ आस्था राखवी, ते समकितनुं क्युं लक्षण? ३ उपशम एटले शुं? ते समजावो. ४ बीजा जीवने दुःखथी निवारण करवानी इच्छा, ए क्युं लक्षण? ५ संवेग एटले शुं? ते विषे समजावो. ६ संसारनां दुःखथी कंटाळी उदास रहेवुं, ते क्युं लक्षण?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

उपशम, संवेग, निर्वेद, आस्तिक्य, अनंतानुबंधी, निष्फळ, अनुकंपा, शक्ति.

पाठ ११ मो.

छ यतना.

समकितने शुद्ध रीते राखवा यत्न करवो, ते समकितनी यतना कहेवाय छे. जो बराबर यतना करवामां आवी होय, तो समकित नाश पामतुं नथी. ए यतनाना छ प्रकार छे. १ परतीर्थिकादि वंदन, २ परतीर्थिकादि नमस्करण, ३ परतीर्थिकादि आलापन, ४ परतीर्थिकादि संलापन, ५ परतीर्थिकादि अशनादि दान अने ६ परतीर्थिकादि गंध पुष्पादि प्रेषण—आवां तेनां छ प्रकारनां नाम छे.

बीजा मतवाळाओने, तेमना देवने अने तेमणे ग्रहण करेली प्रतिमाने वंदन करवुं नहीं, एटले तेमनी आगळ बे हाथ जोडवा नहीं, ते परतीर्थिकादि वंदन नामे पहेली यतना छे. बीजा मतवाळाने नमस्कार करवो नहीं, एटले तेमनी आगळ माथुं नमाववुं नहीं, ते परतीर्थिकादि नमस्करण नामे बीजी यतना छे. बीजा मतवा-

ळानी साथे प्रथम बोलवुं नहीं, ते परतीर्थिकादि आलापन नामे त्रीजी यतना छे. तेमनी साथे वारंवार बोलवुं नहि, ते परतीर्थिकादि संलापन नामे चोथी यतना छे. तेमने धर्म बुद्धिए खावा पीवानुं आपवुं नहि, ते परतीर्थिकादि अशनादिदान नामे पांचमी यतना छे. तेमने माटे गंध तथा पुष्प मोकलवां नहि, ते परतीर्थिकादि गंध पुष्प प्रेषण नामे छट्ठी यतना छे.

आ छ प्रकारनी यतना राखवाथी समकित द्रढ थाय छे, अने तेना गुणमां वधारो थाय छे. बे हाथ जोडीने नमवुं, ते वंदन, अने माथुं नमाववुं, ते नमस्कार कहेवाय छे. प्रथम बोलवुं, ते आलापन, अने वारंवार बोलवुं, ते संलापन कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ समकितनी यतना एटले शुं ? २ यतनाथी शो लाभ थाय छे ? ३ यतना केटला प्रकारनी छे ? तेना बधा भेदनां नाम आपो. ४ परतीर्थिकादि गंध पुष्प प्रेषण—एटले शुं ? अने ते केटलामी यतना छे ? ५ बीजा मतवाळाओने, तेमना देवने, अने तेमणे ग्रहण करेली प्रतिमाने वंदन करवुं नहि, ए कइ यतना ? ६ परतीर्थिकादि अशनादि दान—ए केटलामी यतना, अने तेनो अर्थ शुं ? ७ बीजा मतवाळाने नमस्कार करवो नहीं,

ते कइ यतना ? ८ परतीर्थिकादि संलापन ए यतनानो अर्थ शुं ? ९ बीजा मतवाळानी साथे प्रथम बोलवुं नहि, ते कइ यतना ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

यतना, परतीर्थिकादि, वंदन, नमस्करण, आलापनं, संलापन, अशनादि दान, गंध पुष्पादि, प्रेषण, धर्म बुद्धि, द्रढ.

पाठ १२ मो.

छ आगार.

कोइ मुस्केलीने लइने श्रावकने कांइ पण अनुचित काम करवुं पडे, ते वखते जे कांइ पण न चालतां छुट राखवी, ते आगार कहेवाय छे. तेने संस्कृतमां आकार (अपवाद) कहे छे. ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आपवामां आवे छे, त्यारे गुरु तेने आगार बतावे छे, ते आगारना छ प्रकार थाय छे. ते वखते गुरु तेने जणावे छे के, जो छ कारणोमां तमारे कांइ अनुचित काम करवुं पडे, तो आ छ आगार राखी शकाय, जेथी करीने तमारुं सम्यक्त्व कलंकित थशे नहीं.

राजाना कहेवाथी करवुं पडे, ते **राजाभियोग** नामे पहेलो आगार छे. कदि राजा जोरावरीथी अनुचित काम करावे, तेथी सम्यक्त्वमां दूषण लागे नहीं.

गण एटले ज्ञातिनो समूह अथवा पंच, तेमना कहेवाथी करवुं, ते **गणाभियोग** नामे बीजो आगार छे. ज्ञाति के पंच अनुचित काम करवानी फरज पाडे, तेवे प्रसंगे जो ते काम करवुं पडे, तो तेथी करीने सम्यक्त्वमां दूषण लागतुं नथी.

बळ एटले सैन्य अगर कोइ बळवान् चोर के म्लेच्छ, तेमनी जोरावरीथी करवुं, ते **बलाभियोग** नामे त्रीजो आगार छे. कोइ चोर के म्लेच्छना तावामां आवी पडतां, तेओनी जोरावरीथी काम करवुं पडे, तो तेथी सम्यक्त्वमां दूषण लागतुं नथी.

देव एटले क्षेत्रपाळ, व्यंतर विगेरे कोइ दुष्ट देवता शरीरमां प्रवेश करी, अनुचित काम करावे, ते देवाभियोग नामे चोथो आगार छे. दुष्ट देवता के व्यंतर शरीरमां प्रवेश करी, अनुचित काम करावे, तथा कोइ देवता मरणांत दुःख आपे, तेथी मनमां धैर्य न रहे, अने तेने लइने विरुद्ध काम करवुं पडे, तो सम्यक्त्वमां अतिचारनो भंग थतो नथी.

गुरु एटले मातापिता अथवा धर्माचार्य के जिन प्रतिमा, तेमने लइने अनुचित काम करवुं पडे, ते गुरु

निग्रह नामे पांचमो आगार छे. माता पिताना आग्रहथी कांइ अनुचित काम करवुं पडे, तथा धर्माचार्यने कोइ दुष्ट संकट आपतो होय, तथा जिन प्रतिमानुं खंडन करतो होय, के जिन मंदिर तोडतो होय, तेओनी रक्षाने माटे जो कांइ अनुचित काम करवुं पडे, तो सम्यक्त्वमां दूषण लागतुं नथी.

वृत्ति एटले आजीविका तेने माटे कांइ विरुद्ध काम करवुं पडे, ते कांतारवृत्ति नामे छठ्ठो आगार छे. दुकाळ विगेरे आपत्ति आवी पडे, त्यारे आजीविकाने माटे मिथ्या द्रष्टिने अनुसारे चालवुं पडे, अथवा कांइ विरुद्ध आचरण करवुं पडे, तेथी करीने कांइ दूषण लागतुं नथी.

आ छ वस्तुना आगारने छ छींडी पण कहे छे. पोतानी मरजी न छतां बीजाओना कहेवाथी लाचारीवडे आ छ आगार सेववाथी सम्यक्त्वने कांइ पण दूषण लागतुं नथी.

आ छ आगार शिवाय बीजा चार आगार पण जुदा गणेला छे. कोइ व्रतना पच्चखाण लेती वखते तेओनो उच्चार करवामां आवे छे, ते नीचे प्रमाणे छे—

कोइ विरुद्ध कार्य अजाणपणे उपयोग आप्या विना थइ जाय, ते पहेलो आगार छे. तेने माटे "अनत्थणा भोगेणं" एवो उच्चार थाय छे.

कोइ विरुद्ध काम अकस्मात् थइ जाय, मनमां जाणतां छतां योगनी चपळताथी अथवा निरंतरना अभ्यासथी थइ जाय, तो ते बीजो आगार छे. तेने माटे " सहस्सागारेणं " एवो उच्चार थाय छे.

जे काम करवाथी सम्यक्त्वमां दूषण लागे छे, पण तेमां घणोज मोटो लाभ रह्यो होय, अथवा कोइ मोटानी आज्ञाथी खास करवुं पडे तेम होय, तो ते त्रीजो आगार छे. तेने माटे " महत्तरागारेणं " एवो उच्चार थाय छे.

जे काम सर्व समाधि व्यत्ययथी एटले मोटा सन्निपात विगेरे रोगोने प्रसंगे बावरा बनी जवाथी, तथा वृद्धावस्थामां स्मृतिनो भंग थवाथी, तथा सर्प विगेरेना डंशने लीधे असमाधि थइ जवाने प्रसंगे करवुं पडे, ते चोथो आगार छे. तेने माटे " सव्व समाहिवत्तिआगारेणं " एवो उच्चार थाय छे.

आ चार आगारथी व्रतनो तथा सम्यक्त्वनो भंग थतो नथी. तेवे प्रसंगे कदाग्रह राखी, आर्त्त ध्यानमां प्राणनो त्याग करवो, ते योग नथी. " गमे ते थाय, पण जे नियम लेवामां आव्युं, ते कदापि तोडवुं नहि. " एवो अति आग्रह राखवो न जोइए. कारण के जो पहेलेथी आगार राख्या होय, तो पछी व्रतनो भंग थतो नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ आगार एटले शुं ? ते समजावो. २ आगारने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ३ आगारना मुख्य केटला प्रकार छे ? ४ छ आगारनां नाम आपो. ५ आजीविकाने माटे विरुद्ध काम करवुं पडे, ते कयो आगार कहेवाय ? ६ गुरुनिग्रह आगार केवी रीते लागे ? ते कहो. ७ राजाना कहेवाथी विरुद्ध करवुं पडे, ते कयो आगार ? ८ गणाभियोग आगार एटले शुं ? ते समजावो. ९ देव के व्यंतरना आवेशथी अनुचित काम करवुं पडे, ते कयो आगार ? १० बलाभियोग आगार विषे समजावो. ११ छ आगारने बीजा कया नामथी ओळखावे छे ? १२ छ आगार शिवाय बीजा आगार छे के नहिं ? जो छे तो ते केटला छे ? १३ मोटा रोगोने प्रसंगे बावरा थइ जवाथी जे आगार लागे, ते केटलामो आगार, अने तेने माटे शो उच्चार छे ? १४ "अनत्थणा भोगेणं" ए उच्चार केवा आगारने माटे छे ? १५ जे काम विरुद्ध होय, पण तेमां घणो मोटो लाभ रह्यो होय, ते केटलामो आगार ? अने तेने माटे केवो उच्चार छे ? १६ "सहस्सागारेणं" ए उच्चार केवा आगारने माटे छे ? १७ उपरना छ आगार अने आ चार आगारथी शेनो भंग न थाय ? १८ आगार राखवाथी शो लाभ थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अनुचित, कलंकित, गण, म्लेच्छ, क्षेत्रपाळ, व्यंतर, मरणांत, आजीविका, आपत्ति, छींडी, उच्चार, उपयोग, समाधि, व्यत्यय, स्मृति, असमाधि, कदाग्रह, आर्त्त ध्यान.

पाठ १३ मो.

छ भावना.

समकितने छ वस्तु साथे सरखाववानी भावना करवी, ते भावना कहेवाय छे. झाडनुं मूळ, पेसवानुं द्वार, महेलनो मूळ पायो, तत्वनो निधि (भंडार), जीवितनो आधार अने रसनुं पात्र, एवी छ उपमा चारित्रनी साथे आपीने ते भावना भाववामां आवे छे. " समकित चारित्र धर्मरुपी झाडनुं मूळ छे "—आ प्रमाणे भाववुं, ते पहेली भावना छे.

" समकित चारित्र धर्मरुपी नगरमां पेसवानुं द्वार छे. " आ प्रमाणे भाववुं, ते बीजी भावना छे.

" समकित चारित्र धर्मरुपी महेलनो मूळ पायो छे. " आ प्रमाणे भाववुं, ते त्रीजी भावना छे.

" समकित ज्ञान, चारित्र विगेरे गुणरुप तत्वनो

निधि–भंडार छे." आवी रीते भाववुं, ते चोथी भावना छे.

"समकित चारित्ररुपी जीवितनो आधार छे." आ प्रमाणे भाववुं, ते पांचमी भावना छे.

"समकित श्रुत चारित्ररुपी रसनुं पात्र छे." आ प्रमाणे भाववुं, ते छट्ठी भावना छे.

आ समकितनी छ भावना, समकितनी वृद्धि करनारी छे; तेथी समकितधारी श्रावके हमेशां ते भावना भाववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ भावना एटले शुं ? २ भावनाना केटला प्रकार छे ? ३ ते छ भावनाओने कइ कइ वस्तुनी साथे सरखावी छे, ते वस्तुओनां नाम आपो. ४ समकितने रसना पात्रनुं रुपक आप्युं छे, ते कइ भावना छे ? ५ "समकित चारित्र धर्मरुपी झाडनुं मूळ छे." ए केटलामी भावना ? ६ समकितने जीवितनो आधार कहेल छे, ते कइ भावना ? ७ बीजी भावनामां समकितने शेनुं रुपक आपेलुं छे ? ८ "समकित ज्ञान चारित्र विगेरे गुणरुप तत्वनो निधि छे," ए केटलामी भावना ? ९ त्रीजी कइ भावना छे ? १० आ समकितनी भावना भाववाथी शो लाभ छे ?

શિક્ષકે નીચેના શબ્દોની સમજૂતી આપવી.

મૂળ, દ્વાર, નિધિ, જીવિત, સમકિતધારી.

પાઠ ૧૪ મો.

છ સ્થાન.

સમકિતમાં છ સ્થાન ગણાય છે. એ છ સ્થાન જીવને ઉદ્દેશીને કહેલાં છે. એ છ સ્થાનો આસ્તાપૂર્વક માનવાથી સમકિત ગુણને વધારે છે.

" જીવ છે, " એમ જે માનવું, તે પહેલું સ્થાન છે. જીવ કહો વા આત્મા કહો, એ બંને એકજ વસ્તુનાં નામ છે. તે જીવનું મુખ્ય લક્ષણ ચૈતન્ય છે.

" જીવ નિત્ય છે, " એમ જે માનવું, તે બીજું સ્થાન છે. જીવનો અત્યંત અભાવ થતો નથી, તેથી તેને નિત્ય કહ્યો છે.

" જીવ કર્મોનો કર્ત્તા છે, " એમ જે માનવું, તે ત્રીજું સ્થાન છે. જીવ સારાં અને નઠારાં કર્મોનો કર્ત્તા છે. મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, પ્રમાદ, અને યોગથી મલિન થઇને તે વેદનીયાદિ કર્મોનો કર્ત્તા છે.

" જીવ કર્મોનો ભોગવનાર છે, " એવી રીતે જે

मानवुं, ते चोथुं स्थान छे. जीव करेलां कर्मोनां सुख दुःख विगेरे फळनो भोक्ता छे.

" जीवने मोक्ष छे, " एम जे मानवुं, ते पांचमुं स्थान छे. सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, अने सम्यक् चारित्र—ए त्रण रत्नथी ऊत्कृष्ट पुरुषार्थ करी, कर्मना वधा अंशने दूर करनारा जीवनो मोक्ष थाय छे.

" जीवने मोक्षनो उपाय छे, " एटले जीवने कर्म रहित थवानो उपाय छे, एम मानवुं, ते छठुं स्थान छे. ते उपाय सम्यग् ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र छे.

सारांश प्रश्नो.

१ स्थान केटलां छे ? २ स्थान कोने ऊद्देशीने कहेलां छे ? ३ जीवने मोक्षनो उपाय छे एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान ? ४ मोक्षनो उपाय शुं ? ५ 'जीव छे' एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान ? ६ जीव अने आत्मा केवी वस्तु छे ? ७ जीवनुं मुख्य लक्षण शुं छे ? ८ " जीवनो मोक्ष छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान ? ९ मोक्ष केवा जीवने थाय छे ? १० त्रण रत्नो कयां ? ११ " जीव नित्य छे " एम मानवुं, ते कयुं स्थान छे ? १२ जीव नित्य शा माटे छे ? १३ " जीव कर्मोनो भोगवनार छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान

छे ? १४ जीव कयां फळनो भोक्ता छे ? १५ " जीव कर्मोनो कर्त्ता छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान छे ? १६ जीव केवां कर्मोनो कर्त्ता छे ? १७ जीव शेनाथी मलिन थइने वेदनीयादि कर्मोनो कर्त्ता छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्थानः उद्देशीने, आस्तापूर्वक, चैतन्य, अत्यंत अभाव, अविरति, योग, वेदनीआदि, भोक्ता, पुरुषार्थ, अंश.

पाठ १५ मो.

समकितना सडसठ बोल विषे.

कविता.

सवैया एकत्रीशा.

भणे विचारे जे नव तत्वो करे भक्तिथी मुनिवर सेव,
पासथ्थादि भ्रष्ट तणी राखे नहीं संग कर्यानी टेव;
दूर रहे मिथ्या दृष्टिथी ए भेदो श्रद्धाना चार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १

मन इच्छा सिद्धात श्रवणनी व्रत चारित्र तणो अभिलाप,
देव गुरु आदि उत्तमनी वैयावच्च करवानी आश;
ए त्रण छे समकितनां लिंगो धारण करवा धरता प्यार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. २

श्री अरिहंत सिद्ध जिन प्रतिमा चारित्रागम ने अनगार,
उपाध्याय आचार्य चतुर्विध संघ अने दर्शन सुखकार;
ए दशनो शुभ विनय करे ने ए दश राखे विनय प्रकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ३

मननी वचनतणी कायानी ए त्रण शुद्धि राखे आप,
शंका नहि राखे जिनवचने परमत वांछा न करे आप;
धर्मतणा फळमां नव राखे हृदय विषे संदेह लगार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ४

जे पाखंडी धर्म कुलिंगी लोको फरता जगविख्यात,
करे कदि न प्रशंसा तेनी मुखथी प्रेम धरी साक्षात;
नव राखे परिचय ए जननो ए पांचे दूषण दुःखकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ५

ज्ञाता जिनमत परमतनो छे धर्म तणो उपदेशक आप,
न्याय थकी वदनारो वादी धरे शुकन ज्योतिषनी छाप,
तपसी मांत्रिक विद्यासिद्धि आठ प्रभावक ए सुखकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ६

जिनमतमां जे धरे कुशळता शासन प्रभावना करनार,
गीतारथ तीरथनी सेवा धर्म विषे दृढता धरनार;

देव गुरु श्रुत विनय वधारे ए पांचे भूषण भवहार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ७

कषाय टाळे उपशम गुणथी शिवसुख इच्छे धरी संवेग,
उदास रहे भवथी निर्वेदे अनुकंपा धरवानो वेग;
जिनवचने आस्ता दृढताथी पांचे समकित लक्षण सार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ८

जे परतीर्थी देव अने परतीर्थीनी प्रतिमा कहेवाय,
वांदे नहि करजोडी तेने नहीं मस्तकथी नमन कराय;
तेनी साथे प्रथम न बोले वारंवार वदे न लगार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ९

धर्मबुद्धिए परतीर्थिकने खानपान नव आपे लेश,
गंध पुष्प तेने नव अर्पे राखी धर्म तणो उद्देश;
ए यतना छे समकितनी छो राखो नित्ये समकित धार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १०

राजा ज्ञाति पंच अने वळवंत देवनो जे अभियोग,
आजीविकाने गुरु निग्रहथी विपरित करवानो संयोग;
होय अनिच्छा लाचारीथी करतां ए छे छो आगार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ११

समकित छे चारित्र वृक्षनुं मूळ मनोहर जे सुखकार,
समकित छे चारित्र नगरमां प्रवेश करवानुं शुभ द्वार;
समकित छे चारित्र महेलनो दृढ पायो धरतो विस्तार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १२

जीव वस्तु छे जीव नित्य छे जीव कर्मनो छे करनार,
जीव कर्मनो भोगवनारो मोक्ष जीवने छे सुखकार;
मोक्ष तणो छे उपाय तेने ए छ स्थान तणोज प्रकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १३

दोहा.

सडसठ पूरा बोल ए, समकितना निरधार,
कंठ करे जे प्रेमथी, ते पामे भवपार. १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

पासथ्थादि, श्रद्धा, श्रवण, अभिलाप, चारित्रागम, परमत वांछा, गीतारथ (गीतार्थ), तीरथ (तीर्थ), भवहार, उद्देश, समकितधार, अभियोग, गुरु निग्रह, विपरीत (काम).

पाठ १६ मो.

पच्चखाण भाग १ लो.

पच्चखाण ए प्राकृत भाषानो शब्द छे. तेने संस्कृत भाषामां प्रत्याख्यान कहे छे. प्रत्याख्यान ए शब्दमां त्रण पद रहेलां छे. पहेलुं पद प्रति, बीजुं पद आ, अने

त्रीजुं पद आख्यान-ए त्रण पद मळीने प्रत्याख्यान शब्द थयेलो छे. प्रति एटले तरफ, आ एटले मर्यादा—हद, अने आख्यान एटले कहेवुं, एवा तेना जुदा जुदा अर्थ थाय छे. ते बधानो भावार्थ एवो छे के, अविरतिपणा तरफ आगारनी मर्यादा करी कहेवुं, ते प्रत्याख्यान अथवा पच्चखाण कहेवाय छे. ते पच्चखाणना मूळ गुणरुप अने उत्तर गुणरुप एवा बे भेद छे. मुनिने पंचमहाव्रत लेवां, ते मूळ गुणनुं पच्चखाण छे, अने शुद्ध आहार लेवा विगेरे जे करवुं, ते उत्तर गुणनुं पच्चखाण छे. श्रावकने पांच अणुव्रतनां जे पच्चखाण, ते मूळ गुणनुं पच्चखाण छे, अने शिक्षाव्रत विगेरेनां जे पच्चखाण, ते उत्तर गुणनुं पच्चखाण छे. पच्चखाण हमेशां साधारण रीते अविरतिनुं विरोधी छे, अने अविरति दूर करवानोज तेनो हेतु अथवा उद्देश छे.

ते पच्चखाणनुं उपयोगीपणुं हमेशां उत्तर गुणरुपे रहेल छे. ते उत्तर गुण पच्चखाणना दश भेद पडे छे. ते दश प्रकारनां नाम आ प्रमाणे छे—

१ अनागत पच्चखाण, २ अतिक्रांत पच्चखाण, ३ कोटी सहित पच्चखाण, ४ नियमित पच्चखाण, ५ अनागार पच्चखाण, ६ सागार पच्चखाण, ७ निरवशेष पच्चखाण, ८ परिमाणकृत पच्चखाण, ९ सांकेतिक पच्चखाण, अने

१० अद्धा पच्चक्खाण. आ दशे प्रकारनां पच्चखाण, ते उत्तर गुणनां पच्चखाण कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पच्चखाण ए केवो शब्द छे ? २ पच्चखाणने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ३ प्रत्याख्यान ए शब्दमां केटलां पद छे ? ४ प्रति, आ, अने आख्यान ए त्रणे पदनो जुदो जुदो अर्थ कहो. ५ प्रत्याख्यान अथवा पच्चखाणनो भावार्थ शो ? ६ पच्चखाणना केटला भेद छे ? ७ पच्चखाणने मूळ तथा उत्तर गुणरूपे मुनि तथा श्रावकमां वटावो. ८ मुनि तथा श्रावकने मूळ गुणनुं पच्चखाण कयुं ? ९ मुनि तथा श्रावकने उत्तर गुणनुं पच्चखाण कयुं ? १० पच्चखाणनो हेतु अथवा उद्देश शो छे ? ११ उत्तर गुण पच्चखाणना केटला भेद छे ? १२ उत्तर गुण पच्चखाणना दश भेदनां नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्राकृत, संस्कृत, मर्यादा, अविरति, आगार, मूळ गुण, उत्तर गुण, शिक्षाव्रत. उद्देश.

पाठ १७ मो.

पच्चखाण भाग २ जो.

पर्युषण विगेरे पर्व आव्यानी अगाउथी गुरुनी पासे पच्चखाण लइने जे तप करवामां आवे, ते पहेलुं अनागत पच्चखाण कहेवाय छे. पर्युषण विगेरे पर्व वीती गया पछी तेज कामना हेतुथी पाछळथी आठम विगेरेना तपने माटे जे पच्चखाण ले, ते बीजुं अतिक्रांत पच्चखाण कहेवाय छे. सवारे उपवास प्रमुख व्रत करीने वळी बीजे दिवसे सवारे तेज उपवास विगेरेनुं पच्चखाण करे, एम छठ विगेरेनी कोटि मेळवे, एटले एक पच्चखाण पूरा थयानी वखते बीजा पच्चखाणनी संधि मेळवे, ते त्रीजुं कोटिसहित पच्चखाण कहेवाय छे. एकाशणा विगेरेना पच्चखाण पार्या पहेलां आंबिल विगेरे करवां, एटले एकनो छेडो अने बीजानी शरुआत, ते पण कोटि सहित पच्चखाण थायछे. पोते तंदुरस्त अथवा रोगी होय, पण ते एवुं चिंतवे के मारे अमुक दिवसे छठ के अट्ठम विगेरे तप करवुं, पछी गमे तेवुं कारण उपजे, तोपण ते निर्धारेला दिवसे ते तप अवश्य करे, पण छोडे नहीं, ते नियंत्रित पच्चखाण कहेवाय छे. आ पच्चखाण जे काळे वज्ररुषभ नाराच संहननवाळा तथा चौदपूर्वी, दशपूर्वी अने जिनकल्पी हता, ते काळे हतुं; हाल तेनो विच्छेद थइ गयो छे.

जे पच्चखाणमां आगार न होय, ते पांचमुं अनागार पच्चखाण कहेवाय छे. आ पच्चखाण पण पूर्व काळेज हतुं, हाल तेनो उच्छेद थइ गयो छे. जे पच्चखाणमां आगार होय, ते छठ्ठुं सागार पच्चखाण कहेवाय छे. जेमां अशन विगेरे चार प्रकारना आहार अने अनाहार वस्तु सर्वनुं पच्चखाण करवामां आवे, तथा चउविहार विगेरे तथा अनशन करवामां आवे, ते सातमुं निरवशेष पच्चखाण कहेवाय छे; जेमां दातिनी संख्या, कोळीयानी संख्या अने घरनी संख्या करे, एटले भिक्षा विगेरेमां दाति, कोळीया अने घरनुं परिमाण करे ते अथवा मग, अडद विगेरे वस्तुओनी भिक्षानो जेमां त्याग करवामां आवे, ते आठमुं परिमाणकृत पच्चखाण कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अनागत पच्चखाण कोने कहेवाय ? २ पर्युषण पर्व वीती गया पछी तेज कामना हेतुथी पाछळथी आठम विगेरे तपने माटे जे पच्चखाण ले, ते कयुं पच्चखाण कहेवाय छे ? ३ कोटि सहित पच्चखाण कोने कहेवाय ? ४ कोटि एटले शुं ? ५ मारे अमुक दिवसे अमुक तप करवुं, एवो नियम धारी ते कदि पण छोडे नहीं, ते कयुं पच्चखाण कहेवाय छे ? ६ अनागार पच्चखाण कोने

कहेवाय ? ७ जे पच्चखाणमां आगार होय, ते केवुं पच्चखाण कहेवाय ? ८ निरवशेष पच्चखाण कोने कहेवाय ? ९ जेमां दाति, कोळीया अने घरनी संख्या करवामां आवे, ते कयुं पच्चखाण कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पर्युषण पर्व, कोटि, वज्ररुषभ नाराच संहनन, चौदपूर्वी, दशपूर्वी, जिनकल्पी, उच्छेद, आगार, अशन, अनाहार वस्तु, चउविहार, अनशन, दाति, परिमाण.

पाठ १८ मो.

पच्चखाण भाग ३ जो.

(नवमा सांकेतिक पच्चखाणना आठ भेद.)

कांइपण संकेत एटले चिन्ह करीने पच्चखाण लेवुं, ते नवमुं सांकेतिक पच्चखाण कहेवाय छे. आ पच्चखाण घणुंकरीने गृहस्थने होय छे. कोइ श्रावक पोरसी विगेरेना पच्चखाण करीने बहार कोइ कामे गयो होय, अथवा घरमां बेठो होय, अने पोरसीनो वखत पूरो थइ गयो होय, परंतु भोजननी सामग्री तैयार थइ न होय, ते वखते एवो विचार करे के, आटलो वखत मारो प-

च्चखाण वगरनो रहेशे, ते वखते ते एवो संकेत-चिन्ह करे के, " ज्यां सुधी हुं मूठ वाळी नवकार न गणुं, त्यां सुधी मारे पच्चखाण छे; ते सांकेतिक पच्चखाणनो पहेलो भेद छे. वळी मुद्रिका धारी राखवा सुधीनो नियम ते बीजो भेद छे. गांठ वांधी राखवा सुधीनुं पच्चखाण धारे ते त्रीजो भेद छे. ज्यां सुधी घरमां होय, त्यां सुधी धारे, ते चोथो भेद छे.

ज्यां सुधी शरीरना परसेवानां टीपां नीकळे, त्यां सुधी धारे ते पांचमो भेद छे. ज्यां सुधी श्वास लेवाय, त्यां सुधी धारे ते छट्ठो भेद छे. ज्यां सुधी पात्र विगेरेने पाणीनां टीपां सूकाय, अथवा हाथ विगेरे सूकाय, त्यां सुधी धारे, ते सातमो भेद छे. ज्यां सुधी दीवानी ज्योति रहे, त्यां सुधी धारे, ते आटमो भेद छे.

आ प्रमाणे सांकेतिक पच्चखाणना आठ भेद कहेला छे. कदि पोरसी विगेरे पच्चखाण न करे, अने केवळ अभिग्रहज करे तो गांठ विगेरे न छोडे, त्यां सुधी तेने पच्चखाण थाय. तेथी आ सांकेतिक पच्चखाण जेम बीजा पच्चखाणोनी वचमां थाय छे, तेम अभिग्रहने विषे पण थइ शके छे. साधुने पण जो कोइ स्थानके ज्यां सुधी गुरु विगेरे न आव्या होय, त्यां सुधी अथवा सागारिक विगेरे कांइ कारण होय, त्यारे पण आ अभिग्रह संकेत पच्चखाण थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सांकेतिक पच्चखाण कोने कहेवाय ? २ संकेत एटले शुं ? ३ आ पच्चखाण कोनाथी करी शकाय छे ? ४ आ पच्चखाणना केटला भेद छे ? ५ पहेला भेदमां शुं आवे छे ? ६ मुद्रिका पहेरी राखवा सुधीनुं पच्चखाण धारे, ते केटलामो भेद छे ? ७ सांकेतिक पच्चखाणनो त्रीजो भेद कयो ? ८ घरमां होय, त्यां सुधी धारे ते केटलामो भेद छे ? ९ सांकेतिक पच्चखाणनो पांचमो भेद कयो छे ? १० ज्यां सुधी श्वास लेवाय, त्यां सुधी धारे ते कयो भेद छे ? ११ सांकेतिक पच्चखाणनो सातमो भेद कयो छे ? १२ दीवानी ज्योति रहे, त्यां सुधी धारे ते कयो भेद गणाय छे ? १३ सांकेतिक पच्चखाण अभिग्रहने विषे थइ शके के नहीं ? १४ आ पच्चखाण साधुने पण क्यारे थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

संकेत, पोरसी, सामग्री, ज्योति, अभिग्रह, मुद्रिका.

पाठ १९ मो.

पच्चखाण भाग ४ थो.

(दशमा अद्धा पच्चखाणना दश भेद.)

जेमां बे घडी तथा पोरसी विगेरेना काळना प्रमाणथी पच्चखाण लेवामां आवे, ते दशमुं अद्धा पच्चखाण अथवा काळ पच्चखाण कहेवाय छे. ते अद्धा पच्चखाणना दश भेद छे. १ नोकारसी, २ पोरिसी, साढ्ढपोरसी, ३ पुरिमड्ढ, ४ एकाशण, ५ एकलठाणुं, ६ आंबिल, ७ अभक्तार्थ, ८ चरिम, ९ अभिग्रह, अने १० विगइ, एवां तेनां नाम छे. जे नवकार कहीने पारवामां आवे, अने जेनुं बे घडीनुं प्रमाण छे, ते पहेलुं नोकारसी पच्चखाण कहेवाय छे. एक पोहोर दिवस सुधीनुं जे पच्चखाण ते बीजुं पोरसी पच्चखाण कहेवाय छे. साढ्ढपोरसी एटले दोढ पोहोरनुं पच्चखाण पण तेमां आवी जाय छे. बे पोहोरनुं पच्चखाण ते त्रीजुं पुरिमड्ढ पच्चखाण कहेवाय छे. पुरिमड्ढनुं बीजुं संस्कृत नाम पुरिमार्द्ध एवुं छे. एकाशणे[1] बेसीने एकज वार खावानुं नियम ते चोथुं एकासणुं पच्चखाण कहेवाय छे. एकज वार अने एक अंगज हाले तेवी रीते खावुं, ते पांचमुं एकलठाणुं पच्चखाण कहेवाय छे. आ पच्चखाणमां पाणी पण एकज वार पीवाय छे.

---

१ एकासणुं, एकलठाणा, आयंबिल, उपवासमां पाणी उन्हुं पीवाय छे.

जेमां विगय तथा निवीआता खवाय नहीं, अने लुखुं रांधेलुं अनाज पाणीमां धोइने खावुं, ते आयंबिल नामे छट्ठुं पच्चखाण कहेवाय छे. जे उपवासनुं पच्चखाण ते अभक्तार्थ नामे सातमुं पच्चखाण कहेवाय छे, अभक्तार्थ पच्चखाणनुं मागधीमां नाम अप्भत्तट्ठे एवुं छे. दिवस चरिम अथवा भव चरिम विगेरेनुं जे पच्चखाण ते आठमुं पच्चखाण कहेवाय छे.

“ ज्यारे अमुक कार्य कराय, त्यारेज अमुक वस्तु खावी, ” एवो नियम धारीने जे पच्चखाण लेवुं, ते नवमुं अभिग्रह पच्चखाण कहेवाय छे. विगइ एटले विकार करे तेवी दुध, दहीं, घी, गोळ, तेल, विगेरे वस्तुओ खावानुं जे पच्चखाण करे, ते दशमुं विगइ पच्चखाण कहेवाय छे. आ दशे पच्चखाणोमां काळनी मुख्यता छे, माटे ते अद्धा पच्चखाण कहेवाय छे.

आ वधामां नोकारसी कर्या पछी आगळ पोरसी विगेरे पच्चखाण थइ शके, ते विना न थइ शके. जो कदि नोकारसी कर्या विना पोरसी विगेरे करे, तो ते काळ संकेतरुप जाणवो. तेने माटे वृद्ध लोकोना संप्रदायमां एम पण कहे छे के, जे नोकारसी पच्चखाण छे, ते रातना चउविहार विगेरेना पच्चखाणनुं शिक्षारुप छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अद्धा पच्चखाण कोने कहेवाय ? २ अद्धा पच्चखाणनुं वीजुं नाम शुं छे ? ३ अद्धा पच्चखाणना केटला भेद छे ते कहो, अने तेनां नाम आपो. ४ नोकारसी पच्चखाण कोने कहेवाय ? ५ एक पोहोर सुधीना पच्चखाणने शुं कहे छे ? ६ साढ्ढपोरसी पच्चखाण शेमां गणाय छे ? ७ पुरिमढ्ढ पच्चखाण एटले शुं ? ८ पुरिमढ्ढनुं संस्कृत नाम शुं छे ? ९ एकासणानुं पच्चखाण केटलामुं कहेवाय छे ? १० एकलठाणुं पच्चखाण एटले शुं ? ११ आयंविल पच्चखाण एटले शुं ? १२ अभक्तार्थ पच्चखाणनो अर्थ शो, अने तेनुं वीजुं नाम शुं छे ? १३ आठमुं पच्चखाण कयुं कहेवाय छे १४ अमुक कार्य कराय, त्यारेज अमुक वस्तु खावी, ए पच्चखाणनुं नाम शुं ? १५ विगइ पचचखाण एटले शुं ? १६ आ दशे पच्चखाणोमां मुख्यता कोनी छे ? १७ नोकारसी पच्चखाणने माटे वृद्ध लोकोनो शो संप्रदाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

एकाशणुं, अंग, दिवस चरिम, भव चरिम, अभिग्रह, विकार, भंग, संकेतरुप, संप्रदाय, शिक्षारुप, विगइ.

पाठ २० मो.

पच्चखाण करवानुं फळ.

पच्चखाण करवाथी श्रावकने सारुं फळ मळे छे. कोइ पण काम आपणाथी स्वाभाविक रीते सारुं थइ जाय, पण जो ते पच्चखाणनो नियम लइने करवामां आव्युं होय, तो तेनुं फळ मळे छे, अने नहीं तो ते नकामुं थइ जाय छे. दाखला तरीके नोकारसीनुं पच्चखाण न कर्युं होय, तोपण आपणे अमुक वखत पछी स्वाभाविक रीते कांइ पण आहारपाणी वापरीए छीए, पण जो नोकारसीनुं पच्चखाण लइ, तेने नवकारथी पारीने ते वापरीए तो आपणने सारुं फळ मळे छे, माटे दरेक श्रावके पच्चखाण लेवानो उत्तम नियम राखवो जोइए.

पच्चखाण लेवाथी आलोक अने परलोक बन्नेनुं फळ मळे छे. आ लोकनुं पण धम्मिलकुमारे मेळव्युं हतुं, जेनी कथा धम्मिलना रासमां प्रख्यात छे, अने परलोकनुं फळ दामनक नामे एक वेपारीने मळ्युं हतुं. दामनक नामे एक वेपारी राजगृह नगरमां थयो हतो. ज्यारे ते आठ वर्षनो हतो, त्यारे मरकीना रोगथी तेनुं बधुं कुटुंब नाश पामी गयुं हतुं. पछी दामनक एकलो दुःखी थइ एक सागरदत्त नामना वेपारीने घेर रह्यो हतो. एक वखते काइ बे साधु सागरदत्त वेपारीने घेर भिक्षाने माटे आवी

चड्या; त्यां दामनकने जोइ तेमांथी एक साधु बोल्या के, आ छोकरो आ घरनो धणी थशे. आ वात गुप्तरीते सागरदत्ते सांभळी, तेथी तेने दामनक उपर इर्ष्या उत्पन्न थइ, अने तेने छुपीरीते मारी नाखवा चांडालने जणाव्युं. वनमां एकांते चांडाल मारवा लइ गयो, पण तेने दया आववाथी तेनी टचली आंगळी कापी लइ सागरदत्तने एंधाणी तरीके आपी, अने दामनकने छोडी मूक्यो. दामनक भय पामीने त्यांथी नाशी छुटयो. फरतो फरतो ते सागरदत्तना वसावेला गोकुळ गाममां आवी चड्यो. गोकुळपतिए ते बाळकने स्वरुपवान् जोइ पोताना पुत्र तरीके राख्यो. अनुक्रमे बाळक युवान थयो, त्यारे सागरदत्त शेठ त्यां आव्यो; तेणे दामनकने ओळखी लीधो. पछी तेने कोई कार्यनुं बहानुं करी एक पत्र लखी पोताना पुत्रनी पासे मोकल्यो, अने तेमां तेने विष आपवाने लख्युं. पत्र लइने दामनक चाल्यो, त्यां रस्तामां वाडीनी अंदर कोइ कामदेवनुं मंदिर आव्युं, तेमां तेणे विश्राम लीधो, अने ते त्यां सूइ गयो; त्यां सागरदत्तनी विषा नामनी दीकरी ते मंदिरमां वर मेळववाने कामदेवनी पूजा करवा आवी. आ सुंदर कुमारने सूतेलो जोइ तेनी उपर मोह पामी गइ. तेनी पासे पत्र हतो ते वांच्यो, तेमां पोताना पिताना अक्षर ओळख्या. तेणीए पिताना लेखमां भूल जाणी, विषने ठेकाणे काजळनो कानो वधारी विषा कर्युं. पछी ते त्यांथी चाली गइ, अने थोडी वार पछी दामनक

जागी उठयो. ते त्यांथी सागरदत्तने घेर आव्यो. सागरदत्तना पुत्रे ते पत्र वांची, तेनी साथे पोतानी बहेन विषाने परणावी. सागरदत्तना पुत्र साथे दामनकनी प्रीति थइ, ते वात जाणी सागरदत्त घणोज नाखुश थइ गयो. पछी कुळमातानुं पूजन करवा माटे दामनकने मोकल्यो, अने त्यां तेने ठार मारवाने चांडाल राख्या. कुळमातानुं पूजन करवानो वखत नठारो हतो, तेवी वेळाए नवा परणेलाने मातानुं पूजन करवा मोकलवो, ते योग्य न लागवाथी सागरदत्तनो पुत्र तेनीवती पूजन करवाने गयो, त्यां अगाउथी संकेत करी राखेला चांडालोए तेने मारी नाख्यो. आ वात सांभळी सागरदत्तनी छाती शोकथी फाटी गइ, अने ते मरण पामी गयो. पछी सागरदत्तना घरनो स्वामी दामनक थयो.

दामनकनुं आवुं पुण्य पच्चखाणना नियमथी थयुं हतुं. दामनक पूर्व भवे कुलकर हतो, तेणे जिनदास नामना कोइ श्रावकनी संगतथी साधु पासे जइ मच्छनुं मांस न खावानुं पच्चखाण लीधुं हतुं. एक वखते दुकाळ पडवाथी लोको मांसाहारी थया, एटले लोको ते कुलकरने बळात्कारे उपाडी माछलां पकडवाने पाणीना धरा पासे लाव्या. त्रण दिवस सुधी बळात्कारे ते काम कराव्युं. तेवामां एक माछलानी पांख तुटेली जोइ तेणे अनशन लीधुं. पछी ते मृत्यु पामीने आ दामनक थइने अवतर्यो हतो.

सारांश प्रश्नो.

१ पच्चखाण करवाथी शो लाभ छे ? २ दरेक श्रावके केवो नियम राखवो जोइए ? ३ पच्चखाण लेवाथी आ लोकनुं फळ कोने मळ्युं हतुं ? ४ पच्चखाण लेवाथी परलोकनुं फळ कोने मळ्युं हतुं ? ५ दामनक कोण हतो ? ६ ते दुःखी थइने कया नगरमां कोने घेर रह्यो हतो ? ७ सागरदत्ते तेने माटे शुं कर्युं हतुं ? अने ते शामाटे कर्युं हतुं ? ८ दामनकने विषानी साथे कोणे परणाव्यो हतो, अने केवी रीते परण्यो हतो ? ९ विषाए सागरदत्तना पत्रमां केवा शब्दनो शो फेर कर्यो हतो ? १० दामनकने सागरदत्ते शेनुं पूजन करवा मोकल्यो हतो ? ११ दामनकने बदले कोण पूजन करवा गयुं हतुं ? १२ सागरदत्तनुं छेवटे शाथी मृत्यु थयुं हतुं ? १३ दामनक पूर्व भवे कोण हतो, अने तेणे शुं पुण्य कर्युं हतुं ? ते हकीकत समजावो. १४ दामनक सागरदत्तना घरनो स्वामी कया पुण्यथी थयो हतो ?



खंड २ जो.

पाठ २१ मो.

सदाचार भाग १ लो.

शिक्षक—छोकराओ ! आजे तमने सदाचार विषे शीखववानुं छे, माटे तेमां ध्यान आपजो.

छोकराओ—साहेब ! अमे बराबर ध्यान आपीशुं, आप कृपा करीने सदाचार विषे समजावो.

शिक्षक—छोकराओ ! आचार एटले आचरण, जे सारुं आचरण ते सदाचार कहेवाय छे. सदाचार राखवाथी धर्म सारी रीते जळवाय छे. जेनामां सदाचार होतो नथी, ते माणस धर्मने साधी शकतो नथी. धर्म साधवानी योग्यता शुचि एटले पवित्र रहेवाथी प्राप्त थाय छे. जेनामां अशुचि होय, तेनामां धर्म साधवानी योग्यता आवती नथी. शुचि-पवित्र रहेवानी रीत सदाचारथी मेळवाय छे. ज्यारे कायानी शुद्धि थइ, एटले हृदय निर्मळ थवाथी मन वचननी शुद्धि थइ जाय छे; माटे दरेक श्रावके सदाचार पाळवो जोइए. सदाचारने माटे एक विद्वान् लखे छे के, अनाचार राखवाथी मलिनता आवे

छे, अने अति आचार राखवाथी मूर्खता देखाय छे, माटे विचार अने आचार बंनेना योगने सदाचार कहेछे.

आ शरीर हमेशां अशुचिथी भरेलुं छे, तेथी तेनी द्रव्यथी शुद्धि करवानी जरुर छे. लघुनीति तथा वडीनीतिए जइ आव्या पछी राख तथा जळथी हाथ पग धोवा जोइए, झाडे जवानां वस्त्र जुदां राखवां जोइए. वनतां सुधी तो जंगल जइ आव्या पछी न्हावुं जोइए, ते छतां कदि तेम न बने, तो हाथ पग बरावर साफ करी, कोगळा करी, मोढुं धोई, बधी जातनी अशुचि टाळवी जोइए.

छोकराओ—साहेब ! हवे अमे सदाचारने माटे समज्या. हजु पण कांइ ते विषे वीजुं समजावो.

सारांश प्रश्नो.

१ आचार एटले शुं ? २ सदाचार एटले शुं ? ३ सदाचार राखवाथी शुं थाय छे ? ४ क्यो माणस धर्मने साधी शकतो नथी ? ५ धर्म साधवानी योग्यता क्यारे प्राप्त थाय छे ? ६ केवा माणसमां धर्म साधवानी योग्यता आवती नथी ? ७ सदाचारथी केवी रीत मेळवाय छे ? ८ सदाचारने माटे एक विद्वान् शुं लखे छे ? ९ द्रव्यथी शुद्धि करवानी केने जरुर छे ? १० राख तथा

पाणीथी हाथ पग क्यारे धोवा जोइए ? ११ जंगल जइ आव्या पछी शुं करवुं जोइए ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

आचरण, शुचि, अशुचि, निर्मळ, मलिनता, मूर्खता, लघु नीति, वडी नीति.

पाठ २२ मो.

सदाचार भाग २ जो.

शिक्षक—छोकराओ ! तमे सदाचारने माटे थोडुं तो समज्या हशो, हवे ते विषे वधारे समजावुं, ते ध्यानमां राखजो.

सदाचारनो बीजो शब्द आचार छे, तेना त्रण भाग पडे छे. मननो आचार, वचननो आचार, अने कायानो आचार. हमेशां मन चोख्खुं राखवुं, ए मननो आचार कहेवाय छे. मननो आचार राखवाथी मन चोख्खुं रहे छे, अने ज्यारे मन चोख्खुं रहे, तो पछी तेमां नठारा विचारो आवता नथी.

छोकराओ—साहेब ! तमे कह्युं के, मन चोख्खुं राखवुं, त्यारे मन चोख्खुं न रहे, ए केवी रीते बनतुं

हशे ? वळी मन शेनाथी मेलुं थाय ? ते वधुं अमने सारी रीते समजावो.

शिक्षक—छोकराओ ! खोटुं ध्यान करवाथी, मनमां कपट राखवाथी, अने खराब विचार लाववाथी मन मेलुं थइ जाय छे. ज्यारे मन मेलुं थयुं, एटले मननो आचार नाश पामे छे, तेथी करीने माणस अनेक जातनां नठारां काम करे छे, माटे हमेश मनने चोख्खुं राखवुं. मनने चोख्खुं राखवुं, ए मननो आचार पाळ्यो कहेवाय छे.

छोकराओ ! बीजो वचननो आचार छे. सारां वचनो बोलवां, सत्य बोलवुं, सत्पुरुषनां वखाण करवां, बोलवामां नम्रता तथा विनय राखवो, ए वचननो आचार कहेवाय छे. वचननो आचार राखवाथी सारां वचनो बोलाय छे, अने सारां वचनो बोलवाथी सारां काम करी शकाय छे. जेओ वचननो आचार राखता नथी, तेओ नठारां वचन बोले छे. तेमना मुखमांथी भुंडां वचनो अने बीजानी निंदानां वचनो नीकळे छे, तेवां माणसो वचनना आचार विनाना नीच गणाय छे.

छोकराओ ! त्रीजो कायानो आचार छे. मन अने वचननो आचार ए भावथी, अने कायानो आचार द्रव्यथी छे. शरीरनी अशुचि दूर करवी, शरीर उपर मेल राखवो नहीं, शरीर उपर पहेरवानां लुगडां साफ राखवां,

मोढुं, हाथ, पग, बराबर संभाळीने धोवां. आंख, कान, अने नाकना मेल दूर करी, तेने साफ राखवां, ए बधो कायानो आचार कहेवाय छे. कायानो आचार राखवाथी वळी आलोकमां पण केटलाएक फायदा थाय छे. शरीर साफ राखनारने चामडीना के रुधिरना रोगो थता नथी, तेथी घणे भागे शरीरनी तंदुरस्ती सारी रहे छे, माटे दरेक श्रावकना छोकराए कायानो आचार साचववानी जरुर छे.

छोकराओ—साहेब! हवे अमे सदाचारमां बराबर समजी गया. आपनी आ शीखामण प्रमाणे अमे हमेशां चालीशुं, अने आपनो आभार मानीशुं.

सारांश प्रश्नो.

१ सदाचारनो बीजो शब्द शो छे? २ आचारना केटला भाग पडे छे? तेनां नाम आपो. ३ मननो आचार एटले शुं? ४ मन शाथी मेलुं थाय छे? ५ वचननो आचार एटले शुं? ६ वचननो आचार न होय, तो केवां वचनो नीकळे छे? ७ कायानो आचार एटले शुं? ८ भावथी अने द्रव्यथी कया कया आचार छे? ९ कायानो आचार राखवाथी आ लोकमां शा शा फायदा थाय छे?

पाठ २३ मो.

न करवानां काम.

धर्मदास नामनो एक धर्मी श्रावक चंपानगरीमां रहेतो हतो, तेने विनय अने विवेक नामे बे पुत्रो हता. धर्मदास पोताना बे पुत्रोने जुदा जुदा विषय शीखवतो हतो. जे करवा योग्य काम होय, ते विनयने शीखवतो, अने जे करवा योग्य काम नथी, ते विवेकने शीखवतो हतो. विवेक हमेशां सवारे उठीने न करवानां कामनो पाठ करी जतो, अने ते पछी बीजां काम करतो हतो. दरेक श्रावकना दीकराए ते विवेकनी जेम न करवानां कामने याद राखवां जोइए, ते आ नीचे प्रमाणे छेः—

१ मिथ्यात्वीनी करणी करवी नहि.

२ गाय विगेरे प्राणीओने लाकडी विगेरेथी घणाज मारवां नहि, अने मजबूत रीते बांधवां नहि.

३ कोइपण जीवनी हिंसा करवी नहि.

४ माकड, जुं विगेरेने तडकामां फेंकी देवां नहि.

५ अळगण पाणी वापरवुं नहि.

६ अनाज, इंधणां, शाक, पत्र, तांबूल, फळ विगेरे शोध्या विना वापरवां नहि.

७ सोपारी, खारक, ओळी, फळी विगेरे पूरीरीते भांग्या विना मोढामां नाखवां नहि.

८ जीववाळी भूमि उपर नहावुं नहि, तथा तेवी भूमि उपर मळ मूत्र करवां नहि.

९ जयणा राख्या विना हालवुं चालवुं नहि.

१० जीववाळा दाणा विगेरे दळवा, भरडवा तथा रांधवा नहि.

११ धर्मनां काम अनादरथी करवां नहि.

१२ देव, गुरु अने साधर्मिओनी निंदा तथा द्वेष करवो नहि.

१३ देरासरनुं द्रव्य खावुं नहि.

१४ देव, गुरु अने धर्मनी निंदा करनारनी संगत करवी नहि.

१५ धर्मी जीवोनी मश्करी करवी नहि.

१६ अति कषायवाळां काम करवां नहि.

१७ पंदर कर्मादाननां आचरण करवां नहि.

१८ पापवाळी नोकरी करवी नहि.

आ अढार न करवानां काम हुं करीश नहीं, कोइनी पासे करावीश नहीं, अने करता होय तेमने अनुमोदीश नहीं.

हमेशां आ प्रमाणे याद करवाथी विवेक एक सारो उत्तम श्रावक थयो हतो, अने तेनुं विवेक एवुं नाम जगतमां सार्थक थयुं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ धर्मदास केवो श्रावक हतो ? २ तेने केटला दीकरा हता ? ३ विनय अने विवेकने ते शा शा विषय शीखवतो हतो ? ४ विवेक हमेशां शुं याद करतो हतो ? ५ न करवानां काम केटलां गणाव्यां छे ? ६ ते न करवानां काम याद करवाथी विवेकने शो लाभ थयो हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

करणी, इंधणां, तांबूल, मळ, पंदर कर्मादान.

पाठ २४ मो.

करवा योग्य काम.

धर्मदासे विनयने करवा योग्य काम गणावी, तेने हमेशां याद राखवाने कह्युं हतुं. तेमां मुख्य रीते पांच प्रकारना विरुद्धनो त्याग करवाने सूचव्युं हतुं.

१ देश विरुद्ध, २ काळ विरुद्ध, ३ राज विरुद्ध, ४ लोक विरुद्ध ५ अने धर्म विरुद्ध, ए पांच प्रकारे विरुद्ध न होय, ते काम हमेशां करवा योग्य छे; पण विनयना

मनमां ठसावी दीधुं हतुं. तेथी विनय हमेशां सवारे तेने याद करतो हतो.

१ जे देशमां जे काम न करवा योग्य होय, ते देश विरुद्ध गणाय छे.

२ जे काळे जे काम न करवा योग्य होय, ते काळ विरुद्ध गणाय छे.

३ जे माणसो राजानी विरुद्ध होय, तेमनी साथे मळवुं, अथवा जे राजाए मना करेलुं होय, ते करवुं, ते राज विरुद्ध गणाय छे.

४ जे काम लोकमां नठारुं कहेवातुं होय, अथवा जे कामने लोको धिक्कारता होय, तेवुं काम करवुं ते लोक विरुद्ध कहेवाय छे.

५ जे काम धर्मनी विरुद्ध होय, ते धर्म विरुद्ध कहेवाय छे.

आ पांचे प्रकारना विरुद्ध वगरनुं जे काम होय, ते करवा योग्य काम गणाय छे तेवां करवा योग्य कामने विनय हमेशां याद करतो, अने ते प्रमाणे वर्त्ततो हतो. तेम वर्त्तवाथी विनय ज्यारे लायक उम्मरनो थयो, त्यारे ते एक उत्तम प्रकारनो श्रावक बन्यो हतो.

सारांश प्रश्नो.

१ विरुद्ध केटला प्रकारना छे ? ते गणावो. २ देश विरुद्ध अने काळ विरुद्ध एटले शुं ? ३ राज विरुद्ध, लोक विरुद्ध, अने धर्म विरुद्ध एटले शुं ? ४ करवा योग्य काम केवुं गणाय ? ५ करवा योग्य काम करवाथी विनय केवो थयो हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विरुद्ध, काळे, उत्तम प्रकारनो.

पाठ २५ मो.

भोजन विधि भाग १ लो.

श्रावकना आचारमां भोजन विधि पण आवे छे. विधि प्रमाणे भोजन करवाथी आलोकमां घणा लाभ थाय छे, अने भोजननो आचार साचववाथी धर्मनो लाभ पण मेळवी शकाय छे. श्रावके हमेशां वखतसर भोजन करवुं. बनतां सुधी भोजननो वखत उल्लंघन करवा देवो नहीं. भोजन करवानी जग्या ज्यां एकांत अने शांति रहे तेवे ठेकाणे राखवी. भोजन वखते मुनिने दान

आर्त्तध्यानो भावना भाववी, अने योग होय तो दान देवुं, तेमज माता, पिता, भाइ, बहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्लान—दुःखी, अने बांधेलां गाय विगेरे जानवरोनी संभाळ पहेलां लेवी जोइए. प्रथम मातापिताने भोजन करावबुं, ते पछी सरखा आसन उपर बेसी, पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण करी, देव गुरुनुं नाम लइ, पच्चखाण पारी, सर्व नियमोने संभारी शांतिथी भोजन करवुं.

जे पोतानी तबीयतने माफक आवे तेवा पदार्थो जमवा. खावामां कोइ चीज उपर अति लोलुपता राखवी नहीं. जे वस्तु अभक्ष्य एटले पापवाळी होय ते खावी नहीं. खावामां मिताहार करवो, वधारे पडतुं जमवुं नहीं. वधारे पडतुं जमवाथी अजीर्ण, उलटी, झाडो विगेरे थाय छे. जे माणस मिताहार करे छे, ते बळवान् थाय छे, अने जे वधारे पडतुं जमे, ते रोगी थाय छे. जो आखी जींदगी निरोगी रहेवुं होय, तो नीचेनी पांच बाबत हमेशां ध्यानमां राखवी.

१ भुख लागे त्यारे हितकारी थोडो खोराक लेवो.
२ डावी बाजु नीचे राखी सुवुं.
३ थोडो घणो चालवानो अभ्यास राखवो.
४ ज्यारे हाजत थाय, त्यारे तरत दिशा मात्रा करवां.
५ विषय भोग घणोज ओछो करवो.

आ पांच बाबत ध्यानमां राखी, ते प्रमाणे नियमथी वर्त्तवामां आवे, तो आखी जींदगी निरोगी रहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ विधि प्रमाणे भोजन करवाथी शो लाभ थाय छे ? २ भोजननो आचार साचववाथी शुं थाय छे ? ३ भोजन क्यारे करवुं ? ४ भोजन करती वखते शुं भावना भाववी ? ५ भोजन करती वखते कोनी कोनी संभाळ लेवी जोइए ? ६ भोजन करवानी जग्या केवे ठेकाणे राखवी ? ७ पहेलां कोने भोजन कराववुं ? ८ पछी शुं शुं करीने भोजन करवुं ? ९ भोजनमां केवा पदार्थो जमवा ? १० केवी वस्तु खावी नहीं ? ११ वधारे पडतुं जमवाथी शुं थाय छे ? १२ जे मिताहार करे छे, तेने शुं थाय छे ? १३ आखी जींदगी निरोगी रहेवामां पांच बाबत ध्यानमां राखवानी छे, ते कइ पांच बाबत ? १४ ए पांच बाबत ध्यानमां राखवाथी शुं थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

उल्लंघन, ग्लान, लोलुपता, अभक्ष्य, अजीर्ण, मिताहार, भावना.

पाठ २६ मो.

भोजन विधि भाग २ जो.

श्रावके भोजन विधिमां पचीश बाबतोनो त्याग करवानो छे. १ अति सवारे, अति संध्याकाळे, अने रात्रे भोजन करवुं नहीं. २ सडेलुं अने वासी अन्न खावुं नहीं. ३ हालतां चालतां खावुं नहीं. ४ जमणा पग उपर हाथ राखी खावुं नहीं. ५ खावाना पदार्थ हाथमां राखी खावुं नहीं. ६ खुल्ला आकाशमां, तडकामां, अने अंधारामां बेसी खावुं नहीं. ७ झाड नीचे बेसी खावुं नहीं. ८ तर्जनी (अंगुठानी पासेनी) आंगळी उंची राखी खावुं नहीं. ९ हाथ, पग, मुख विगेरे धोया विना खावुं नहीं. १० नग्न थइने के मेलां वस्त्र पहेरीने खावुं नहीं. ११ थाळी पकडया विना खावुं नहीं. १२ फक्त एक धोतीयुं पहेरी खावा बेसवुं नहीं. १३ भीनां वस्त्र पहेरी खावुं नहीं. १४ भीनुं वस्त्र माथे लपेटी खावुं नहीं. १५ ज्यारे अपवित्र होइए, त्यारे खावुं नहीं. १६ अति लंपट थइ एटले अकरांतीया थइ खावुं नहीं. १७ उपान पहेरी निःकेवळ भूमिपर बेसी खावुं नहीं. १८ विदिशा तथा दक्षिण दिशा तरफ मुख राखी खावुं नहीं. १९ चंडाल के धर्मभ्रष्टनी देखतां खावुं नहीं. २० फुटेला तथा मलिन भाजनमां खावुं नहीं. २१ हत्या करनार तथा रजस्वला स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहीं. २२ गाय,

श्वान तथा पंखीए सुंघेली, अजाणी अने फरीथी उनी करेली वस्तु खावी नहीं. २३ बचबचाट शब्द करतां खावुं नहीं. २४ उघाडी पडी रहेली वस्तु खावी नहीं, अने २५ मुख फाडतां बुरुं लागे, एम मुख करी खावुं नहीं.

आ पचवीश नियमोने बराबर ध्यानमां राखी श्रावके हमेशां भोजन करवुं. अति खारुं, अति खाटुं, अति तीखुं, अति टंडुं अने अति मीठुं खावुं नहीं. अति गरम खावाथी रस नाश पामे छे, अति खाटुं खावाथी इंद्रियोनी शक्ति कम थइ जाय छे, अति खारुं खावाथी नेत्र बगडी जाय छे, अति चीकणुं खावाथी नासिकानी शक्ति मंद थइ जाय छे, माटे दरेक पदार्थ साधारण रीते खावा. तेमां थोडा थोडा बधा रस होवा जोइए. तीखुं तथा कडवुं खावाथी कफ दूर थइ जाय छे, कषायलुं अने मीठुं खावाथी पित्त नाश पामे छे, घी विगेरे चीकणा पदार्थो खावाथी वायु दूर थइ जाय छे.

जमती वखते सौथी पहेलां मीठुं अने चीकणुं भोजन करवुं, जे तीखुं भोजन होय ते वचमां करवुं, अने कडवुं भोजन पाछळथी करवुं. जम्या पहेलां पाणी पीवुं न जोइए. जम्या पहेलां पाणी पीवाथी अग्नि मंद थइ जाय छे, भोजननी वचमां पीवाथी घणो गुण थाय छे, अने वचमां पीधा शिवाय भोजनने अंते पीवाथी ते झेर समान थाय छे. जम्या पछी हाथ धोवा, ते पाणीथी

भींजाएला हाथ, गळुं, कपोळ, तथा आंख उपर लगाडवा नहीं.

एठुं मुकवुं नहीं, जोइए ते प्रमाणमांज लेवुं. जम्या पछी शरीरनुं मर्दन, दिशागमन, बोजो उठाववानुं काम, बेसी रहेवुं अने स्नान, एटलां काम करवां नहीं. कोइ विशेष पुण्यनुं काम शरु करतां अने आठम, चौदश विगेरे पर्वने दिवसे भोजन करवुं न जोइए. एवी तपश्या आलोक अने परलोकमां हितकारी छे, तथा गुणकारी छे. भोजन कर्या पछी नवकार मंत्र गणी उठवुं. आ विधि प्रमाणे भोजन करनारो श्रावक सदाचारने सेवनार तथा स्वधर्म प्रमाणे वर्त्तनार गणाय छे.

साराश प्रश्नो.

१ भोजन विधिमां केटली बाबतोनो त्याग करवानो छे ? २ ते पचवीश बाबत टुंकामां गणावो. ३ रस, इंद्रियोनी शक्तिनो नाश, नेत्रनुं बगडी जवुं, नासिकानी शक्तिनी मंदता केवा केवा पदार्थो खावाथी थाय छे ? ४ कफ, पीत्त, अने वायु केवो पदार्थ खावाथी नाश पामे छे ? ५ जमती वखते पहेलुं, वचे, पाछळथी केवुं केवुं जमवुं ? ६ जमती वखते पाणी पीवुं क्यारे सारुं, अने क्यारे नठारुं ? ७ जम्या पछी भींजाएला हाथ क्यां क्यां न लगाडवा जोइए ? ८ जम्या पछी शुं शुं न

करवुं जोइए ? ९ कये कये दिवसे भोजन न करवुं जोइए ? १० तपस्या करवाथी शो लाभ थाय छे ? ११ भोजन कर्या पछी शुं भणीने उठवुं ? १२ विधि प्रमाणे भोजन करनारो श्रावक केवो गणाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

तर्जनी, लंपट, उपान, निःकेवळ, विदिशा, धर्मभ्रष्ट, रजस्वला, रस, कफ, पीत्त, अग्नि मंद, दिशागमन.

खंड ३ जो.

पाठ २७ मो.

जीव.

जैन शास्त्रमां नव तत्त्वो मानेलां छे, तेमानुं जीव एक तत्त्व छे. जे प्राणने धारण करे, अने जेनामां चैतन्य होय, ते जीव कहेवाय छे. ते जीवनी उपाधि भेदे करी छ जातिओ छे. पहेली जातिमां जीव चेतना लक्षणथी एक प्रकारनो छे. बीजी जातिमां त्रस अने स्थावर एवा तेना बे भेद पडे छे. जेनामां चालवानी शक्ति होय, अने जे भय देखीने त्रास पामे. ते त्रस जीव, अने जे हाली

चाली शके नहीं, अने स्थिरज रहे, ते स्थावर जीव कहेवाय छे. त्रीजी जातिमां तेना त्रण भेद पडे छे. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसक वेद अर्थात् स्त्री जातिना, पुरुष जातिना, अने नपुंसक जातिना जीव होय छे ते. चोथी जातिमां देवता, मनुष्य, नारकी अने तिर्यंच एम चार जातना जीव थाय छे. पांचमी जातिमां एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेरेंद्रिय, चौरेंद्रिय, अने पंचेंद्रिय एम पांच भेद पडे छे, अने छठ्ठी जातिमां छकाय जीव थाय छे. पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय वनस्पतिकाय अने त्रसकाय. आ प्रमाणे जीवनी छ जातिओ थाय छे. तेमां पांचमी जातिमां जे एकेंद्रिय [एक इंद्रिवाळा] जीव कहेल छे, तेना सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेद पडे छे. सूक्ष्म एकेंद्रिय जीव निरातिशयी[1] सूक्ष्म नाम कर्मना उदयवाळा होवाथी ते घणा झीणामां झीणा होय छे. ते आ बधा चौद राज्यलोकमां व्यापीने रहेला छे, ते पर्वत विगेरेने भेदीने जाय आवे छे, ते कोइथी भेदाता नथी, अने अग्निथी बळता नथी. माणसोनां चर्मचक्षुथी[2] जोवामां आवता नथी, अने माणस के कोइ बीजाना उपयोगमां आवता नथी.

बादर एकेंद्रिय जीव दृश्य[3] सातिशय नाम कर्मना उदयवाळा होवाथी माणसोथी जोइ शकाय छे, एक नि-

---

१ एक जातनुं कर्म छे, जे कर्म उदय आवे, त्यारे प्राणी झीणामां झीणुं रुप मेळवी शके छे. २ चामडानी आंखो. ३ एक जातनुं कर्म छे. जे उदय आवतां प्राणी दृश्य-जोइ शकाय तेवुं रुप मेळवे छे.

यमित टेकाणे ते रही शके छे, कोइथी भेदी शकाय छे, अग्निथी बाळी शकाय छे, अने ते सर्वना उपयोगमां आवे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ जैन शास्त्रमां केटलां तत्त्व छे ? २ जीव कोने कहेवाय ? ३ जीवनी बधी मळीने केटली जाति ? ४ पहेली, त्रीजी अने पांचमी जाति कइ ? ते जणावो. ५ त्रस जीव एटले शुं ? ६ स्थावर एटले शुं ? ७ छकाय कया कहेवाय ? ८ सूक्ष्म अने बादर एटले शुं ? ९ निरतिशयी सूक्ष्म अने सातिशय दृश्य ए शुं छे ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्राण, चैतन्य, स्त्रीवेद, पुरुष वेद, नपुंसक वेद, नारकी, तिर्यंच, एकेंद्रिय, बेरिंद्रिय, तेरिंद्रिय, चौरिंद्रिय, पंचेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, चौद राज्यलोक, चर्म चक्षु, उपाधि भेद, निरातिशय, सातिशय.

पाठ २८ मो.

पर्याप्ति.

जीवना शरीरनो बंध पुद्गळोथी बने छे. ए पुद्गळोना वधाराथी जे कांइ पुद्गळना परिणामने[1] करनारी कोइ जातनी शक्ति थाय, ते **पर्याप्ति** कहेवाय छे. ते पर्याप्तिनो ओछो वधतो संबंध जीवनी साथे होय छे. ते पर्याप्तिने आधारेज जीवनुं जीवन[2] रहे छे. पर्याप्तिनो टुंको अर्थ आहारादि[3] पुद्गळोनो मेळाप एवो पण थइ शके. ए पर्याप्तिना छ भेद छे. १ आहार पर्याप्ति, २ शरीर पर्याप्ति, ३ इंद्रिय पर्याप्ति, ४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, ५ भाषा पर्याप्ति अने ६ मनः पर्याप्ति.

१ **आहार पर्याप्ति** दरेक जीव बीजा जीवनी उत्पत्ति वखते जे शक्तिवडे आहार ले, अने ते आहारने पछी रसपणे परिणमाववानी जे शक्ति ते.

२ **शरीर पर्याप्ति** आहारना रसरुप थएला परिणामने रस, रुधिर, मांस, चरबी (मेद), अस्थि[4], मज्जा[5] अने वीर्य, ए सात धातुरुपे परिणमावी शरीर बांधवानी जे शक्ति ते.

---

१ एक रुपने बीजे रुपे थइ जवुं, ते ' परिणाम कहेवाय छे. २ जीववुं. ३ खावुं ते. ४ हाडकां. ५ एक जातनी धातु छे.

३ इंद्रिय पर्याप्ति सात धातुपणे परिणमावेला ते रसने जेने जेटली इंद्रियो जोइए, तेटली इंद्रियपणे परिणमाववानी जे शक्ति ते.

४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति उपरनी त्रण पर्याप्ति बांधीने पछी श्वासोच्छ्वासने योग्य एवी वर्गणाना दलिक (दळिया) लइ, तेमने श्वासोच्छ्वासपणे परिणमावीने अवलंबी[1] मुकवानी जे शक्ति ते.

५ भाषा पर्याप्ति भाषाने योग्य एवां पुद्गळ लइ, तेने भाषापणे परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते.

६ मनः पर्याप्ति मनोवर्गणा योग्य पुद्गळ लइ, तेने मनपणे परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते.

आ छ पर्याप्तिओ जीवमां होय छे. तेमांथी जे जीवने जेटली पर्याप्ति कही छे, तेटली पूरी कर्या पछी मरण पामे, ते पर्याप्ता जीव कहेवाय छे, अने जेने जेटली कही छे, तेटली पूरी कर्या विना मरण पामे, ते अपर्याप्ता जीव कहेवाय छे.

ते छ पर्याप्तिओमां आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, अने इंद्रिय पर्याप्ति आ पहेली त्रण पर्याप्तिओ पूरी कर्या विना कोइ जीव मरतो नथी.

---

[1] ग्रहण करी मुकवानी.

सारांश प्रश्नो.

१ पर्याप्ति एटले शुं ? २ तेनो टुंको अर्थ शुं थइ शके ? ३ पर्याप्तिना केटला भेद छे ? ४ परिणाम शब्दनो अर्थ शो ? ५ सात धातु कया ? ६ वर्गणा एटले शुं ? ७ दलिया एटले शुं ? ८ अवलंबी मुकवानी एटले शुं ? ९ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जीव कया कहेवाय ? १० कइ कइ पर्याप्ति पूरी कर्या विना जीव मरतो नथी ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

परिणाम, पुद्गळ, पर्याप्ति, जीवन, आहार, उत्पत्ति, मज्जा, अस्थि, वर्गणा, दलिक, अवलंबी, मनोवर्गणा.

पाठ २९ मो.

जीवना चौद भेद.

जीवनी छ जातिमां पांचमी जातिनी अंदर पंचेंद्रिय जीव कहेल छे, तेने चामडी, जीभ, नाक, आंख अने कान—ए पांच इंद्रियो होय छे. ए पंचेंद्रिय जीवना संज्ञी अने असंज्ञी एवा बे भेद थाय छे. जेनामां मननी संज्ञा (भान) होय ते संज्ञी, अने जेनामां मननी संज्ञा

न होय, ते असंज्ञी कहेवाय छे. एक इंद्रियवाळाना बे भेद, बेरिंद्रिय, तेरिंद्रिय अने चौरिंद्रियना एक एक भेद अने पंचेंद्रियना बे भेद—ए बधा मळी नीचे प्रमाणे सात भेद थाय छे.

१ सूक्ष्म एकेंद्रिय.	२ बादर एकेंद्रिय.
३ बेरिंद्रिय.	४ तेरिंद्रिय.
५ चौरिंद्रिय.	६ संज्ञी पंचेंद्रिय.
७ असंज्ञी पंचेंद्रिय.	

उपरना साते भेदना जीवो—१ पर्याप्ता अने २ अपर्याप्ता, एवा बे प्रकारे छे, एटले बधा मळीने जीवना चौद भेद थया, ते नीचे प्रमाणे—

१ सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ता.	२ सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्ता.
३ बादर एकेंद्रिय पर्याप्ता.	४ बादर एकेंद्रिय अपर्याप्ता.
५ बेरिंद्रिय पर्याप्ता.	६ बेरिंद्रिय अपर्याप्ता.
७ तेरिंद्रिय पर्याप्ता.	८ तेरिंद्रिय अपर्याप्ता.
९ चौरिंद्रिय पर्याप्ता.	१० चौरिंद्रिय अपर्याप्ता.
११ संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता.	१२ संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता.
१३ असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता.	१४ असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता.

सारांश प्रश्नो.

१ पांच इंद्रियोनां नाम कहो. २ संज्ञी अने असंज्ञी ए शुं ? ते समजावो. ३ जीवना सात भेद क्या ? ते गणावो. ४ क्या जीवना एक एक भेद थाय छे ? अने क्या जीवना बे बे भेद थाय ? ते जणावो.



शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

संज्ञा, संज्ञी, असंज्ञी, पर्याप्ता, अपर्याप्ता.



पाठ ३० मो.

जीवना चौद भेद विषे कविता.

चोपाइ.

जीवतणी छो जाति बने,
एकेंद्रिय पांचमीमां[1] गणे. ॥ १ ॥
सूक्ष्म ने बादर तेना भेद,
द्वि त्रि[2] चौ इंद्रिय एक भेद. ॥ २ ॥

---

१ पांचमी जातिमां. २ द्वि–द्वीइंद्रि (बेरिंद्रिय), त्रि–त्रींद्रिय (तेरिंद्रिय), चौ–चौरिंद्रिय, तेमना एक एक भेद छे.

पंचेंद्रिय वेथी भेदाय[3];
संज्ञी असंज्ञी ते कहेवाय. ॥ ३ ॥
ते साथे पर्याप्ता थाय,
अपर्याप्ता तेम गणाय. ॥ ४ ॥
जीवतणा चौद भेद मनाय,
जिनवाणीमां ते वंचाय. ॥ ५ ॥

पाठ ३१ मो.

अजीव तत्त्व.

पहेला जीव तत्त्वनी विरुद्धनुं जे तत्त्व ते बीजुं अजीव तत्त्व कहेवाय छे. जीव तत्त्व बराबर समजवाथी अजीव तत्त्व सहेली रीते जाणी शकाय छे. ते अजीवना अरुपी अजीव अने रुपी अजीव, एवा मुख्य बे भेद पडे छे. जेनुं रुप देखवामां न आवे, ते अरुपी कहेवाय छे, अने जेनुं रुप देखवामां आवे, ते रुपी कहेवाय छे. अरुपी अजीवना दश भेद अने रुपी अजीवना चार भेद मळी अजीवना चौद भेद थाय छे. आ चौद भेदवाळुं अजीव तत्त्व दरेक आस्तिक माणसे जाणवुं जोइए. ए तत्त्व जाणवाथी जगत्ना घणा पदार्थो जाणवामां आवे छे. जे वस्तु चेतन विनानी जडरुप छे, ते अजीव गणाय छे,

३ बे भेद थाय छे.

अने तेवी वस्तुना ज्ञानथी जीव अने अजीव तत्त्वनुं स्फुट ज्ञान सारी रीते थइ शके छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अजीव तत्त्व एटले शुं ? २ अजीव तत्त्वना मुख्य केटला भेद छे ? ३ रुपी अने अरुपी एटले शुं ? ४ रुपी अजीवना केटला भेद छे ? ५ अरुपी अजीवना केटला भेद छे ? ६ अरुपी अने रुपी अजीवना बधा मळीने केटला भेद थाय छे ? ७ अजीव शुं कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अरुपी, रुपी, आस्तिक, चेतन, जड.

पाठ ३२ मो.

अस्तिकाय.

अस्ति एटले प्रदेश तेनो काय एटले समूह, ते अस्तिकाय कहेवाय छे, एटले प्रदेशना समूहने अस्तिकाय कहे छे. चलन (हालवा चालवामां) मदद करवाना स्वभाव गुणवाळो जे प्रदेशनो समूह, ते धर्मास्तिकाय

कहेवाय छे. जे स्थिर राखवामां मदद करवानो स्वभाववाळो होय, ते अधर्मास्तिकाय कहेवाय छे. एक जग्याथी बीजी जग्यामां जतां जे अवकाश आपे, ते आकाशास्तिकाय कहेवाय छे; एटले चलनमां मदद करवानो स्वभाववाळो प्रदेश समूह ते धर्मास्तिकाय, स्थिर राखवामां मदद करवानो स्वभाववाळो प्रदेश समूह ते अधर्मास्तिकाय, अने एक जग्याथी बीजी जग्यामां जतां अवकाश आपनारो प्रदेशनो समूह, ते आकाशास्तिकाय एम समजवुं.

आ त्रणे प्रकारना अस्तिकायना स्कंध, देश अने प्रदेश एवा त्रण त्रण भेद पडे छे. जे आखो पदार्थ होय, ते स्कंध कहेवाय छे. तेवा स्कंधनी साथे संबंधवाळो जे केटलोएक भाग, ते देश कहेवाय छे, अने जेनो भाग करवाथी बीजो भाग पडी शके नहि, ते प्रदेश कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अस्तिकाय ए शब्दनो अर्थ करो. २ अस्ति एटले शुं, अने काय एटले शुं? ३ धर्मास्तिकाय एटले शुं? ४ अधर्मास्तिकाय एटले शुं? ५ आकाशास्तिकाय एटले शुं? ६ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकायना केटला भेद छे? ७ स्कंध, देश अने प्रदेश एटले शुं? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अस्तिकाय, चलन, स्वभाव, अवकाश, स्कंध, देश, प्रदेश.

पाठ ३३ मो.

अरुपी अजीवना दश भेद.

अरुपी अजीवना दश भेद छे. धर्मास्तिकायना त्रण, अधर्मास्तिकायना त्रण, आकाशास्तिकायना त्रण, अने काळनो एक, एम मळीने अरुपी अजीवना दश भेद थाय छे. धर्मास्तिकायना स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे. अधर्मास्तिकायना स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे, अने आकाशास्तिकायना पण स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे, अने काळनो भेद एकज छे, तेने काळ अथवा अद्धा कहे छे. एकंदर तेना दश भेद नीचे प्रमाणे थाय छे—

१ धर्मास्तिकाय स्कंध.	२ धर्मास्तिकाय देश.
३ धर्मास्तिकाय प्रदेश.	४ अधर्मास्तिकाय स्कंध.
५ अधर्मास्तिकाय देश.	६ अधर्मास्तिकाय प्रदेश.
७ आकाशास्तिकाय स्कंध.	८ आकाशास्तिकाय देश.
९ आकाशास्तिकाय प्रदेश.	१० काळ—अद्धा.

सारांश प्रश्नो.

१ अरुपी अजीवना केटला भेद थाय ? २ आकाशास्तिकायना त्रण भेद गणावो. ३ अधर्मास्तिकायना त्रण भेद क्या ? ते कहो. ४ अद्धा एटले शुं ? ५ एकंदर अरुपी अजीवना दश भेद कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

काळ, अद्धा.

पाठ ३४ मो.

रुपी अजीवना चार भेद.

आगळ कहेवामां आव्युं छे के, जे रुपवाळा अजीव होय, ते रुपी अजीव पुद्गलास्तिकाय कहेवाय छे. ते रुपी अजीवना चार भेद छे. १ पुद्गल स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश, अने ४ परमाणु, एवां तेमनां नाम छे. स्कंध, देश, अने प्रदेशनुं स्वरुप आगळ जाणवामां आव्युं छे. हवे पुद्गल अने परमाणुनुं स्वरुप जाणवुं जोइए. जेनो पूरण गलन एटले पूरावानो तथा गळवानो स्वभाव होय, ते पुद्गल कहेवाय छे. ए पुद्गलना स्कंध, देश, प्रदेश अने परमाणु एवा चार भेद थाय छे. स्कंधथी भिन्न थयेलानो जे निर्विभाज्य भाग एटले जेनो

भाग पडी शके नहि एवो भाग, ते परमाणु कहेवाय छे. ए परमाणु पुद्गळनो एक भेद पण थाय छे. पुद्गळास्तिकाय रुपी होवाथी तेमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अने शब्द रहेला छे, ते वळी सचित्त, अचित्त, अने मिश्र एमे त्रेवो शब्द, अंधकार, प्रकाश, चंद्रनी ज्योति, छाया, सूर्यनो तडको विगेरे गुणो तेनामां रहेला छे. ते चौद राजलोकमां व्यापक छे, अने संख्यात, असंख्यात अने अनंत प्रदेशी छे. धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ते बंनेमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रुप नथी, तेथी ते अरुपी कहेवाय छे. ते असंख्यात प्रदेशी अने चौद रज्जुप्रमाण लोकमां (चौद राजलोकमां) व्यापक छे. आकाशास्तिकाय पण लोकालोक व्यापक, अनंत प्रदेशी अने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रुपथी रहित छे, तेथी ते पण अरुपी कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ रुपी अजीवना केटला भेद छे? तेनां नाम आपो. २ पुद्गळ एटले शुं? तेनुं स्वरुप बतावो. ३ पुद्गळना केटला भेद छे? ते गणावो. ४ परमाणु एटले शुं? ते कहो. ५ पुद्गळास्तिकायरुपी शी रीते छे? ते विवेचन करी बतावो. ६ पुद्गळास्तिकायमां शुं शुं होय छे? ते कहो. ७ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्ति-

कायमां शो तफावत छे ? ते विवेचन करी समजावो.
८ चंद्रनी ज्योति अने सूर्यनो तडको विगेरे गुण कोनामां रहेला छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पुद्गळ, परमाणु, पूरण गलन, निर्विभाज्य भाग, सचित, अचित, मिश्र, चंद्रनी ज्योति, चौद रज्जुप्रमाण, व्यापक, संख्यात, असंख्यात, अनंत प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी, चौद राजलोक.

पाठ ३५ मो.

काळ.

काळ ए अरुपी अजीवनो दशमो भेद छे, ते सूर्यनी गति अने क्रियाना परिणाम उपरथी जाणी शकाय छे. अति सूक्ष्म काळने समय कहे छे, तेवा असंख्यात समयने एक आवलिका कहे छे, एटले निगोदना जीवोने एक श्वासोच्छ्वासमां सत्तर वार मरण करवुं अने अढारमा भवनी उत्पत्ति थाय, ते तेमनुं आयुष्य तेनो जे छप्पन आवलिका कहेवाय छे. एवी छप्पन आवलिनो निगोदना

जीवनो एक क्षुल्लक भव जे साडासत्तर क्षुल्लक भव जेटलो काळ ते श्वासोच्छ्वासरुप प्राण छे, तेवा सात प्राणनो एक स्तोक कहेवाय छे. तेवा सात स्तोकनो एक लव कहेवाय छे, अने तेवा सत्तोतेर लवनो एक मुहूर्त्त गणाय छे. ते मुहूर्त्तनुं प्रमाण बे घडीनुं छे; तेवा त्रीश मुहूर्त्तनो अहोरात्र[1] थाय छे. तेवा पंदर अहोरात्रनो एक पक्ष (पखवाडीयुं) थाय छे, बे पखवाडीयानो एक मास थाय छे, बार मासनुं एक वर्ष थाय छे, असंख्याता वर्षोथी एक पल्योपम थाय छे, दश कोडाकोडी पल्योपमनो एक सागरोपम थाय छे, दश कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी थाय छे, तेटलाज प्रमाणे एक अवसर्पिणी थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ काळ शी रीते जाणी शकाय ? २ समय कोने कहे छे ? ३ केटला समयनी आवलिका कहेवाय छे ? ४ निगोदना जीवोनुं आयुष्य केटली आवलिकानुं छे ? ५ श्वासोच्छ्वासरुप एवा केटला प्राणनो एक स्तोक कहेवाय छे ? ६ केटला स्तोकनो लव कहेवाय छे ? ७ मुहूर्त्तनुं प्रमाण केवी रीते छे ? ८ केटला मुहूर्त्तनो अहोरात्र थाय छे ? ९ पक्ष, मास अने वर्ष केवी रीते थाय ? ते कहो.

---

१ रात ने दिवस.

१० उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळना प्रमाणमां शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सूर्यनी गति, क्रियानुं परिणाम, अति सूक्ष्म, निगोद, क्षुल्लक भव, श्वासोच्छ्वासरुप प्राण, स्तोक, लव, अहोरात्र, पक्ष, कुवानुं दृष्टांत, पल्योपम.

पाठ ३६ मो.

छ द्रव्य.

जैन शासनमां छ द्रव्य गणाय छे. एक जीव अने अजीवनां पांच द्रव्य मळीने छ द्रव्य थाय छे. जीव द्रव्य विषे आगळ कहेवामां आव्युं छे, अने अजीवना चौद भेद पण जणाव्या छे. हवे अजीवना पांच द्रव्यनो विशेष बोध थवाने तेनुं विवेचन करवानी जरुर छे. धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने काळ, ए पांच अजीव द्रव्य कहेवाय छे. जेम माछलांने संचार करवानुं अपेक्षा कारण पाणी छे, एटले माछलुं पाणीने लइने संचार करी शके छे, तेम जीव तथा पुद्गलने गतिरुपे परिणमतां एटले जीव तथा पुद्गलने संचार

करवामां जे अपेक्षा कारण, ते पहेलुं धर्मास्तिकाय द्रव्य कहेवाय छे, अर्थात् धर्मास्तिकायने लइने जीव तथा पुद्गळनो संचार थइ शके छे.

बीजुं अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे, तेनुं स्वरुप वधी रीते धर्मास्तिकायने मळतुं छे, पण ए द्रव्य जीव तथा पुद्गळने स्थिरता राखवामां सहाय करे छे. जेम कोइ मुसाफर रस्ते चालतां थाकी जाय, त्यारे विश्राम लेवा कोइ झाड विगेरेनी छायामां जइ बेसे छे, अहीं स्थिति तो पोतेज करे छे, परंतु आश्रय विना स्थिति थइ शकती नथी, तेथी तेने वृक्षनी छाया ए अपेक्षा कारण छे. तेवी रीते जीव तथा पुद्गळ गति करतां स्थिति करवाने प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करे छे, तेने वृक्षनी छाया जेवुं स्थिति करवानुं जे अपेक्षा कारण, तेज अधर्मास्तिकाय द्रव्य कहेवाय छे.

त्रीजुं आकाशास्तिकाय द्रव्य छे. तेनुं बीजुं स्वरुप धर्मास्तिकायना जेवुंज छे. आ द्रव्य, जीव अने पुद्गळने रहेवामां अवकाश आपे छे, ते द्रव्य लोकालोक व्यापी छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकाय आ त्रणे एकबीजामां मळी गयेलां छे. ज्यां सुधी आ त्रण द्रव्यो छे, त्यां सुधी लोक छे, अने ज्यां केवळ आकाशास्तिकाय छे, अने बीजुं कांइ नथी, ते अलोक छे.

चोथुं पुद्गळास्तिकाय द्रव्य छे. आ पुद्गळनुं बीजुं नाम परमाणु पण कहेवाय छे. घडो, वस्त्र, विगेरे पदार्थो परमाणुओना समूहथी बनेला छे, अने तेथी तेओ तेनां कार्य छे. तेओने पण पुद्गळज कहे छे. एक परमाणुमां एक वर्ण, एक रस, एक गंध, अने बे स्पर्श रहेला छे. तेनुं बनेलुं कार्य ए तेनुं लिंग छे. परमाणुमां वळी एवी खुबी छे के, एक वर्णथी बीजो वर्ण, रसथी बीजो रस, गंधथी बीजो गंध, अने स्पर्शथी बीजो स्पर्श थइ जाय छे. परमाणु द्रव्य–वस्तुरुपे अनादि तथा अनंत छे, अने पर्यायरुपे आदि तथा अंत सहित छे. परमाणुओनां जे कार्य छे, तेओमां कोइ प्रवाहथी अनादि अनंत छे, अने कोइ आदि तथा अंत सहित छे. आ जगतमां जेटला जडरूप देखाय छे, ते बधां परमाणुनां कार्य छे. जे पुद्गळ द्रव्य समुच्चयरुपे एकठुं थाय, तो ते द्रव्यमां, काळो, लीलो, रातो, पीळो, अने धोळो–ए पांच वर्ण छे. तीखो, कडवो, कषायेलो, खाटो, अने मीठो–आ पांच रस छे. सुगंध, अने दुर्गंध आ बे गंध छे. खरखरो, सुंवाळो, हळवो, भारे, टाढो, उनो, चीकणो, अने लुखो–ए आठ स्पर्श छे. ते पुद्गळोमां एकबीजाना मेळापथी जातजातना वर्ण विगेरे थइ जाय छे, ते पुद्गळोमां अनंत शक्तिओ तथा अनंत स्वभाव छे. द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव–इत्यादि निमित्तोना मळवाथी ते पुद्गळोनां विचित्र पपरिणाम थाय छे.

पाचमुं काळ द्रव्य छे, तेनुं स्वरुप आगळ कहेवामां आव्युं छे.

सारांश प्रश्नो.

१ जैन शासनमां केटलां द्रव्य गणाय छे ? २ छ द्रव्य कयां ? ते गणावो. ३ पांच अजीव द्रव्यना नाम आपो. ४ धर्मास्तिकाय द्रव्यमां शेनो दाखलो छे ? ते कहो. ५ धर्मास्तिकाय द्रव्यनो शो स्वभाव छे ? ६ धर्मास्तिकायने लइ जीव तथा पुद्गळ शुं करी शके छे ? ७ अधर्मास्तिकायनुं स्वरुप शुं छे ? ८ अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्गळने केवी सहाय करे छे ? ९ अधर्मास्तिकायनो दाखलो आपी समजावो. १० आकाशास्तिकाय द्रव्य जीव तथा पुद्गळने शुं करे छे ? ११ ते द्रव्य केवुं छे ? तेनुं विशेष विवेचन करो. १२ आलोक क्यां सुधी छे, अने अलोकमां क्युं द्रव्य छे ? १३ पुद्गळास्तिकायनुं बीजुं नाम शुं छे ? १४ परमाणुओनां कार्य क्या पदार्थो कहेवाय छे ? १५ एक परमाणुमां वर्ण, रस, गंध, अने स्पर्श केटला छे ? ते कहो. १७ परमाणुमां बीजी शी खुबी छे ? ते जणावो. १८ परमाणु अनादि तथा अनंत क्यारे छे, अने आदि तथा अंत सहित क्यारे छे ? ते समजावो. १९ परमाणुओनां कार्य अनादि तथा अनंत क्यारे होय छे, अने आदि तथा

अंत सहित क्यारे होय छे ? २० पुद्‌गळ द्रव्यमां वर्ण, रस, गंध अने स्पर्श केटला केटला छे ? ते गणावो. २१ पुद्‌गळोमां शक्तिओ केटली छे, अने स्वभाव केटला छे ? २२ द्रव्य, क्षेत्र, काळ केटला छे, अने भाव विगेरे निमित्तो मळवाथी पुद्‌गळोमां शुं थाय छे ? २३ पांचमुं द्रव्य क्युं ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विवेचन, अपेक्षा कारण, संचार, स्थिरता, अवकाश, लोकालोक, लोक, अलोक, परमाणु, कार्य, द्रव्य, अनादि, अनंत, पर्याय, प्रवाह, समुच्चय, अनंत स्वभाव, निमित्त, विचित्र परिणाम.

पाठ ३७ मो.

३ पुण्य तत्व.

पुण्य तत्व ए त्रीजुं तत्व छे. जेनाथी पोते शुभ प्रकृतिवडे करेलां कर्म जीवोने सुख आपे छे, ते पुण्य कहेवाय छे. आ पुण्य उपार्जन करवानां नव कारण छे. १ पात्रने अन्ननुं दान आपवाथी, २ तरस्याने पाणी पावाथी, ३ नागाने ओढना वस्त्र आपवाथी, ४ घर विना-

नाने, ५ रहेवा स्थान आपवाथी, ६ सुवा वेसवाने आसन आपवाथी, ७ गुणी जनने देखी मनमां संतोष तथा हर्ष मानवाथी, ८ गुणी जननी वचनवडे प्रशंसा करवाथी, अने कायाथी सेवा करवाथी अने ९ गुणीजनने नमस्कार करवाथी, आ नव प्रकारनां कारणथी प्राणी पुण्य उपार्जन करे छे. अहीं पात्रने दान आपवामां वे प्रकार छे एक पात्रदान, अने वीजुं अनुकंपादान. जे पात्रने दान आपवामां आवे, ते पात्रदान कहेवाय छे. तेवुं दान पुण्य तथा मोक्ष वंनेनुं कारण थाय छे, अने कोइ पण दीन दुःखी प्राणी होय, तेने अनुकंपाथी आपे, ते अनुकंपादान कहेवाय छे. आ अनुकंपादान अवश्य एकला पुण्यवंधनुं हेतु थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पुण्य तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ पुण्य एटले शुं ? ३ पुण्य उपार्जन करवानां केटलां कारण छे ? ४ दानना केटला प्रकार छे ? ५ पात्रदान अने अनुकंपादान वंनेमां शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ प्रकृति, उपार्जन, गुणीजन, प्रशंसा, पात्र, अनुकंपा.

अंत सहित क्यारे होय छे ? २० पुदगळ द्रव्यमां वर्ण, रस, गंध अने स्पर्श केटला केटला छे ? ते गणावो. २१ पुदगळोमां शक्तिओ केटली छे, अने स्वभाव केटला छे ? २२ द्रव्य, क्षेत्र, काळ केटला छे, अने भाव विगेरे निमित्तो मळवाथी पुद्गळोमां शुं थाय छे ? २३ पांचमुं द्रव्य क्युं ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विवेचन, अपेक्षा कारण, संचार, स्थिरता, अवकाश, लोकालोक, लोक, अलोक, परमाणु, कार्य, द्रव्य, अनादि, अनंत, पर्याय, प्रवाह, समुच्चय, अनंत स्वभाव, निमित्त, विचित्र परिणाम.

पाठ ३७ मो.

३ पुण्य तत्व.

पुण्य तत्व ए त्रीजुं तत्व छे. जेनाथी पोते शुभ प्रकृतिवडे करेलां कर्म जीवोने सुख आपे छे, ते पुण्य कहेवाय छे. आ पुण्य उपार्जन करवानां नव कारण छे. १ पात्रने अन्ननुं दान आपवाथी, २ तर्ष्याने पाणी पावाथी, ३ नागाने ओढवा वस्त्र आपवाथी, ४ घर विना-

ज्ञाने, ५ रहेवा स्थान आपवाथी, ६ सुवा वेसवाने आसन आपवाथी, ७ गुणी जनने देखी मनमां संतोप तथा हर्ष मानवाथी, ८ गुणी जननी वचनवडे प्रशंसा करवाथी, अने कायाथी सेवा करवाथी अने ९ गुणीजनने नमस्कार करवाथी, आ नव प्रकारनां कारणथी प्राणी पुण्य उपार्जन करे छे. अहीं पात्रने दान आपवामां बे प्रकार छे. एक पात्रदान, अने वीजुं अनुकंपादान. जे पात्रने दान आपवामां आवे, ते पात्रदान कहेवाय छे. तेवुं दान पुण्य तथा मोक्ष बंनेनुं कारण थाय छे, अने कोइ पण दीन दुःखी प्राणी होय, तेने अनुकंपाथी आपे, ते अनुकंपादान कहेवाय छे. आ अनुकंपादान अवश्य एकला पुण्यवंधनुं हेतु थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पुण्य तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ पुण्य एटले शुं ? ३ पुण्य उपार्जन करवानां केटलां कारण छे ? ४ दानना केटला प्रकार छे ? ५ पात्रदान अने अनुकंपादान बंनेमां शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ प्रकृति, उपार्जन, गुणीजन, प्रशंसा, पात्र, अनुकंपा.

पाठ ३८ मो.

पुण्य बांधवा विषे कविता.

चोपाइ.

पुण्य बंधनी छे नव रीत,
एथी थाये पुण्यमां प्रीत. १

भुख्या जनने अन्ननां दान,
तरष्या जनने जळनां पान. २

रहेवाने आपे छे स्थान,
सुवा माटे शय्या दान. ३

उघाडाने वस्त्र अपाय,
मनमां सारा संकल्प थाय. ४

स्तुति करे शुभ वचने नित,
कायाथी सेवे धरी प्रीत. ५

नमन करे छे पूज्यने आप,
ए नव रीते पुण्यनी छाप. ६

पाठ ३९ मो.

पुण्य भोगववाना बेंतालीश[1] प्रकार—भाग १ लो.

उपरना पाठमां कहेली नव रीतीथी माणस पुण्य उपार्जन करे छे, पण ते पुण्यने केवी रीते भोगववां ? ते प्रकार जाणवा जोइए. ते पुण्य भोगववाना बेंतालीश प्रकार छे. जे पुण्यना उदयथी जीव शाता भोगवे, ते **शातावेदनीय** नामे पहेलो प्रकार छे. जेना उदयथी जीव क्षत्रि आदि उंचा कुळमां उत्पन्न थाय छे, ते **उच्च गोत्र** नामे बीजो प्रकार छे. जेना उदयथी जीव मनुष्य गतिमां उत्पन्न थाय, ते **मनुष्य गति** नामे त्रीजो प्रकार छे, जेम बळद वांको चालतो होय, तेने नाथ घालीने सिद्धो चलाववामां आवे, तेम जीव वक्रगतिए बीजी गतिमां जतो होय, तेने सीद्धो उपजवाने स्थाने जेथी पहोंचाडवामां आवे, ते **आनुपूर्वी** कहेवाय छे. मनुष्यनी गति अने मनुष्यनी आनुपूर्वीने **मनुष्यद्विक** कहे छे. ए **मनुष्यानुपूर्वी** नामे चोथो प्रकार छे. जेना उदयथी देवतानी गति प्राप्त थाय, ते **देवगति** नामे पांचमो प्रकार छे. ते पछी **देवानुपूर्वी** नामे छट्ठो प्रकार छे. आ देवगति अने देवानुपूर्वी ते बंनेने **सुरद्विक** कहे छे. जेना उदयथी पंचेद्रियपणुं प्राप्त थाय,

---

१ ए बेंतालीश प्रकर नाम कर्मनी प्रकृतिना भेद छे.

ते पंचेंद्रिय जाति नामे सातमो प्रकार छे. जेना उदयथी औदारिक शरीरने योग्य एवां पुद्गळोनुं ग्रहण करीने तथा तेने शरीररुपे परिणमावीने जीव पोताना प्रदेशनी साथे मेळवे, ते औदारिक नामकर्म नामे आठमो प्रकार छे. जेना उदयथी वैक्रिय शरीरने योग्य एवां पुदगळोनुं ग्रहण करी तथा तेने शरीरपणे परिणमामावीने जीव पोताना प्रदेशनी साथे मेळवे, ते वैक्रिय शरीर नामे नवमो प्रकार छे. आ वैक्रिय शरीरना औपपातिक अने लब्धि प्रत्ययिक एवा बे भेद छे. औपपातिक वैक्रिय शरीर देवताने तथा नारकीने होय छे, अने लब्धि प्रत्ययिक वैक्रिय शरीर तिर्यंच तथा लब्धिवंत मनुष्यने होय छे. जेना उदयथी प्राणी चौद पूर्वधारी मुनिराज तीर्थंकरनी ऋद्धि विगेरे जोवाने अर्थे एक हाथ प्रमाण देह धारण करे, ते आहारक शरीर नामे दशमो प्रकार छे. जेना उदयथी आहारनुं पचाववनार अने तेजोलेश्यानो हेतुरुप शरीर धारण करे, ते तेजस् शरीर नामे अगीयारमो प्रकार छे. कर्मनां परमाणु जे आत्माना प्रदेशनी साथे मळ्या छे, ते शरीरज कार्मण शरीर नामे बारमो प्रकार छे. जेना उदयथी औदारिक अंग उपांग प्राप्त थाय, ते औदारिक अंगोपांग नामे तेरमो प्रकार छे. शरीरना बे हाथ, बे खभा, एक पीठ, एक माथुं, एक उदर अने एक हृदय—ए आठ अंग कहेवाय छे, अने आंगळां विगेरे उपांग कहेवाय छे.

तेवीज रीते जेना उदयथी वैक्रिय अंगोपांग प्राप्त थाय, ते वैक्रिय अंगोपांग नामे चौदमो प्रकार छे. जेना उदयथी आहारक अंगोपांग प्राप्त थाय, ते आहारक अंगोपांग नामे पंदरमो प्रकार छे. बाकीना तैजस अने कार्मण शरीरने अंगोपांग नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ पुण्य भोगववाना केटला प्रकार छे ? २ शाता वेदनीय, उच्च गोत्र-ए बे प्रकार समजावो. ३ आनुपूर्वी एटले शुं ? ते दाखलाथी समजावो. ४ मनुष्यद्विक अने सुरद्विक कोनुं नाम ? ते कहो. ५ पंचेंद्रिय जातिनो प्रकार समजावो. ६ औदारिक विगेरे पांच शरीरना प्रकार समजावो. ७ वैक्रिय शरीरना केटला भेद थाय ? ८ औपपातिक वैक्रिय शरीर कोने होय छे ? ९ लब्धि प्रत्ययिक वैक्रिय शरीर कोने होय छे ? १० आहारक शरीरवाळो प्राणी शुं जोइ शके ? ११ तेजस् शरीरथी शुं थइ शके ? १२ कार्मण शरीरथी शुं थइ शके ? १३ अंग केटलां होय ? ते गणावो. १४ उपांग क्यां ते कहो. १५ औदारिक अंगोपांग, वैक्रिय अंगोपांग अने आहारक अंगोपांग-ए त्रणे प्रकार समजावो. १६ कया शरीरने अंगोपांग नथी, ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शाता, वक्र गति, आनुपूर्वी, मनुष्यद्विक, सुरद्विक, परिणमावी, प्रदेश, लब्धिवंत, चौद पूर्वधारी, तेजोलेश्या, कर्मनां परमाणु, अंग, उपांग, लब्धि, प्रत्ययिक, औपपातिक.

पाठ ४० मो.

पुण्य भोगववाना बेंताळीश प्रकार—भाग २ जो.

वज्र एटले खीली, रुषभ एटले पाटो अने नाराच एटले बे पासा मर्कट बंध, अर्थात् तेनापर पाटो अने ते उपर खीली; आवुं नाम वज्ररुषभनाराच नामे संघयण कहेवाय छे. शरीरमां हाडनो जे मजबूत संचय ते संघयण कहेवाय छे, अने तेने संस्कृतमां संहनन कहे छे. जेना उदयथी प्राणी पोताना शरीरमां आ वज्ररुषभनाराच नामनुं पहेलुं संहनन प्राप्त करे, एटले तेना शरीरनो बांधो तेवो मजबूत थाय, ते वज्ररुषभनाराच नामे सोळमो प्रकार छे. सम एटले सरखुं, चतुरस्र एटले चोरस एवुं संस्थान एटले आकार ते समचतुरस्र नामे पहेलुं संस्थान कहेवाय छे. अर्थात् पर्यंकासन (पलोंठी) करी बेसतां चारे बाजु सरखी आकृति थाय, अने पोताना आंगळ प्रमाणे एकसो ने आठ अंगुल प्रमाण शरीर थाय, तेवुं संस्थान. जेना उदयथी

प्राणी तेवा संस्थानने प्राप्त करे, ते समचतुरस्र संस्थान नामे सत्तरमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरनो रंग सारो एटले धोळो, रातो के पीळो थाय, ते शुभ वर्ण नामे अढारमो प्रकार छे. जेना उदयथी सुगंध थाय, ते शुभ गंध नामे ओगणीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां सारो रस प्राप्त थाय. ते शुभ रस नामे वीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां सारो स्पर्श प्राप्त थाय, ते शुभ स्पर्श नामे एकवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरनुं वजन लोढानी जेम भारे नहीं, तेमज आकडाना रूनी जेम हलकुं पण नहीं, एटले मध्यम रीतनुं वजन प्राप्त थाय, ते अगुरु लघु नाम कर्म नामे बावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणी गमे तेवा बळवानने पण जीतवाने समर्थ थाय, ते पराघात नाम कर्म नामे त्रेवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी सुखेथी श्वासोच्छ्वास लइ शकाय ते श्वासोच्छ्वास नाम कर्म नामे चोवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी चंद्रनां बिंबनी जेम शीतळता उत्पन्न करनार तेजोयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय, ते उद्योत नाम कर्म नामे छवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी वृषभ तथा हंसनी जेम सारी जातनी चालवानी शक्ति प्राप्त थाय, ते शुभखग गति नामे सत्यावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणी सुतारनी जेम पोताना अंगना सर्व अवयव योग्य स्थळे गोठववानी शक्ति धरावे, ते निर्माण नाम कर्म नामे अठ्यावीशमो प्रकार छे.

सारांश प्रश्नो.

१ वज्र, रुषभ अने नाराच ए शब्दोना जूदाजूदा अर्थ करी बतावो. २ संघयण एटले शुं? अने तेने संस्कृतमां शुं कहे छे? ३ सम, चतुरस्त्र अने संस्थान ए शब्दोना जूदाजूदा अर्थ करो. ४ पर्यंकासन एटले शुं? ५ सम चतुरस्त्र संस्थानवाळा शरीरनुं प्रमाण केटला आंगळनुं थाय? ६ शुभ वर्ण, शुभ गंध, शुभ रस अने शुभ स्पर्श, ए चार प्रकार विषे शुं समज्या? ते स्पष्ट रीते समजावो. ७ अगुरु लघु नाम कर्म एटले शुं? ८ जेना उदयथी प्राणी गमे तेवा बळवानने पण जीती शके, ते प्रकारनुं शुं नाम? ९ श्वासोच्छ्वास नाम कर्मथी शुं थाय? १० जेमां प्राणीने चंद्रनां बिंब जेवो शीतळ प्रकाश थाय छे, ते प्रकारनुं शुं नाम? ११ शुभखगति अने निर्माण नाम कर्मनो अर्थ समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वज्र, रुषभ, नाराच, संघयण, संहनन, मर्कट बंध, सम, चतुरस्त्र, संस्थान, पर्यंकासन, मध्यम रीत, श्वासोच्छ्वास, बिंब, तेजोयुक्त, वृषभ, हंस, अवयव.

પાઠ ૪૧ મો.

પુણ્ય ભોગવવાના બેંતાળીશ પ્રકાર—ભાગ ૩ જો.

જેના ઉદયથી જીવ ત્રસ વિગેરે દશ પ્રકૃતિને પ્રાપ્ત કરે, તે **ત્રસદશક નામ કર્મ** કહેવાય છે, તેમાં ત્રસ વિગેરે દશ પ્રકાર આવે છે. જેના ઉદયથી પ્રાણીને બેઇંદ્રિય વિગેરે શરીરની પ્રાપ્તિ થાય, તે **ત્રસ નામ કર્મ** નામે ઓગણત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી જીવને બાદર શરીરની પ્રાપ્તિ થાય, તે **બાદર નામ કર્મ** નામે ત્રીશમો પ્રકાર છે. જે શરીર દેખાવામાં આવે, તે બાદર કહેવાય છે. જેના ઉદયથી જીવ પોતપોતાની પર્યાપ્તિ પૂરી કરે, તે **પર્યાપ્તિ નામ કર્મ** નામે એકત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી જુદાંજુદાં શરીર પ્રાપ્ત થાય, પણ અનંતા જીવની વચ્ચે એક શરીર પામે નહિ, તે **પ્રત્યેક નામ કર્મ** નામે બત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી જીવ દાંત વિગેરે અવયવોની દ્રઢતા મેળવે, તે **સ્થિર નામ કર્મ** નામે તેત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી જીવને શરીરના સર્વ અવયવ સારા હોય, અથવા નાભિની ઉપરનું શરીર સારું હોય, તે **શુભ નામ કર્મ** નામે ચોત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી માણસ સર્વને પ્રિય થાય, તે **સૌભાગ્ય નામ કર્મ** નામે પાંત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી વાણીમાં કોયલના જેવી મધુરતા આવે, તે **સુસ્વર નામ કર્મ** નામે છત્રીશમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી માણસનાં વચન લો-

कर्मो माननीय थाय, ते आदेय नाम कर्म नामे साडत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी लोकमां यश–कीर्त्ति थाय, ते यशोनाम कर्म नामे आडत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी जीवने देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते सुरायुष्य रूप नामे ओगणचालीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते नरायुष्य रूप नामे चालीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी तिर्यंचना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते तिर्यंचायुष्य रूप नामे एकताळीशमो प्रकार छे, अने जेना उदयथी प्राणीने त्रिभुवनना पूज्यपणानी प्राप्ति थाय, ते तीर्थंकर नाम कर्म नामे बेंताळीशमो प्रकार छे.

सारांश प्रश्नो.

१ त्रसदशक नाम कर्म एटले शुं ? २ त्रस विगेरे दश कया ? ते गणावो. ३ बादर एटले केवुं शरीर ? ४ पर्याप्ति नाम कर्म अने प्रत्येक नाम कर्म विषे समजावो. ५ सौभाग्य नाम कर्म, सुस्वर नाम कर्म अने यशोनाम कर्म विषे समजावो. ६ जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, जेना उदयथी त्रिभुवनना पूज्यपणानी प्राप्ति थाय, अने जेना उदयथी माणस सर्वने प्रिय थाय, ते प्रकार कया ? तेमनां नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

दश प्रकृति, बादर, पर्याप्ति, स्थिरता, नाभि, प्रिय, मधुरता, माननीय, तिर्यंच, त्रिभुवन, पूज्य.

पाठ ४२ मो.

पाप तत्त्व.

जे अशुभ प्रकृतिरुप कर्म जीवोने दुःख आपे, ते पाप कहेवाय छे, अथवा जे आत्माना आनंद रसने पीवे एटले भस्म करे, ते पाप कहेवाय छे. ए पाप पुण्यथी विपरीत छे. ए पापथी नरक विगेरे नठारां फळ मळे छे, तेथी ते अशुभ कहेवाय छे. पुण्यनी जेम पापनो संबंध पण आत्मानी साथे रहेलो छे. सुख तथा दुःख जुदांजुदां अनुभववामां आवे छे; तेथी तेमनां कारणरुप पुण्य तथा पाप पण स्वतंत्रपणे अंगीकार करवा योग्य छे. एकलुं पुण्य के एकलुं पाप के एकलुं पुण्य पाप मिश्र मानवुं योग्य नथी.

आ पाप अढार प्रकारे बंधाय छे; अने व्याशी प्रकारे भोगवाय छे. १ प्राणातिपात—कोइनी हिंसा करवी, २ मृषावाद–खोटुं बोलवुं, ३ अदत्तादान–चोरी करवी, ४ मैथुन–ब्रह्मचर्य न राखवुं, ५ परिग्रह राखवो,

६ क्रोध करवो, ७ मान-अभिमान राखवुं, ८ माया-कपट करवुं, ९ लोभ करवो, १० राग करवो, ११ द्वेष राखवो, १२ कलह-कजीयो करवो, १३ अभ्याख्यान-आळ चडाववुं, १४ पैशुन्य-चुगली करवी, १५ रति अरति-प्रीति अप्रीति करवी, १६ परपरिवाद-बीजानी निंदा करवी, १७ माया मृषावाद-कपटथी खोटुं बोलवुं, अने १८ मिथ्यात्व शल्य एटले मिथ्यात्वरुप शल्य राखवुं, ए अढार प्रकारे पाप बंधाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पाप एटले शुं ? ते समजावो. २ पाप कोने कहेवाय ? ३ पापथी शुं फळ थाय ? ४ पापनो आत्मानी साथे कोनी माफक संबंध छे ? ५ पुण्य तथा पाप कोना कारण छे ? ६ पाप केटले प्रकारे बंधाय छे ? अने केटले प्रकारे भोगवाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अशुभ प्रकृतिरुप, आनंद रस, पुण्य पाप मिश्र, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, माया, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य.

पाठ ४३ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग १ लो.

पापने भोगववाना ब्याशी[1] प्रकार छे. दरेक प्राणीने उपर कहेला अढार प्रकारे बांधेलुं पाप भोगववुं पडे छे. पहेलां ज्ञानावरणीयना पांच प्रकार कहे छे. पांच प्रकारना ज्ञानने जे आच्छादन करे, ते ज्ञानावरणीय पाप कर्म कहेवाय छे. जेना उदयथी पांच इंद्रिय था मननी मारफत नियत (निश्चयवाळी) वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, एवा मतिज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते मतिज्ञानावरणीय नामे पहेलो प्रकार छे. जेना उदयथी शास्त्रने अनुसारे ज्ञान थाय छे, एवा श्रुतज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते श्रुतज्ञानावरणीय नामे बीजो प्रकार छे. जेना उदयथी इंद्रिय विगेरेनी अपेक्षा विना आत्मद्रव्यने—साक्षात्रुपी द्रव्यने जाणवानुं ज्ञान थाय छे, एवा अवधि ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते अवधि ज्ञानावरणीय नामे त्रीजो प्रकार छे. जेना उदयथी संज्ञि पंचेंद्रियना मनोगत भावने जाणवानुं ज्ञान थाय छे, एवा मनःपर्यव ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते मनःपर्यव ज्ञानावरणीय नामे चोथो प्रकार छे. जेना उदयथी उपर कहेला चार ज्ञान रहित एकलुं निरावरण

---

१ आ ब्याशी प्रकार कर्मनी प्रकृतिना भेद जाणवा.

ज्ञान थाय छे, एवा केवळ ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते **केवळ ज्ञानावरणीय** नामे पांचमो प्रकार छे.

जे आडुं आवे, ते अंतराय कर्म कहेवाय छे, तेना पण पांच प्रकार छे. पोताना घरमां देवा योग्य वस्तु छतां, तथा दाननुं फळ जाणतां छतां जेना उदयथी कोइने आपी शकाय नहीं, ते **दानांतराय** नामे छट्ठो प्रकार छे. सारो दातार होय, अने तेना घरमां आपवानुं होय, अने मागनार डाह्यो होय, ते छतां पण जेना उदयथी मागेली वस्तु मळे नहीं, ते **लाभांतराय** नामे सातमो प्रकार छे.

पोते जुवान होय, सारुं रुप होय, अने भोग करवा योग्य वस्तुनी प्राप्ति थइ होय, ते छतां पण जेना उदयथी ते भोगवी शकाय नहीं, ते **भोगांतराय**, अने **उपभोगांतराय** नामे आठमो अने नवमो प्रकार छे. पोते जुवान, निरोगी, अने बळवान् छतां पण जेना उदयथी पोतानी शक्ति फोरवी शकाय नहीं, ते **वीर्यांतराय** नामे दशमो प्रकार छे.

दर्शनावरणीय कर्मना नव प्रकार छे. तेमां चार प्रकार दर्शनना, अने पांच प्रकार निद्राना छे. जे सामान्य उपयोग, ते दर्शन कहेवाय छे, जेथी आंखे करी रुपनुं सामान्यपणे ग्रहण थाय छे, एवा चक्षुदर्शननुं जेमां आच्छादन थाय, ते **चक्षुदर्शनावरणीय** नामे अगीया-

रमो प्रकार छे. चक्षु विना बीजी चार इंद्रियो तथा मने करी पोतपोताना विषयनुं सामान्यपणे जेनाथी ग्रहण थाय छे, तेवा अचक्षुर्दर्शननुं जेना उदययी आच्छादन थाय, ते अचक्षुर्दर्शनावरणीय नामे बारमो प्रकार छे. जेमां सामान्य रीते रुपी द्रव्यनुं मर्यादाथी ग्रहण थाय छे, एवा अवधि दर्शननुं जेना उदयथी आच्छादन थाय, ते अवधि दर्शनावरणीय नामे तेरमो प्रकार छे. जेमां सामान्य रीते वधी वस्तुओ देखी शकाय छे, एवा केवळ दर्शननुं जेना उदयथी आच्छादन थाय, ते केवळ दर्शनावरणीय नामे चौदमो प्रकार छे. हवे पांच प्रकार निद्राना कहे छे. जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी सुखे जाग्रत अवस्थानी प्राप्ति थाय, ते निद्रारुप नामे पंदरमो प्रकार छे. जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी दुखःरुप जाग्रत अवस्थानी प्राप्ति थाय, ते निद्रा निद्रारुप नामे सोळमो प्रकार छे. जेना उदयथी बेसतां तथा उठतां निद्रा आव्या करे, ते प्रचलारुप नामे सत्तरमो प्रकार छे. जेना उदयथी हरतां फरतां पण निद्रा आवे, ते प्रचला प्रचलारुप नामे अढारमो प्रकार छे. जेना उदयथी दिवसे चिंतवेलुं काम रात्रे निद्रा वखते जाग्रतनी पेठे थाय, ते थीणद्धीरुप नामे ओगणी-शमो प्रकार छे. आ थीणद्धीरुप निद्राने संस्कृतमां स्त्याननर्द्धि कहे छे. ए निद्राना समये प्राणी वासुदेवना

अर्धा वळवाळो थाय छे, अने ते जीव नरकगामी होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पाप भोगववाना केटला प्रकार छे ? २ ते केवे प्रकारे बांधेलुं पाप भोगववुं पडे छे ? ३ ज्ञानावरणीय कर्म एटले शुं ? ४ मतिज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञानावरणीय, अने मनःपर्यवज्ञानावरणीयना अर्थ समजावो. ५ शास्त्रने अनुसारे जे ज्ञान थाय छे, तेनुं शुं नाम ? ६ एकलुं निरावरण ज्ञान शेमां थाय छे ? ते कहो. ७ अंतरायनो अर्थ शुं ? ८ अंतराय केटला प्रकारना छे ? ९ दानांतराय, उपभोगांतराय, अने वीर्यांतराय विषे समजावो. १० जेना उदयथी मागेली वस्तु मळे नहीं, ते केवो अंतराय ? ११ जुवानवय, रुप, अने भोग्य वस्तु मळी होय, ते छतां भोगवी शकाय नहीं, ते केवो अंतराय कहेवाय ? १२ दर्शनावरणीय कर्मना केटला प्रकार छे ? १३ निद्राना प्रकार केटला छे ? तेनां नाम आपो. १४ चक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधि दर्शनावरणीय, अने अचक्षुर्दर्शनावरणीय विषे समजावो. १५ जेमां सामान्य रीते बधी वस्तुओ देखी शकाय, ते क्युं दर्शन कहेवाय छे ? १६ दर्शन एटले शुं ? तेनो अर्थ समजावो. १७ निद्रारुप, प्रचलारुप, अने निद्रा निद्रारुप विषे समजावो. १८ दिवसे

चिंतवेलुं काम रात्रे निद्रा वखते जाग्रतनी पेठे थाय, तेवी निद्रानुं शुं नाम छे ? १९ थीणद्धी निद्राने संस्कृतमां शुं कहे छे ? २० थीणद्धी निद्रावाळा माणसमां केटलुं बळ आवे छे ? २१ केवी निद्रावाळो नरकगामी होय छे ?



शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

आच्छादन, नियत, अनुसारे, अपेक्षा, साक्षात्, रुपीद्रव्य, आत्मद्रव्य, निरावरण, अंतराय, फोरवी, सामान्य, उपयोग, चक्षु, मर्यादार्थी, निद्रावस्था, जाग्रत अवस्था, वासुदेव, नरकगामी.



पाठ ४४ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग २ जो.

जेना उदयथी प्राणी स्वरुपवान् तथा धनवान् छतां नीच कुळने विषे उत्पन्न थाय, ते नीच गोत्ररुप नामे वीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणीने दुःखनोज अनुभव थाय, ते अशाता वेदनीय नामे एकवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी वीतरागनां वचनथी विपरीत सद्दहणा थाय, ते मिथ्यात्व मोहनीय नामे बावीशमो प्रकार छे. सद्दहणाने संस्कृतमां श्रद्धा कहे छे.

हवे स्थावर दशकना दश प्रकार कहेवामां आवे छे. जे ताडाढ, ताप विगेरेथी पीडाय, तोपण त्यांथी खसी शके नहीं, ते स्थावर कहेवाय छे. जेना उदयथी एवुं स्थावरपणुं प्राप्त थाय, ते **स्थावर नाम** नामे त्रेवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी दृष्टिए न देखाय, एवा सर्व लोकमां व्यापी रहेला सूक्ष्मपणानी प्राप्ति थाय, ते **सूक्ष्म नाम** नामे चोवीशमो प्रकार छे. आ सूक्ष्म ते पृथ्वी विगेरे पांच सूक्ष्म समजवा. जेना उदयथी पोताने योग्य एवी पर्याप्ति पूरी कर्या विना मरण पामे, ते **अपर्याप्त नाम कर्म** नामे पचीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी अनंता जीव वच्चे एक औदारिक शरीरनी प्राप्ति थाय, एवी निगोद अवस्था मळे, ते **साधारण नाम कर्म** नामे छवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां दांत विगेरे अवयवो स्थिर रहे नहीं, ते **अस्थिर नाम कर्म** नामे सत्यावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय. एटले पग विगेरेना स्पर्शथी बीजाने रोष थाय, ते **अशुभ नाम कर्म** नामे अठ्यावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी माणस वधाने अळखामणो लागे, ते **दौर्भाग्य नाम कर्म** नामे ओगणत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी कानने अप्रिय लागे, एवो स्वर नीकळे, ते **दुःस्वर नाम कर्म** नामे त्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी लोकोने विषे तेनुं बोलवुं कोइ मान्य करे नहीं, ते **अनादेय नाम कर्म** एवा नामे एकत्रीशमो प्रकार

छे. जेना उदयथी लोकमां अपकीर्त्ति थाय, कोइ यश बोले नहीं, ते अयश नाम कर्म नामे बत्रीशमो प्रकार छे. आ स्थावर दशक कहेवाय छे. पुण्य तत्वना त्रस दशकथी आ तद्दन विपरीत छे.

सारांश प्रश्नो.

१ नीच गोत्र अने मिथ्यात्व मोहनीय एटले शुं ? ते समजावो. २ जेना उदयथी प्राणीने दुःखनोज अनुभव थाय, ते शुं कहेवाय ? ३ सद्दहणा एटले शुं ? अने तेने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ४ स्थावर दशक कया, ते एकंदर नाम साथे गणावो. ५ स्थावर एटले शुं ? ६ स्थावर नाम, अपर्याप्त नाम, अस्थिर नाम, दौर्भाग्य नाम, अने अनादेय नाम, ए विषे समजूती आपो. ७ जेना उदयथी दृष्टिए न देखाय, एवा सूक्ष्मपणानी प्राप्ति थाय, ते कयो प्रकार ? ८ जेना उदयथी निगोद अवस्था प्राप्त थाय, ते कयो प्रकार ? ९ जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय, ते कयो प्रकार ? १० जेना उदयथी कंठनो स्वर अप्रिय लागे, ते कयो प्रकार ? ११ जेना उदयथी लोकमां अपकीर्त्ति थाय, ते कयो प्रकार ? १२ पुण्य तत्वना त्रसदशक अने आ स्थावर दशकनी वच्चे शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्वरुपवान्, धनवान्, अनुभव, वीतराग, सद्दहणा, श्रद्धा, पर्याप्ति, औदारिक, निगोद अवस्था, रोप, मान्य, अपकीर्त्ति, विपरीत.

पाठ ४५ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग ३ जो.

(नरकत्रिक अने पचवीश कषाय.)

नरकनुं आयुष्य, नरकनी गति अने नरकनी अनुपूर्वी ए त्रण नरकत्रिक कहेवाय छे. जेना उदयथी ए त्रणे प्राप्त थाय, ते नरकत्रिक नामे तेत्रीश, चोत्रीश अने पांत्रीशमो प्रकार छे. सामान्यथी सोळ कषाय अने नव नोकषाय एम मळीने पचवीश कषाय कहेवाय छे. अनंतानुबंधीना चार भेद, अप्रत्याख्यानीयना चार भेद, प्रत्याख्यानीयना चार भेद, अने संज्वलना चार भेद, एम मळीने सोळ कषाय कहेवाय छे, अने बाकीना नव नोकषाय एम बधा मळीने पचवीश कषाय कहेवाय छे. जेना उदयथी अनंत संसार बंधाय, एवा क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चार जावज्जीव सुधी कायम रहे छे, तेओ सम्यक्त्वने आववा देता नथी, अने छेवटे जीवने नरकमां पहोंचाडे छे. आ चार अनंतानुबंधीमां क्रोध पर्वतनी

लींटी जेवो छे, मान पाषाणना थांभला जेवो छे, माया वांसना मूळ जेवी छे, अने लोभ कीर्मजना रंग जेवो छे; आ चार अनंतानुवंधीना आ प्रमाणे चार प्रकार थाय छे. अनंतानुवंधी क्रोध ए छत्रीशमो प्रकार छे, अनंतानुवंधी मान साडत्रीशमो प्रकार छे, अनंतानुवंधी माया आडत्रीशमो प्रकार छे, अने अनंतानुवंधी लोभ ओगणचाळीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी जीव थोडुं पण प्रत्याख्यान पामे नहीं, ए अप्रत्याख्यानीय कषाय कहेवाय छे. अप्रत्याखानीय एवा क्रोध, मान, माया, अने लोभ एक वर्ष सुधी कायम रहे छे, तेओ देशविरतिपणाने आववा देता नथी, अने छेवटे तिर्यंचनी गतिने आपे छे. ते क्रोध सुकाएला तळावनी रेखा जेवो छे, मान हाडकांना थांभला जेवो छे, माया मेंढाना शींगडा जेवी छे, अने लोभ नगरनी खाळना कादव जेवो छे. आ चार अप्रत्याख्यानीय कषायना चार प्रकार थाय छे. अप्रत्याख्यानीय क्रोध चाळीशमो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय मान एकतालीशमो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय माया बेंतालीशमो प्रकार छे, अने अप्रत्याख्यानीय लोभ तेंतालीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी सर्व विरतिरुप प्रत्याख्याननुं आच्छादन थइ जाय, ते प्रत्याख्यानीय कषाय कहेवाय छे. प्रत्याख्यानीय एवा क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार

मास सुधी टके छे, सर्व विरतिरुप चारित्रनो तेओ नाश करे छे, अने छेवटे मनुष्य गति अपावे छे. तेओमां क्रोध रेतीनी लींटी जेवो छे, मान काष्टना थांभला जेवो छे, माया बळदना मूत्रनी रेखा जेवी छे, अने लोभ गाडानी मळीना रंग जेवो छे. आ चार प्रत्याख्यानीय कषायना चार भेद पडे छे, तेमां प्रत्याख्यानीय क्रोध ए चुमालीशमो प्रकार छे. प्रत्याख्यानीय मान ए पीस्तालीशमो प्रकार छे, प्रत्याख्यानीय माया ए छेंतालीशमो प्रकार छे, अने प्रत्याख्यानीय लोभ ए सुडतालीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी चारित्र धारण करनारने पण थोडुंक तपावे, ते संज्वलन कषाय कहेवाय छे. संज्वलन एवा क्रोध, मान, माया, अने लोभ–ए चार भेद छे. तेओ एक पखवाडीआ सुधी रहे छे, यथाख्यात चारित्रने आवरण करे छे, अने देवतानी गतिने आपे छे. ए क्रोध पाणीनी रेखा जेवो छे, मान नेतरना थांभला जेवो छे, माया वांसनी छाल जेवी छे, अने लोभ हळदरना रंग जेवो छे. तेओमां संज्वलन क्रोध ए अडतालीशमो प्रकार छे, संज्वलन मान ए ओगणपचाशमो प्रकार छे, संज्वलन माया ए पचाशमो प्रकार छे, अने संज्वलन लोभ ए एकावनमो प्रकार छे. आ प्रमाणे सोळ कषायना सोळ प्रकार थाय छे.

जे कषायने सहचारी एटले कषायनां कारण होय,

ते नोकषाय कहेवाय छे. तेना नव प्रकार थाय छे. जेना उदयथी हास्य, रति, अरति, शोक, भय, अने दुगंछा ए छ वानां उत्पन्न थाय, ते हास्य षट्क कहेवाय छे. हास्य कोइ निमित्ते अने निमित्त विना एम बे प्रकारे छे. आ हास्य विगेरे छनां नाम उपरथी छ प्रकार थाय छे, एटले बावन, त्रेपन, चोपन, पंचावन, छप्पन, अने सत्तावन एटला प्रकार थाय छे.

जेना उदयथी स्त्री भोगववानी इच्छा थाय, ते पुरुष वेद कहेवाय छे. आ वेद घासना अग्नि जेवो छे, ते पुरुषवेद नामे अठ्ठावनमो प्रकार छे. जेना उदयथी पुरुष भोगववानी इच्छा थाय, ते स्त्रीवेद कहेवाय छे. आ वेदने बकरीनी लींडीओना अग्निनी उपमा अपाय छे, ते ओगणसाठमो प्रकार छे. जेना उदयथी स्त्री अने पुरुष बंने भोगववानी इच्छा थाय, ते नपुंसकवेद कहेवाय छे. ते शहेर सळगी उठयुं होय, ते अग्निना जेवो छे, ते साठमो प्रकार छे. आ प्रमाणे नोकषायना नव भेद कहेवामां आव्या.

सारांश प्रश्नो.

१ 'नरकत्रिक' एटले शुं ? २ बधा मळीने कषाय केटला छे ? ३ नोकषाय केटला होय ? ४ नोकषाय एटले शुं ? ५ नोकषाय शिवायना कषाय केटला छे ? ६ मुख्य सोळ कषाय कया ? ते गणावो. ७ अ-

नंतानुबंधी कषायथी शुं थाय ? ८ अनंतानुबंधी कषाय क्यां सुधी रहे ? ९ तेओथी सम्यक्त्वने शुं थाय ? १० अनंतानुबंधी चारे कषायो कोना जेवा छे ? ते सजावो. ११ अनंतानुबंधी चारे कषायो केटलामा प्रकारो छे ? १२ अप्रत्याख्यानीय कषाय एटले शुं ? १३ अप्रत्याख्यानीय कषाय क्यां सुधी रहे छे ? १४ तेओ होय, तो शी नुकशानी थाय, अने केवी गतिमां लइ जाय ? १५ अप्रत्याख्यानीय कषाय कोना जेवा छे, ते दरेकना जुदा जुदा दाखला आपो. १६ अप्रत्याख्यानीय चारे कषायो कइ संख्याना प्रकारो छे ? १७ प्रत्याख्यानीय कषाय एटले शुं ? १८ प्रत्याख्यानीय कषाय क्यां सुधी टके छे ? १९ प्रत्याख्यानीय कषाय केवां चारित्रनो नाश करे छे, अने केवी गति अपावे छे ? २० प्रत्याख्यानीय कषाय कोना जेवा छे ? ते दाखला आपी समजावो. २१ ते केटली संख्याना प्रकारो छे ? २२ संज्वलन कषाय एटले शुं ? २३ ते कषाय क्यां सुधी रहे छे ? २४ तेओ केवा चारित्रने आवरण करे छे, अने केवी गति आपे छे ? २५ संज्वलन कषायना बधा दाखला आपो. २६ नोकषाय एटले शुं ? २७ हास्य षट्क एटले शुं ? ते छ क्या ? ते गणावो. २८ हास्यना केटला प्रकार छे ? २९ वेद केटला ? ते गणावो, अने तेमनां लक्षणो कहो. ३० पुरुषवेद, स्त्रीवेद, अने नपुंसकवेदने केवा केवा अग्निनी उपमा आपी छे ? ते जणावो.

શિક્ષકે નીચેના શબ્દોની સમજૂતી આપવી.

નરકત્રિક, નોકષાય, અનંતાનુબંધી, કિર્મીજ, દેશ વિરતિ સર્વ વિરતિ, અપ્રત્યાખ્યાનીય, પ્રત્યાખ્યાનીય, સંજ્વલન, યથાખ્યાત ચારિત્ર, સહચારી, હાસ્ય ષટ્ક, નિમિત્ત.

પાઠ ૪૬ મો.

પાપ ભોગવવાના પ્રકાર—ભાગ ૪ થો.

જેના ઉદયથી તિર્યંચની ગતિ પ્રાપ્ત થાય, તે તિર્યંચ ગતિ નામે એકસઠમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી તિર્યંચની આનુપૂર્વી પ્રાપ્ત થાય, તે તિર્યંચાનુપૂર્વી નામે બાસઠમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી પૃથ્વીકાય વિગેરે પાંચ સ્થાવર જાતિના શરીરની પ્રાપ્તિ થાય, તે એકેંદ્રિય જાતિ નામે ત્રેસઠમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી બેઇંદ્રી જીવોની જાતિનું શરીર પ્રાપ્ત થાય, તે બેઇંદ્રિય જાતિ નામે ચોસઠમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી જું, માકડ, વિગેરે તેરેંદ્રિય જીવની જાતિનું શરીર પ્રાપ્ત થાય, તે તેરેંદ્રિય જાતિ નામે પાંસઠમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી વીંછી આદિક જીવોની જાતિના શરીરની પ્રાપ્તિ થાય, તે ચઉરેંદ્રિય જાતિ નામે છાસઠમો પ્રકાર છે. જેના ઉદયથી ઉંટ તથા ગધેડાના જેવી નઠારી ગતિ મળે, તે અશુભ વિહાયો ગતિ નામે

सडसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी पोतानां जीभ, दांत विगेरे अवयवोमां हरस, रसोळी प्रमुख अवयवोथी पोतेज हणाय, ते **उपघात नाम** नामे अडसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी अप्रशस्त वर्ण चतुष्क एटले काळो, नीलो, अशुभ वर्ण, अशुभ गंध, तीखो, कडवो, अशुभ रस अने भारे, बरसट, शीत, लुखो अशुभ स्पर्श, ए चार प्राप्त थाय, ते ओगणोतेर, सीतेर, एकोतेर अने बोंतेर, एम चार प्रकार थाय छे. जेना उदयथी अप्रथम संघयण एटले पहेली संघयण विना पांच संघयण प्राप्त थाय, ते पांच प्रकार थाय छे. जेना बे पासाए मर्कटबंध तथा उपर पाटो होय, ते **रुषभनाराच संघयण** नामे त्रोंतेरमो प्रकार छे. जेने बे पासे केवळ मर्कटबंध होय, ते **नाराच संघयण** नामे चुंमोतेरमो प्रकार छे. जेने एक पासे केवळ मर्कटबंध होय, ते **अर्धनाराच संघयण** नामे पंचोतेरमो प्रकार छे. ज्यां मांहोमांहे हाडकांने एक खीलीनो बंध होय, ते **कीलिका संघयण** नामे छोंतेरमो प्रकार छे. जेमां खीली विना केवळ मांहोमांहे अडकी अमस्तां रह्यां होय, ते **छेवट्ठुं संघयण** नामे सत्योतेरमो प्रकार छे. जेना उदयथी पहेला शिवाय बीजा पांच संस्थाननी प्राप्ति थाय, ते **अप्रथम संस्थान** कहेवाय छे. जेमां वड वृक्षनी माफक नाभिनी उपर सारां लक्षण होय, अने नाभिनी नीचे सारां लक्षणो न होय, ते **न्यग्रोध परिमंडळ संस्थान** नामे अठ्योतेरमो प्रकार छे. ज्यां नाभि नीचेनुं अंग

सारुं अने नाभि उपरनुं अंग नठारुं होय, ते **सादि संस्थान** नामे ओगणाएशीमो प्रकार छे. ज्यां पेट विगेरे सारां लक्षणवाळां होय, अने हाथ, पग, माथुं अने केड विगेरे प्रमाण वगरनां कुघाटां होय, ते **वामन संस्थान** नामे एंशीमो प्रकार छे. जेमां हाथ, पग, माथुं, केड विगेरे प्रमाणवाळां अने पेट विगेरे प्रमाण रहित होय, ते **कुब्ज संस्थान** नामे एकाशीमो प्रकार छे. जेमां वधा अवयव अशुभ होय, ते **हुंडक संस्थान** नामे ब्याशीमो प्रकार छे. आ प्रमाणे पाप तत्वना ब्याशी प्रकार थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ तिर्यंच गति अने तिर्यंचानुपूर्वी एटले शुं ? २ एकेंद्रिय विगेरे केटली जातिओ छे ? ते समजावो. ३ उंट तथा गधेडाना जेवी नठारी गति मळे, ते प्रकारनुं नाम शुं ? ४ शरीर अवयवोमां हरस, रसोळी विगेरे अशुभ अवयवो थाय, ते कयो प्रकार ? ५ अप्रशस्त वर्ण चतुष्क एटले शुं ? ते वधा प्रकार विषे समजूती आपो. ६ अप्रथम संघयण एटले शुं ? ७ जेना वे पासाए मर्कटबंध तथा उपर पाटो होय, ते केवी संघयण ? तेनुं नाम आपो. ८ नाराच अने अर्धनाराच संघयणमां शो तफावत छे ? ९ छेवटुं संघयण केवी रीते होय ? ते कहो. १० ज्यां मांहोमांहे हाडकांने एक खीलीनो बंध होय, ते संघयणनुं

नाम शुं ? ११ अप्रथम संस्थान एटले शुं ? १२ नाभिनी नीचे नठारां लक्षणो होय, अने नाभिनी उपर सारां लक्षणो होय, ते केवुं संस्थान ? १३ जेमां बधा अवयव अशुभ होय, ते कयुं संस्थान ? १४ सादि संस्थान, वामन संस्थान अने कुब्ज संस्थाननां लक्षणो आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अप्रशस्त वर्ण चतुष्क, संघयण, मर्कटबंध, कीलिका न्यग्रोध परिमंडळ, वामन, कुब्ज, हुंडक.

पाठ ४७ मो.

पाप तत्व विषे कविता.

मनहर.

हिंसा करे जीवतणी मृषावाद बोले वळी,
चोरी करे शीलतणो भंग करे आपथी;
परिग्रहतणो करे संग्रह लोलुप बनी,
हृदयमां धारे नित्य क्रोधने अमापथी;
मान राखे मनमांहि मायाथी कपट करे,
लोभतणे वश रही अति ललचाय छे;
राग अने द्वेष धरी पक्षपात घणो करे,
कलहथी कचवाट करतो दुभाय छे. १

वीजापर आळ नाखी मनमांही मकलाय,
चाडी करी चित्तमांहे अति हरखाय छे;
रति अरति धरीने खोटां काम करे घणां,
परतणी निंदा करी पेटमां धराय छे;
माया मृषावाद करी अनीतिने आचरतो,
मिथ्यात्वनुं शल्य धरी धर्मथी धराय छे;
अढार प्रकार ए छे पापकेरा बंधतणा,
एथी अंध बनी जीव पापथी भराय छे. २

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

संग्रह, लोलुप, अमाप, पक्षपात, कलह, शल्य, अंध.

पाठ ४८ मो.

आश्रव तत्व.

जेनाथी जीवने विषे कर्म आवे, ते आश्रव कहेवाय छे. जेम तळावमां पाणी आवे, तेम जीवरुप तळावमां जेनाथी कर्मरुप पाणी आवे, ते आश्रव कहेवाय छे. आ आश्रव पुण्य तथा पापना बंधनो हेतु होवाथी वे प्रकारे छे. तेओना अधिक अने न्यूनपणाथी

घणा भेद थइ शके छे. शुभ अशुभ एवां मन, वचन, अने कायाना व्यापाररुप आश्रवनी सिद्धि पोताना आत्मामां स्वसंवेदन एटले स्वानुभव विगेरेथी प्रत्यक्ष छे, अने बीजाओमां मात्र वचन तथा कायाना व्यापारनी सिद्धि प्रत्यक्षथी छे, अने बाकीनाओनी सिद्धि तेना कार्यथी उत्पन्न थता अनुमानथी तथा आगमथी जणाय तेवी छे.

जेम तळावमां गरनाळाथी पाणीनी आवक आवे छे, तेम जीवरुप तळावमां कर्मरुप पाणी इंद्रियरुप पांच गरनाळामांथी आवे छे, एथी करीने मूळ भेदनी अपेक्षाए प्रथम पांच इंद्रियोज आश्रवनां पांच कारण थाय छे. वळी मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अने योग ए पांच पुनर्बंधक जीवना ज्ञानावरणीय विगेरे कर्मनो बंध थवामां हेतुरुप छे, तेओने जैन मतमां आश्रव कहे छे. ते आश्रवना पांच इंद्रिय, चार कषाय, पांच अव्रत, पचवीश क्रिया, अने त्रण योग–एम बेंतालीश उत्तर भेद थाय छे. असत् देव, असत् गुरु, अने असत् धर्म–तेने विषे सत् देव, सत् गुरु, अने सत् धर्मनी जे रुची, ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. हिंसा विगेरेथी जे न निवर्त्तवुं, तेने अविरति कहे छे. मदिरा विगेरेनी जेम असर, ते प्रमाद कहेवाय छे. क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए कषाय कहेवाय छे, अने मन, वचन, तथा कायानो व्यापार तेने योग कहे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ आश्रव एटले शुं ? २ आश्रवने दाखलो आपी समजावो. ३ आश्रवना मूळ केटला प्रकार छे ? ४ आश्रवनी सिद्धि तेना भेदमां केवी रीते थाय छे ? ५ मूळ भेदनी अपेक्षाए आश्रवनां कारण केटलां छे, अने ते क्यां ? ६ ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थवामां शो हेतु छे? ७ ते हेतुने शुं कहे छे ? ८ आश्रवना बेंतालीश उत्तर भेद केवी रीते थाय ? ते गणावो. ९ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अने योग—ए पांचनां लक्षणो शुं ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

व्यापार, स्वसंवेदन, स्वानुभव, प्रत्यक्ष, अनुमान, मूळ भेद, अपेक्षाए, ज्ञानावरणीय, उत्तर भेद.

पाठ ४९ मो.

पांच इंद्रिय अने चार कषाय.

आ शरीरमां पांच इंद्रियो होय छे. इंद्रियोना जुदा जुदा विषयो होय छे. जेनाथी स्पर्शनुं ज्ञान थाय, ते स्पर्शेंद्रिय कहेवाय छे, जेनाथी खाटो, खारो, मीठो

विगेरे रसनो स्वाद् लेवाय, तेने रसनेंद्रिय कहे छे, जेनाथी सारी अने नठारी गंध लइ शकाय, तेने घ्राणेंद्रिय कहे छे, जेनाथी दरेक दृश्य वस्तु देखी शकाय, तेने चक्षुइंद्रिय कहे छे, अने जेनाथी शब्द् संभळाय, तेने श्रोत्रेंद्रिय कहे छे. आ पांच इंद्रियो द्रव्यरुपे चामडी, जीभ, नासिका, आंख, अने कान एवा नामथी ओळखाय छे.

हवे चार कषायनां लक्षण कहेवामां आवे छे. जेनाथी प्राणी सचेतन के अचेतन वस्तु उपर कोइ निमित्ते अथवा निमित्त विना गुस्सो करे, ते क्रोध नामे पहेलो कषाय छे. मृदुता—कोमळतानो जे अभाव ते मान नामे बीजो कषाय कहेवाय छे. ते मानना मद् अने मान एवा प्रकार छे. प्राप्त थयेली वस्तुओथी जे अहंकार थाय, ते मद कहेवाय छे, अने वस्तु प्राप्त थइ न होय, ते छतां जे अहंकार थाय, ते मान कहेवाय छे. १ जातिमद, २ कुळमद, ३ बळमद, ४ रुपमद, ५ ज्ञानमद, ६ लाभमद, ७ तपमद, अने ८ ऐश्वर्यमद—एम मदना आठ प्रकार छे " हुं सारा मोसाळनो भाणेज छुं, " एम पोतानी माताना पक्षनो एटले मोशाळनो मद करे, ते पहेलो जातिमद कहेवाय छे. " मारा पितानुं कुळ उंचुं छे, " एम पोताना पिताना पक्षनुं अभिमान करे, अने बीजाओनी ते बाबतमां निंदा करे, ते बीजो कुळमद कहेवाय छे. पोताना बळनुं अभिमान करे, अने बीजाना

बळनी निंदा करे, ते त्रीजो बळमद् कहेवाय छे. पोताना रुपनो गर्व करे, अने बीजाना रुपनी निंदा करे, ते चोथो रूपमद् कहेवाय छे. पोताने महाज्ञानी माने, अने बीजाने तुच्छ बुद्धि माने, ते पांचमो ज्ञानमद् कहेवाय छे. " मारा जेवो कोइ तपस्वी नथी, " एम तपनो गर्व राखे, ते छठ्ठो तपमद् कहेवाय छे. पोताने मोटो भाग्यवान् माने, अने बीजाने निर्भागी माने, तेने सातमो लाभमद् कहे छे. पोताना ऐश्वर्यनुं एटले पोतानी ठकुराइनुं अभिमान करे, अने बीजाने तृण समान गणे, ते आठमो ऐश्वर्यमद् कहेवाय छे. आवी रीते मानना पण प्रकार थइ शके छे.

जीव बीजाने ठगवा वास्ते जे जे विचारो करे, ते माया नामे त्रीजो कषाय छे. जेनाथी अधिक वस्तु प्राप्त करवानी जीवने लालच थाय, ते लोभ नामे चोथो कषाय छे.

आ प्रमाणे पांच इंद्रियो, अने चार कषाय ए नव भेद आश्रवना थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ इंद्रियो केटली होय ? २ पांचे इंद्रियोनां नाम आपो, अने तेनां लक्षण आपो. ३ कषाय केटला छे ?

४ क्रोधनुं लक्षण शुं ? ५ मानना केटला भेद छे ? ६ मान अने मदमां शो फेर छे ? ७ मद केटला प्रकारनो छे ? ८ आठे मदनां नाम आपो. ९ मान केटला प्रकारनो छे ? १० जीव बीजाने ठगवा वास्ते जे विचारो करे छे, ते कषायनुं शुं नाम छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विषय, स्पर्श, द्रव्यरूपे, सचेतन, अचेतन, निमित्त, मृदुता, कोमळता, अभाव, महाज्ञानी, तुच्छबुद्धि, तपस्वी, तृण समान.

पाठ ५० मो.

आठ मदनो त्याग करवा विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भला सौ भवी अंतरे वात लेजो,
नहीं मद करी जीवने बंध देजो;
नहीं मातृना पक्षथी मान पामो,
नहीं कुळमदे गर्वथी नित्य जामो. १

नहीं बळतणुं मान रे चित्त धारो,
थशो निर्बळा सद्य ए वात धारो;
कदि रुप पामो रुडां कर्मयोगे,
थशो नैं गिरि गर्वना भाग्य भोगे. २

कदि ज्ञानधारी बनो पूर्ण सारा,
न रहेशो मदे ज्ञानना प्रेम प्यारा;
बन्या जो कदि भाग्यना लाभवाळा,
तदा छोडजो गर्वना सर्व चाळा. ३

तपस्या करुं सर्वथी हुंज सारी,
करे अन्य ते सर्वदा छे नठारी;
तपस्या तणो गर्व एवो न धारो,
नथी मार्ग ते धर्मनो सर्व सारो. ४

अभागी गणो अन्यने नैं हृदेथी,
बनो दुर्गुणी लाभना ते मदेथी;
यदि चित्त ऐश्वर्यनो गर्व राखो,
तदा कर्मनां दुष्फळो सद्य चाखो. ५

गण्या मदतणा आ बधा आठ भेदो,
करी दूर ते कर्मने नित्य छेदो;
करे चित्तथी जे सदा ए विचारो,
थशे नैं कदी गर्वने धारनारो. ६

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

भवी, अंतरे, मातृना, निर्वळा, गिरि, भाग्यभोगे, अन्य, हृदेथी, दुर्गुणी, ऐश्वर्य, दुष्फळो.

पाठ ५१ मो.

पांच अव्रत—भाग १ लो.

आश्रव तत्वना बेंतालीश प्रकारमां पांच अव्रत आवे छे. पांच व्रतथी जे विपरीत, ते पांच अव्रत कहेवाय छे. कोइ पण जीवना दश प्राणोनो वध करवो, ते जीवहिंसा नामे पहेलुं अव्रत कहेवाय छे. मृषावाद—जुठुं बोलवुं, ते बीजुं अव्रत छे. अदत्तादान—बीजानी वस्तु चोरी लेवी, ते त्रीजुं अव्रत छे. ब्रह्मचर्यनो त्याग एटले मैथुननुं सेववुं, ते मैथुन नामे चोथुं अव्रत कहेवाय छे. नवविध परिग्रहनो संचय करवो, ते पांचमुं परिग्रह अव्रत कहेवाय छे.

पहेला जीवहिंसा अव्रतना चार भांगा छे. १ द्रव्यथी हिंसा, भावथी नहीं, २ द्रव्यथी हिंसा नहीं, पण भावथी हिंसा, ३ द्रव्यथी अने भावथी हिंसा, अने ४ द्रव्यथी अने भावथी हिंसा नहीं.

साधुने समाचारी, प्रतिलेखना करतां, मार्गमां विहार करतां, नदी प्रमुख उतरतां, नावमां बेसी नदी ओळंगतां, नदीमां तणाइ जतां एवां साध्वी विगेरेने बहार काढतां, वरषाद वरसतां, थंडील जतां, वरसादमां ग्लान साधुओनी मात्राने परठवतां, गुरुना शरीरने व्याधीने प्रसंगे, तथा थाक लागवाथी पगचंपी करतां जे हिंसा थाय, ते द्रव्यहिंसा कहेवाय छे; तथा श्रावकोने जिन मंदिर बनावतां, जिन पूजा करतां, साधर्मि वात्सल्य, तीर्थ यात्रा, रथ यात्रा, अठाइ महोत्सव, प्रतिष्टा, अने अंजनशलाका करतां, अने गुरुनी सन्मुख सामैयुं करी जतां, इत्यादि कर्त्तव्य करतां जे हिंसा थाय छे, ते सर्व द्रव्यहिंसा छे; परंतु भावहिंसा नथी. कारण के आ हिंसा प्रसंगे साधु तथा श्रावकनां परिणाम घणांज सारां होय छे, माठां अध्यवसाय नथी, अने उपयोगथी प्रवर्त्तन छे, तेथी ते द्रव्यहिंसा छे. आवी हिंसामां पाप अल्प अने निर्जरा घणी होय छे.

बीजा भांगामां द्रव्यथी हिंसा न होय, पण भावथी होय; जेमके जे पुरुष उपरथी शांत देखातो होय, पण तेना अंतःकरणना अध्यवसाय घणा मलीन अने हिंसामय होय छे, ते पोतानां हृदयमां अनेक प्रकारे जीवहिंसा करवानां कामनो संकल्प विकल्प कर्या करे छे. जो के ते हिंसा करतो नथी, तेथी द्रव्यथी हिंसा नथी, परंतु तेना अध्यवसाय हिंसामय होवाथी ते भावथी हिंसा छे,

आवी भावहिंसा करनारने अनंतकाळ सुधी आ संसारमां भ्रमण करवुं पडे छे.

त्रीजा भांगामां द्रव्यथी अने भावथी बंनेथी हिंसा रहेली छे. इंद्रियोना विषयोमां, तेमज कषायमां अति लुब्ध थइ जीवहिंसा करे, कसाइ बने, शिकार करवा जाय, विश्वासघात विगेरे जीव जाय तेवां काम करे, अने तेनाथी लाभ थता जोइ मनमां आनंद माने, ते द्रव्य अने भावथी—बंनेथी हिंसा छे, आवी हिंसाथी संसारमां भ्रमण अने दुर्गति प्राप्त थाय छे.

चोथा भांगामां द्रव्यथी अने भावथी—बंनेथी हिंसा होती नथी. आ भांगो शून्य छे, आवा भांगावाळो कोइ पण जीव संसारमां होतो नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ पांच अव्रत शेमां आवे छे? २ अव्रत एटले शुं? ३ जीवहिंसा एटले शुं? ४ मैथुन एटले शुं? ते समजावो. ५ पहेला अव्रत जीवहिंसाना केटला भांगा छे? ६ पहेला भांगामां साधु अने श्रावकने द्रव्यहिंसा केवी रीते थाय? ते समजावो, अने दाखला आपो. ७ द्रव्यहिंसामां पाप केटलुं लागे? अने निर्जरा थाय के नहीं? ८ भावहिंसानो दाखलो आपो. ९ भावहिंसा कर्याथी केवुं फळ थाय? १० द्रव्यथी अने भावथी हिंसा केवी

कहेवाय ? अने तेवी हिंसाथी शुं फळ थाय ? ११ चोथो भांगो केवो छे ? चोथा भांगावाळो कोइ जीव होय के नहीं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वध, मैथुन, समाचारी, प्रतिलेखना, विहार, नाव, थंडील, ग्लान, मात्रा, परठवतां, साधर्मिवात्सल्य, तीर्थयात्रा, रथयात्रा, अठ्ठाइमहोत्सव, प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, कर्त्तव्य, अध्यवसाय, उपयोग, प्रवर्त्तन, अल्प, निर्जरा, शांत, प्रलीन, हिंसामय, संकल्प विकल्प, अति लुब्ध, शून्य.

पाठ ५२ मो.

पांच अव्रत भाग २ जो.

बीजा अव्रत मृषावादना पण उपर प्रमाणे चार भांगा थइ शके छे. कोइ साधु रस्तामां चाल्या जता होय, तेमनी आगळ जंगलनी गायो तथा हरण विगेरेनुं टोळुं पसार थइ चाल्युं गयुं होय, ते वखते ते टोळानी शोध करतो कोइ शीकारी शस्त्र लइ चाल्यो आवे, ते शीकारी पेला जीवोनो शीकार करवा वास्ते साधुने पुछे के, तमे अहींथी कोइ जानवरोने जतां जोयां छे ? साधु तेनो

उत्तर नहीं आपवां मौन रहे, एटले ते शीकारी जवाब मेळववा सारु साधु उपर हुमलो करे, अने मारे; त्यारे साधु कहे के, में ते जानवरोनां टोळांने जतां जोयां नथी. जो के साधुनुं आ बोलवुं द्रव्ये जुठुं छे, परंतु भावे जुठुं नथी; जे इंद्रियोना भोगने वास्ते तेमज लोभ विगेरे कषायने लीधे जुठुं बोले, ते भावथी जुठुं कहेवाय छे. अहीं तो साधुनुं जुठुं बोलवुं निरपराधी प्राणीओनी दया वास्ते थयेलुं छे, तेथी वास्तविक रीते ते मृषावाद नथी. आ अव्रत मृषावादनुं पहेलुं भांगुं छे. कोइ मनुष्य मुखथी तो कांइ बोलतो नथी, पण बीजाने ठगवा वास्ते मनमां अनेक जातना जुठा विकल्प करे, आ द्रव्यथी मृषावाद नथी; परंतु भावथी मृषावाद छे. आ बीजा अव्रत मृषावादनुं बीजुं भांगु छे. कोइ माणस मुखथी असत्य वचन बोले छे, अने अंतःकरणमां पण छळ कपट करवाना मलीन अध्यवसाय छे, आ द्रव्यथी अने भावथी मृषावाद छे. आ अव्रत मृषावादनुं त्रीजुं भांगुं छे. चोथुं भांगु पूर्वनी जेम शून्य छे.

पूर्वनी जेम अदत्तादान एटले चोरी करवाना त्रीजा अव्रतना पण चार भांगा थाय छे. कोइ स्त्री शीळवती होय, तेना शीळनो भंग करवाने कोइ दुष्ट राजा तेने पकडीने पोताना कबजामां राखे.

आ खबर कोइ धार्मिक पुरुषना जाणवामां आवतां ते स्त्रीनां शीळनुं रक्षण करवा वास्ते ते धर्मी पुरुष हींमत करी, ते स्त्रीने राजाना कबजामांथी राज्य बाहेर लइ

जाय. तो व्यवहारथी ते पुरुषे राजानी आज्ञा भंगरुप चोरी अथवा स्त्रीनी चोरी करी छे, परंतु वास्तविक रीते चोरी नथी.

कोइ पुरुष पोताना घरमां द्रव्य राखी घरनां द्वार बंध करी परदेश गयेल छे, पछवाडे गाममां चोरनो उपद्रव थयो. ते परदेश गयेला माणसनुं द्रव्य चोराइ जशे, एम तेना कोइ हितेच्छु पुरुषने लागवाथी रात्रिने समये ते परदेश गयेला पुरुषना घरनां द्वार खोली, तेनुं सघळुं द्रव्य ले, अने ज्यारे ते पाछो परदेशथी घेर आवे, त्यारे तेने पाछुं आपवानी बुद्धिथी ते पोताना घरमां राखे आ दृष्टांतमां बीजानुं द्रव्य तेनी रजा शिवाय तेना कबजामांथी लइ लेवाथी ते द्रव्यथी चोरी थाय छे, परंतु तेना हृदयमां बदध्यातनो अभाव होवाथी भावथी चोरी थती नथी. आ त्रीजा अव्रतनो पहेलो भांगो छे.

कोइ पुरुष चोरी करतो नथी, परंतु चोरी करवाना अध्यवसाय तेना मनमां थया करे छे, ते द्रव्यथी चोरी नहीं, पण भावथी चोरी छे. जे श्री वीतराग सर्वज्ञ परमात्मानी आज्ञाना भंग करनारा छे, तेओने भावचोर कहेला छे. कोइ पुरुष चोरी करे, अने चोरी करवानो अध्यवसाय पण राखे, ते द्रव्यथी अने भावथी चोरी छे. चोथो भांगो पूर्वनी जेम शून्य छे.

सारांश प्रश्नो.

१ बीजा अव्रत मृषावादना केटला भांगा छे? २ पहेला भांगानुं दृष्टांत आपो. ३ बीजा अने त्रीजा भांगा विषे दाखला साथे समजावो. ४ त्रीजा अव्रत चोरीना केटला भांगा छे? ५ चोरीना पहेला भांगा उपर जे जे दृष्टांत होय ते कहो. ६ कोइ पुरुष परदेश गयेला बीजा माणसनुं धन चोराइ न जाय, तेवा हितविचारथी लइने पोताना घरमां राखे, ते कयो भांगो कहेवाय? ७ भावचोर कोने कहेवाय?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

मौन, वास्तविक, विकल्प, अध्यवसाय, शीलवती, भंग, उपद्रव, हितेच्छु, अभाव, वीतराग, सर्वज्ञ, परमात्मा.

पाठ ५३ मो.

पांच अव्रत—भाग ३ जो.

चोथा अव्रत अब्रह्मचर्य (मैथुन) ना पण उपरनी जेम चार भांगा थाय छे. कोइ साध्वी जळमां डुबती होय, तेने देखी कोइ साधु तेने बाहेर काढवाने वास्ते पकडे, तेमज कोइ गृहस्थ, पडी जती कोइ स्त्रीने तेना रक्ष-

णने माटे पकडे, तेवा प्रसंगोमां पकडवुं ते स्पर्शवडे द्रव्यथी मैथुन छे, परंतु भावथी नथी; ते पहेलो भांगो छे. बीजा भांगामां कोइ पुरुष स्त्रीने भोगवतो नथी, परंतु तेना मनमां स्त्री सेवन करवानी अभिलाषा बहुज रह्या करे छे, ते द्रव्यथी मैथुन नहीं, परंतु भावथी मैथुन छे. त्रीजा भांगामां स्त्रीनी साथे जे इच्छापूर्वक मैथुन करवुं, ते द्रव्यथी अने भावथी मैथुन छे. चोथो भांगो पूर्वनी जेम शून्य छे.

पांचमा अव्रत परिग्रहना पण चार भांगा छे. कायोत्सर्गे रहेला कोइ मुनिना गळामां कोइ माणस हार विगेरे आभूषणो पहेरावी जाय, ते जोइने बीजा अजाण्या माणसो तेमने परिग्रहवाळा धारे, पण मुनिने ते पदार्थ उपर परिग्रहनी बुद्धि नथी, तेवा प्रसंगमां द्रव्यथी परिग्रही कहेवाय, ते भावथी परिग्रही नथी, ते पहेलो भांगो छे.

कोइ पुरुष पासे एक कोडी पण नथी, परंतु तेने द्रव्य मेळववानी बहुज अभिलाषा रह्या करे, ते भावथी परिग्रही छे, द्रव्यथी नहीं. त्रीजा भांगामां धन पण पासे होय, तेना उपर मूर्छा होय, अने धन मेळववानी अभिलाषा पण रह्या करे, ते द्रव्यथी अने भावथी परिग्रही छे. चोथो भांगो शून्य छे.

सारांश प्रश्नो.

१ चोथा अव्रतना केटला भांगा छे ? २ पहेला भांगानो दाखलो समजावो. ३ बीजा अने त्रीजा भांगाने दाखला साथे समजावो. ४ पांचमा अव्रतना केटला भांगा छे ? ५ तेना पहेला तथा बीजा भांगाने दाखला साथे समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अब्रह्मचर्य, इच्छापूर्वक, कायोत्सर्ग, आभूषण.

पाठ ५४ मो.

त्रण योग अने पच्चीश क्रिया—भाग १ लो.

आश्रव तत्त्वना त्रण योगथी बीजा त्रण प्रकार थाय छे. शुभ अशुभनी अंदर मनने जोडवुं, ते पहेलो मनोयोग कहेवाय छे. शुभ अशुभनी अंदर वचनने जोडवुं, ते बीजो वचनयोग कहेवाय छे, अने शुभ अशुभनी अंदर कायाने जोडवी, ते त्रीजो काययोग कहेवाय छे.

आश्रव तत्वना बीजा पच्चीश प्रकार पच्चीश क्रियाओथी थाय छे. कायाने जयणा विना प्रवर्त्तावतां जे लागे, ते कायिकी नामे पहेली क्रिया कहेवाय छे. आ

कायिकी क्रिया बे प्रकारनी छे. अनुपरता कायिकी क्रिया अने अनुपयुक्त कायिकी क्रिया. अति दुष्ट एवा मिथ्या-द्रष्टि जीव मन वचननी अपेक्षा विना बीजा जीवने पीडा थाय, तेवो कायानो उद्यम करे, ते पहेलो प्रकार छे, अने जे प्रमादी संयमी उपयोग विना अनेक कर्त्तव्यरुपे काया-नो व्यापार करे, ते बीजो प्रकार छे.

कसाइ विगेरे शस्त्रथी बीजा जीवोनो घात करी, पोताना आत्माने नरक गतिमां जवानो अधिकारी करे, ते आधिकरणिकी नामे बीजी क्रिया छे, अथवा अधि-करण एटले घरनां उपकरणोथी जे जीवनो नाश करे, ते पण आधिकरणिकी क्रिया कहेवाय छे. आ आधि-करणिकी क्रियाना बे प्रकार छे. एक **संयोजना**, अने बीजी **निवर्त्तना.** झेर, फांसी, धनुष्य, यंत्र, तलवार विगेरे जीवहिंसा करवानां शस्त्रोने जीवोने मारवा वास्ते संयोजन करे, एटले जोडीने एकठा करे, जेम धनुष्यनी साथे तीर जोडे, ए विगेरे सधा संयोजना आधिकर-णिकी क्रियामां आवे छे. तलवार, तोमर, शक्ति, तोप, अने बंधुक, विगेरेने नवां सरस बनाववां, ए निवर्त्तना आधिकरणिकी क्रियामां आवे छे. जीव एटले प्राणी, अने अजीव एटले खुंटो, कांटो, पथ्थर, विगेरे–ते बंनेनी उपर द्वेष करे, ते प्राद्वेषिकी नामे त्रीजी क्रिया छे. पोताना हाथेथी तेमज बीजाने हाथे जीवोने मार मारी परिताप उपजाववो, ते परितापनिकी नामे चोथी क्रिया

छे. ते क्रियाना बे भेद छे. स्त्री, पुत्र विगेरेना वियोगथी दुःखी थइ जे पोताने हाथे छाती तेमज मस्तक कूटवुं, ते **स्वपरितापना** नामे पहेलो भेद छे, अने पुत्र तथा शिष्यने मार मारवो, ते **परपरितापना** नामे बीजो भेद छे. जे पोताना तथा बीजाना जीवने हणवो हणाववो, ते **प्राणातिपातिकी** नामे पांचमी क्रिया छे. पोताने हाथे पोतानो घात करवो, जेमके कुवामां पडी मरवुं, पर्वत उपरथी गरी पडवुं, अग्निमां झंपलाववुं, अने झेर खावुं, ए बधी आत्मघातनी क्रिया ते पहेलो भेद छे, अने कषायने वश थइने बीजा एकेंद्रिय प्रमुख जीवनो घात करवो, ते बीजो भेद छे, जेथी पृथ्वीकाय विगेरे छकायना जीवोनो उपघात थाय, तेवा खेती प्रमुख कार्यनो आरंभ करवो, ते **आरंभिकी** नामे छट्ठी क्रिया छे. धन, धान्य विगेरे नव प्रकारना परिग्रह मेळवतां तथा तेनी उपर मोह करतां जे क्रिया लागे, ते **पारिग्रहिकी** नामे सातमी क्रिया छे. माया–कपटथी बीजाने ठगवुं, ते **माया प्रत्ययिकी** नामे आठमी क्रिया छे. जिन वचनपर श्रद्धा न राखतां, विपरीत प्ररूपणा करवाथी जे क्रिया लागे, ते **मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी** नामे नवमी क्रिया छे. अविरतिए करी पच्चखाण लीधा विना सर्व खावा पीवानी वस्तुनो जेमां त्याग नहि, एवा जे असंयती रहेवां क्रिया लागे, ते अप्रत्याख्यानिकी नामे दशमी क्रिया छे. घोडा विगेरे जीव तथा रथ प्रमुख अ-

जीवोने जोवा वास्ते जवुं, ते द्रष्टिकी नामे अगीयारमी क्रिया छे. रागने वश थइने जे पुरुष, स्त्री, गाय, बळद, अने वस्त्र विगेरे जीव अजीव सुकुमार वस्तुने स्पर्श करवाथी जे क्रिया लागे, ते स्पृष्टिकी अथवा पृच्छिकी नामे बारमी क्रिया छे. बीजाने घेर हाथी, घोडा, वस्त्र, विगेरे उमदा वस्तु जोइ, 'ए वस्तु एनी पासे केम होय,' एवुं चिंतववाथी जे क्रिया लागे, ते प्रातित्यकी नामे तेरमी क्रिया छे. जीव एटले पोताना घोडा विगेरेने जोवा आवेला लोकोने प्रशंसा करतां जोइने जे हर्ष लाववो ते, अने अजीव एटले घर, आभूषण, वस्त्र, विगेरे जोवा आवेला लोकोने प्रशंसा करतां जोइने हर्ष लाववो ते, अथवा दूध, दहीं, घी, अने तेलनां पात्र उघाडां मुकवाथी तेमां जे त्रस जीव आवी पडे, तेनी हिंसाथी जे क्रिया लागे, ते सामंतोपनिपातिकी नामे चौदमी क्रिया छे. जीव एटले मनुष्य विगेरे तथा अजीव एटले पथरा विगेरेने फेंकवा, ते नैशस्त्रिकी नामे पंदरमी क्रिया छे, अथवा बीजाओए उपदेश करेलां पापमां जे घणो काळ प्रवर्त्ते, अने ते पापनी भावथी अनुमोदना करे, ते पण नैशस्त्रिकी नामे पंदरमी क्रिया कहेवाय छे. पोताना हाथथी जे पापनी क्रिया करे, ते स्वहस्तिकी नामे सोळमी क्रिया छे.

सारांश प्रश्नो.

१ योग केटला ? २ मनोयोग, वचनयोग, अने काययोगनां लक्षणो कहो. ३ आश्रव तत्वना प्रकारोमां जे क्रियाओ गणेली छे, ते केटली छे ? ४ कायिकी क्रिया एटले शुं ? ५ कायिकी क्रियाना केटला भेद छे ? ६ अनुपयुक्त कायिकी क्रियानो अर्थ समजावो. ७ आधिकरणिकी क्रियानो अर्थ शो ? ते समजावो. ८ संयोजना अने निवर्त्तना विषे समजूती आपो. ९ जीव तथा अजीव उपर द्वेष करे, ते कइ क्रिया कहेवाय ? १० स्वपरितापना अने परपरितापना ए कइ क्रियाना भेद छे ? ११ प्राणातिपातिकी क्रियाना केटला भेद छे ? १२ जेमां पृथ्वीकाय विगेरे छकायना जीवोनो उपघात थाय, अने तेथी जे क्रिया लागे, ते क्रियानुं शुं नाम ? १३ परिग्रहिकी अने अप्रत्याख्यानिकी क्रियानो अर्थ शुं ? १४ बीजाने कपटथी ठगवुं, ए क्रियानुं नाम शुं ? १५ जिन वचनपर श्रद्धा न राखतां विपरीत प्ररुपणा करवाथी कइ क्रिया लागे ? १६ जीव अजीव सुकुमार वस्तुने स्पर्श करवाथी कइ क्रिया लागे ? १७ द्रष्टिकी अने प्रातित्यकी क्रियानो अर्थ शुं ? १८ पोताना हाथथी जे पापनी क्रिया करे, ते क्रियानुं नाम शुं ? १९ जीव अजीव वस्तुने फेंकवाथी कइ क्रिया लागे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ, अशुभ, जयणा, मिथ्यादृष्टि, अपेक्षा, प्रमादी संयमी, कर्त्तव्य रूपे, व्यापार, उपकरणो, यंत्र, संयोजन, तोमर, शक्ति, द्वेष, परिताप, आत्मघातनी, विपरीत प्ररूपणा, सुकुमार.

पाठ ५५ मो.

त्रण योग अने पचवीश क्रिया—भाग २ जो.

श्री अरिहंत भगवाननी आज्ञा उल्लंघन करी, पोतानी बुद्धिथी जीवाजीव विगेरे पदार्थ प्ररूपणा करवाथी जे क्रिया लागे, ते आज्ञापनिकी नामे सत्तरमी क्रिया छे. बीजानां अछतां माठां आचरणने प्रकाश करी, तेनी पूजानो नाश करवो, तेथी उत्पन्न थयेली जे क्रिया लागे ते, अथवा कांइ सचित के अचित वस्तु विगेरे विदारवाथी जे क्रिया लागे, ते वैदारणिकी नामे अढारमी क्रिया छे. आभोय एटले उपभोग, तेथी जे विपरीत होय, ते अनाभोग कहेवाय छे. तेनाथी जे क्रिया लागे, अथवा देख्या विना तेमज मार्जन कर्या विना भींत के जमीन विगेरे उपर शरीर नाखवाथी जे क्रिया लागे, ते अनाभोगिकी नामे ओगणीशमी क्रिया छे. परमेश्वरे कहेल

जे करवा योग्य विधिओ, तेमांनी कोइ पोताने तथा कोइ परने हितकारी छे, तेवी विधिओमां प्रमादने लइ अनादर करवो, ते अनवकांक्षाप्रत्ययिकी नामे वीशमी क्रिया छे. प्रयोग एटले मन, वचन, अने कायानो व्यापार, दोडवुं, चालवुं, विगेरे कायानो व्यापार, हिंसाकारी कठोर तथा जुठुं बोलवारुप वचननो व्यापार, अने बीजानी इर्षा तथा अभिमान विगेरे मननो व्यापार, ए त्रण व्यापार करवाथी जे क्रिया लागे, ते प्रायोगिकी नामे एकवीशमी क्रिया छे, जेणे करीने विषयनुं ग्रहण थाय, ते समुदान एटले इंद्रिय कहेवाय छे. तेनो देशथी अने सर्वथी उपघात करवो. जेमके आदेश आपीने नीभाडा विगेरे हिंसानां काम कराववां, ते समुदान नामे बावीशमी क्रिया छे. माया—कपट तेमज लोभथी जे क्रिया करवामां आवे, ते प्रेमप्रत्ययिकी नामे त्रेवीशमी क्रिया छे. क्रोध तथा माने करीने जे थाय, ते द्वेषप्रत्ययिकी नामे चोवीशमी क्रिया छे. चालवाथी जे क्रिया लागे, ते इर्यापथिकी नामे पचवीशमी क्रिया छे. आ पचवीश क्रियाओमां केटलीएक क्रियाओ आपसमां सरखी जणाय छे, तोपण ते सूक्ष्म रीते सरखी नथी, एम समजवुं.

सारांश प्रश्नो.

१ आभोग एटले शुं, अने अनाभोग एटले शुं ?

२ अनाभोगथी जे क्रिया लागे, ते क्रियानुं शुं नाम छे ? ३ आज्ञापनिकी अने वैदारणिकी क्रिया एटले शुं ? ते समजावो. ४ कपट अने लोभथी जे क्रिया करवामां आवे, ते क्रियानुं शुं नाम ? ५ परमेश्वरे कहेल विधिओमां प्रमादथी अनादर करवो, ते कइ क्रियाओ कहेवाय ? ६ प्रयोगिकी अने समुदान क्रिया विषे बराबर समजावो. ७ द्वेषप्रत्ययिकी अने इर्यापथिकी क्रियानो अर्थ शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

उल्लंघन, प्ररुपणा, अछतां, विदारवुं, उपयोग, मार्जन, विधि, हितकारी, अनादर, व्यापार, समुदान, उपघात.

पाठ ५६ मो.

आश्रव तत्त्व विषे कविता.

दोहरा.

जेथी आवे कर्मजळ, जीव सरोवरमांय,
ते आश्रवनुं सर्वथी, लक्षण श्रेष्ठ गणाय. १

तेना बेय प्रकार छे, अशुभ अने शुभ नाम,
मनवच काया योगथी, जाणो ते अभिराम. २

इंद्रिय पांच कषायनी, संख्या छे वळी चार,
अव्रत पांचे जाणवां, त्रण योग छे सार. ३

क्रियातणी पचवीश छे, संख्या आगम सार,
बेंतालीश भेदो कह्या, ए आश्रव आधार. ५

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कर्मजळ, जीव सरोवर, वच, अभिराम, आगम सार.

पाठ ५७ मो.

संवर तत्व.

नव तत्वोमां आ संवर तत्त्व छठुं तत्व छे. संवरनो अर्थ रोकवुं थाय छे. उपर कहेला आश्रव तत्वथी जीवनी अंदर आवनारां नवां कर्मोने जे रोकी शके, ते संवर कहेवाय छे. ते संवरना एकंदर सत्तावन भेद थाय छे. पांच समिति, त्रण गुप्ति, दश प्रकारनो यति धर्म, बार भावना, बावीश परीषह, अने पांच प्रकारनां चारित्र, ए मळीने सत्तावन भेद थाय छे.

ते संवरना द्रव्य अने भाव एवा बे भेद पडे छे. जे नवां कर्मनुं रोकावबुं, ते द्रव्यसंवर कहेवाय छे. समिति विगेरेथी जे शुद्ध उपयोगरुप द्रव्यपणुं परिणामने पामे, अने तेथी करीने आत्माना परिणाम भाव कर्मना रोधक थाय, एटले रोकनार थाय, ते भावसंवर कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ संवर तत्व केटलामुं तत्व छे ? २ संवर शब्दनो अर्थ शो ? ३ संवर तत्वना भेद केटला छे ? ४ संवरना एकंदर भेद गणावो. ५ द्रव्यसंवर अने भावसंवर शुं ? ते समजावो. ६ भावसंवरमां आत्मानां परिणाम केवां थाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

समिति, गुप्ति, यतिधर्म, भावना, परीषह, चारित्र, शुद्ध उपयोग, परिणाम, भावकर्म, रोधक.

पाठ ५८ मो.

संवर तत्वना सतावन भेद.

पांच समिति अने त्रण गुप्ति.

शास्त्रने अनुसारे शुभजे चेष्टा करवी, ते समिति कहेवाय छे, ते समितिना पांच भेद छे. इर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदाननिक्षेपणा समिति, अने पारिष्ठापनिका समिति—एवा तेनां जुदां जुदां नाम छे. जवा आववाने विषे जयणापूर्वक उपयोग राखवो, ते इर्या समिति कहेवाय छे. पवित्र जैन मुनि घणी संभाळथी चाले छे, त्रस तथा स्थावर जीवोने अभयदान आपवाने तेओ हमेशां इर्या समिति राखे छे, इर्या समितिथी वर्त्तनारा मुनि जीवोनी तथा पोतानी रक्षाने माटे पगना अंगुठाथी चार हाथ प्रमाण भूमिने आगळ देखीने चाले छे. आ प्रमाणे इर्या समिति राख्या छतां कदि कोइ जीव मरी जाय, तोपण बहुज शुभ उपयोग राखनारा साधुने हिंसानो बंध थतो नथी. वचन बोलवामां जे सारी रीते उपयोग राखवो, ते बीजी भाषा समिति कहेवाय छे. भाषा समितिने साचवनार पुरुष पाप सहित अने कठोर भाषा बोले नहीं. " तुं धूर्त्त छे, तुं कामी छे, अने तुं राक्षस छे. " आवा नठारा शब्दो, तेना मुखमांथी नीकळता नथी. बीजाने सुखदायक, अल्प, घणा

प्रयोजनने साधनार, अने संदेह विनानां वचनो जे बोलवामां आवे, ते **भाषा समिति** छे. बेंताळीश प्रकारनां दूषणोथी रहित, एवा आहार विगेरेने ग्रहण करवा, ते त्रीजी **एषणा समिति** छे. एषणानो अर्थ इच्छा थाय छे. एषणा समितिवाळो पुरुष निर्दोष अने शुद्ध आहारनी गवेषणा करे छे. बेसतां, उठतां, अने कोइ चीज लेतां के मुकतां पुंजवानो उपयोग राखवो, ते चोथी **आदान निक्षेपणा समिति** कहेवाय छे.

विष्टा, मूत्र, थुंक, बडखा, शरीरनो मेल, वस्त्र, अन्न अने पाणी जे शरीरने उपयोगना न होय, ते सर्व जीव विनानी भूमिमां परठवे, तेवा उपयोगने पांचमी **पारिष्टापनिका** समिति कहे छे.

मन, वचन, अने कायाना योगने गोपववा, ते गुप्ति कहेवाय छे, ते मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, अने कायगुप्ति, एवा त्रण प्रकारनी छे. जे मनने गोपववुं, ते पहेली मनोगुप्ति छे, जे वचनने गोपववुं, ते बीजी वचनगुप्ति छे, अने जे कायाने गोपववी, ते त्रीजी कायगुप्ति छे.

उपर कहेल पांच समिति अने त्रण गुप्ति, ए आठ बोल चारित्रनो निर्वाह करवाने माटे माता समान छे, तेथी तेने शास्त्रमां अष्टप्रवचनमाता एवा नामथी कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ समिति एटले शुं ? २ समितिना केटला भेद छे ? ३ विष्टा, मूत्र, विगेरेने जीव विनानी भूमिमां परठववां, ते समितिनुं शुं नाम ? ४ जवा आववाने विषे जयणापूर्वक उपयोग राखवो, ते कइ समिति ? ५ एषणा समिति अने भाषा समिति एटले शुं ? ६ कोइ चीज लेतां के मूकतां पुंजवानो उपयोग राखवो, ते कइ समिति ? ७ गुप्ति एटले शुं ? ८ गुप्तिनां केटला भेद छे ? ९ प्रवचननी माता कोण कहेवाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

चेष्टा, जयणा, पाप सहित, कठोर, धूर्त्त, सुखदायक, अल्प, प्रयोजन, एषणा, गवेशणा, विष्टा, परठवे, समिति, गुप्ति.

पाठ ५९ मो.

संवर तत्वना सतावन भेद.

दश प्रकारनो यति धर्म.

संवर तत्वना सतावन भेदमां दश प्रकारनो यति

धर्म आवे छे. यतिधर्म अथवा मुनिधर्मना दश प्रकार छे. कदि पोतामां सामर्थ्य होय, अथवा न होय, तोपण बीजानां दुर्वचन सहन करवां, तेनां जे परिणाम राखवां, ते पहेलो **क्षमाधर्म** छे. नम्र थइ अभिमाननो त्याग करवो, ते बीजो मार्दवधर्म छे. मन, वचन अने कायानी कुटिलतानो त्याग करवो, एटले निष्कपटपणे रहेवुं, ते त्रीजो आर्जव धर्म छे. बाहेर अने अंदरथी तृष्णा के लोभनो त्याग, ते चोथो मुक्तिधर्म छे. रस विगेरे धातु अथवा आठ प्रकारनां कर्म, जेनाथी भस्म थाय, ते अनशन विगेरे तप, ते पांचमो तपोधर्म छे. तप धर्मथी इच्छानो निरोध थाय छे. आश्रवने त्याग करवानी जे वृत्ति, ते छठ्ठो संयमधर्म छे. प्राणातिपात विगेरे पांचमांथी विराम पामवुं, पांच इंद्रियोनो निग्रह करवो, चार कषायने जीतवा, अने त्रण दंडनी निवृत्ति, ए सत्तर भेदे संयमधर्म कहेवाय छे. सत्य बोलवुं, एटले मृषावादनो त्याग करवो, ते सातमो सत्यधर्म कहेवाय छे. संयम वृत्तिमां कलंकनो अभाव, ते आठमो शौचधर्म कहेवाय छे. आ शौचधर्मने बीजी रीते पण वर्णवेलो छे. बेंतालीश दोषथी रहित भात पाणी विगेरे आहार लेवो; ते द्रव्यथी शौच कहेवाय छे, अने आत्माना जे शुद्ध अध्यवसाय एटले कषाय विगेरेथी रहित एवां शुद्ध परिणामनी वृद्धि, ते भाव शौच कहेवाय छे; अथवा मन, वचन, अने काया शुद्ध राखवां, संयमने विषे निरतिचा-

रपणे वर्त्तवुं, तथा जीव अदत्त, स्वामि अदत्त, गुरु अदत्त, अने तीर्थंकर अदत्त, ए चार प्रकारनी चोरीनो त्याग करवो, ते पण शौच कहेवाय छे. सर्व जातना परिग्रहनो त्याग करवो, एटले सर्व उपरथी मूर्छा उतारवी, ते नवमो अकिंचनधर्म कहेवाय छे. नव प्रकारनुं औदारिक, अने नव प्रकारनुं वैक्रिय संबंधी मैथुननो त्याग करवो, तेने दशमो ब्रह्मचर्यधर्म कहे छे. आ दश यतिधर्मना गुणने जे धारण करे, ते खरेखरो यति कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ यति धर्म केटला प्रकारनो छे, अने ते दश भेद कया तत्वना छे ? २ क्षमाधर्म अने मुक्तिधर्म विषे समजावो. ३ जेमां नम्र थइ अभिमाननो त्याग करवामां आवे, निष्कपटपणे वर्त्तवामां आवे, ते यतिधर्मनां नाम शुं ? ४ तपोधर्म अने शौचधर्मनां लक्षण कहो. ५ तपो धर्मथी शुं थाय छे ? ६ आश्रवने त्याग करवानी वृत्ति करवी, ते कयो यतिधर्म ? ७ मृषावादनो त्याग करवो, ते धर्म कयो ? ८ संयम धर्म केटला प्रकारनो छे ? ते प्रकार कहो. ९ अकिंचनधर्मनो अर्थ समजावो. १० शौचधर्ममां शौच एटले शुं ? ते समजावो. ११ शौचना केटला भेद छे ? १२ द्रव्य शौच अने भाव शौच एटले

शुं ? ते समजावो. १३ औदारिक अने वैक्रिय संबंधी मैथुन केटला प्रकारनुं छे ? ते कहो. १४ खरेखरो यति कोण कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सामर्थ्य, दुर्वचन, परिणाम, नम्र, कुटिलता, रस विगेरे धातु, निरोध, निग्रह, त्रण दंड, कलंक, अध्यवसाय, वृद्धि, निरतिचारपणे, जीव अदत्त, स्वामि अदत्त, गुरु अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, मूर्छा, औदारिक, वैक्रिय.

पाठ ६० मो.

ब्रह्मचर्य—नव गुप्ति.

अथवा

नव वाड.

१ वस्ति, २ कथा, ३ आसन, ४ इंद्रिय, ५ कुड्यांतर, ६ पूर्व क्रिडानुं स्मरण, ७ प्रणीत भोजन, ८ अतिमात्राहार, अने ९ विभूषण. आ नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति कहेवाय छे. दरेक मुनिए आ नव गुप्ति सहित ब्रह्मचर्य राखवुं जोइए, जे ए नव गुप्तिथी शील पाळे, ते खरेखर

साधु कहेवाय छे. ज्यां दैवी अने मानुषी ए वे प्रकारनी स्त्री प्रत्यक्ष के मूर्त्तिरूपे रहेती न होय, ज्यां पशु एटले तिर्यंचणी, गाय, कुतरी, पाडी, घोडी, वकरी के घेटी विगेरे रहेती न होय, अने ज्यां नपुंसक रहेता न होय, तेवी वस्तीमां साधुए रहेवुं जोइए. जे वस्तीमां स्त्री, पशु, अने नपुंसक रहे, ते स्त्रीपशु पंडकवाळी वस्ती कहेवाय छे. नपुंशकनुं वीजुं नाम पंडक छे. जो ते त्रणेनी वस्तीमां साधु रहे, तो तेओनी काम विकारनी चेष्टा देखवाथी ब्रह्मचारी साधुना मनमां विकार उत्पन्न थवाथी ब्रह्मचर्यने वाधा थाय छे. आ ब्रह्मचर्यनी वस्ति नामे पहेली गुप्ति (वाड) छे.

एकली स्त्रीने उद्देशीने कथा कहेवी, तथा स्त्रीओनीज कथा कहेवी, ए साधुने योग्य नथी. कारण के ए कथा राग उत्पन्न करवानो हेतु छे. ब्रह्मचर्यवाळा साधुए स्त्रीना देश, जाति, कुळ, वेष, भाषा, गति, विलास, हावभाव, चेष्टा, हसवुं, लीला, कटाक्ष, स्नेह, रति अने कलह के श्रृंगारनी कथा साधुए करवी न जोइए, जो तेवी कथा करे, तो मुनिनुं मन विकार पामे छे. आ कथा ब्रह्मचर्यनी वीजी गुप्ति (वाड) छे.

स्त्रीओनी साथे एक आसनपर मुनिए वेसवुं नहीं, तथा जे आसन उपरथी स्त्री उठी होय, ते आसन अथवा स्थानमां वे घडी सुधी साधुए वेसवुं नहीं;

कारण के, त्यां बेसवाथी स्त्रीनुं स्मरण थाय छे, तेमज स्त्रीना बेसवाथी शय्या, अथवा आसन मलीन थवाथी स्त्रीना स्पर्शवाळा आसन विगेरेथी विकार उत्पन्न थाय छे. आ आसन नामे त्रीजी गुप्ति कहेवाय छे.

स्त्रीओनां अंग, उपांग ने नेत्र फाडीने जुवे नहीं. कदि दृष्टि पडी जाय, तो " वाह ! केवो सुंदर छे ! " एवुं चिंतवन करे नहीं. आ इंद्रिय नामे चोथी गुप्ति कहेवाय छे.

ज्यां दीवाल, तट्टी, के कनातने अंतरे स्त्री पुरुष मैथुन सेवन करतां होय, तेमज तेओना अवाज संभळाता होय, त्यां ब्रह्मचारी साधुए रहेवुं नहीं. आ कुड्यंतर नामे पांचमी गुप्ति छे.

पूर्वे गृहस्थ अवस्थामां स्त्रीनी साथे जे विषय भोग क्रीडा करी होय, तेनुं स्मरण साधुए करवुं नहीं. जो स्मरण करे, तो विषय सेववानी इच्छा थाय. आ पूर्व-क्रीडा नामे छठ्ठी गुप्ति छे.

अति चीकाशवाळा, मीठा, दुध, दहीं विगेरे धातु पुष्ट करनार पदार्थोनो निरंतर आहार करवो नहीं. जो तेवो आहार करे, तो वीर्यनी वृद्धि थवाथी विकार उत्पन्न थाय छे, अने तेथी वखते विषयनी इच्छा थाय छे. आ प्रणीत नामे सातमी गुप्ति छे.

कदि लुखी भिक्षा होय, तोपण साधुए प्रमाणथी अधिक खावी नहीं; कारण के, हद उपरांत खावाथी पण विकार उत्पन्न थाय, अने शरीरने झाडा विगेरेनी पीडा थइ पडे छे. आ अतिमात्राहार नामे आठमी गुप्ति छे.

स्नान, विलेपन अने धूपे करी शरीरने सुंदर करवुं, नख समारवा, दांत साफ करवा, केशमां तेल नाखवुं, कपाळे तिलक करवुं, आंखमां काजळ सारवुं, सुकोमळ करवा वास्ते हाथ, पग विगेरे शरीरना अवयवने तेल अथवा साबुथी मसळवां—आ प्रमाणे शरीरनो शणगार न करे, आ विभूषणादि नामे नवमी गुप्ति छे.

आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा माटे छे, तेथी साधु सिवाय बीजा ब्रह्मचारीए पण आ नव वाड साचववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ ब्रह्मचर्यनी केटली गुप्ति छे ? २ गुप्ति एटले शुं ? ३ नव गुप्तिनां नाम आपो. ४ वस्ती नामनी गुप्तिमां स्त्रीना केटला प्रकार लेवा ? ५ स्त्री, पशु, अने पंडक ए शुं ? ते समजावो. ६ स्त्रीओनी साथे एक आसनपर बेसवुं, ते कइ गुप्ति ? ७ कथा नामनी गुप्ति विषे

समजावो. ८ केवी दीवाल तट्टी के कनात होय, त्यां साधुए न रहेवुं. ९ इंद्रिय अने क्रीडा ए बे गुप्ति विषे समजावो. १० धातुपुष्ट करनार पदार्थोनो आहार करवो नहीं, ते गुप्तिनुं नाम शुं ? ११ शरीरने शणगारवुं नहीं, ए गुप्तिनुं नाम शुं ? १२ अतिमात्राहार अने पूर्वक्रीडा ए बे गुप्ति विषे समजावो. १३ आ नव वाड कोनी रक्षा माटे छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कुट्यांतर, प्रणीत, अतिमात्राहार, मानुषी, तिर्यंचणी, पंडक, नपुंसक, ब्रह्मचारी, उद्देशीने, विलास, हावभाव, चेष्टा, लीला, कटाक्ष, रति, कलह, श्रृंगार, शय्या, अंग, उपांग, धातुपुष्ट, निरंतर, वीर्य, विलेपन.

पाठ ६१ मो.

(संवर तत्वना सतावन भेद.)

बार भावना.

बार भावनाना बार प्रकार छे, अने ते संवर तत्त्वना सतावन भेदमां गणाय छे. १ अनित्य भावना, २ अशरण

भावना, ३ संसार भावना, ४ एकत्व भावना, ५ अन्यत्व भावना, ६ अशुचि भावना, ७ आश्रव भावना, ८ संवर भावना, ९ निर्जरा भावना, १० लोक स्वभाव भावना, ११ बोधि दुर्लभ भावना, अने १२ धर्म भावना—आ बार भावनाओ कहेवाय छे. लक्ष्मी, यौवन, कुटुंब, परिवार तथा आयुष्यने दर्भना अग्र भाग उपर रहेला जळनां टीपांनी जेम अनित्य के अस्थिर भाववा, ते पहेली **अनित्य भावना** कहेवाय छे. आ संसारमां जन्म, जरा अने मरणना भयथी बचाववाने एक धर्म शिवाय बीजुं कोइ शरण नथी. आ प्रमाणे जे भाववुं, ते बीजी **अशरण भावना** छे. जे माता ते स्त्री थाय, स्त्री ते माता थाय, पिता ते पुत्र थाय पुत्र ते पिता थाय, इत्यादि संसारनी विचित्रतानो आ जीवे अनुभव कर्यो छे. आ प्रमाणे जे भाववुं, ते त्रीजी **संसार भावना** छे. आ जीव संसारमां एकलो आव्यो छे, ने एकलो जशे, एवुं धारवुं, ते चोथी **एकत्व भावना** छे. आत्मा ज्ञान स्वरुप छे, अने शरीर जड छे, माटे तेओ एक बीजाथी जुदा छे, आत्मा शरीर नथी, अने शरीर आत्मा नथी, आत्माथी शरीर, धन तथा सगांवहालां विगेरे अन्य-जुदां छे, आवी रीते भाववुं, ते पांचमी **अन्यत्व भावना** छे. रस, रुधिर, मांस, हाडकां, वीर्य, अने परु विगेरे अशुचिथी भरेलुं आ शरीर छे, तथा पुरुष, अने स्त्रीने आश्रीने ते शरीरना नव तथा बार द्वार सदा वह्यां करे

छे; तेथी ते शरीर कोइ दिवस शुचि एटले पवित्र थतुं नथी. आ प्रमाणे भाववुं, ते छठी अशुचि भावना छे. पांच इंद्रिय, चार कषाय, पांच अव्रत, त्रण योग, अने पचवीश क्रिया—एवा भेदथी कर्म बंधाय छे, तेमज दया दान विगेरेथी शुभ कर्म अने विषय कषाय विगेरेथी अशुभ कर्म बंधाय छे. आ प्रमाणे जे भाववुं, ते सातमी **आश्रव भावना** छे. जे जे संवर आदरवाथी जे जे आश्रव रोकाय, ते ते संवरने आदरवा, अने आश्रवने रोकवा, ते आठमी **संवर भावना** छे. जेम संकीर्ण स्थानकना योगथी केरी पाके छे, तेम बार प्रकारना तपे करीने कर्मने पचाववुं, एटले पूर्वे करेलां कर्मने साडवुं, ते रुपी निर्जरा सकाम तथा अकाम, एम बे प्रकारे छे. एवी जे भावना भाववी, ते नवमी **निर्जरा भावना** छे. आ चौद राजलोक केड उपर बे हाथ दइ, बंने पग पसारीने उभेला पुरुषना जेवा आकारवाळो छे, ते षट्द्रव्यरुपे छे. पूर्वना पर्याय नाश पामे, नवा पर्याय उत्पन्न थाय, अने द्रव्यपणे निश्चळ, एम उत्पाद, व्यय तथा ध्रुव स्वरुप छे. जे लोकनुं नीचेनुं तळीयुं उंधा वाळेला चपणा जेवुं, मध्य भाग झालर जेवो, अने उपरनो भाग मृदंगना जेवो छे. वळी ए लोक शाश्वतो छे. आ प्रमाणे जे भावना करवी, ते दशमी **लोक स्वरुप भावना** छे. जीवने आ संसारमां भमता अनंता पुद्गल परावर्त्त थइ गया, तेमां अनंत वार चक्रवर्त्ती विगेरेनी समृद्धि मळी, तथा यथा

प्रवृत्तिकरणने योगे करी, तथा अकाम निर्जरावडे पुण्यना प्रयोगथी मनुष्यभव, आर्यदेश, निरोगी काया, अने धर्मना श्रवणनो योग प्राप्त थयो, तोपण सम्यक्त्व पामवुं अति दुर्लभ छे, एवी जे भावना भाववी, ते अगीयारमी बोधि दुर्लभ भावना छे. दुःखे तरी शकाय एवा आ संसार समुद्रमांथी तारवाने वाहाण समान एवो ते श्री जिन प्रणीत क्षमा विगेरे दश प्रकारनो शुद्ध धर्म, तथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण रत्नरुप धर्म पामवो दुर्लभ छे, तथा ते धर्मना साधक अरिहंत विगेरे पण आ संसारमां पामवा दुर्लभ छे. आ प्रमाणे जे चिंतववुं, ते बारमी धर्म भावना कहेवाय छे.

उपर कहेली बार भावना. तथा पांच महाव्रतमां दरेक व्रतनी पांच पांच एम पचीश, अने मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, अने उपेक्षा—ए वधी बीजी भावनाओने पण शुद्ध हृदयवडे प्रमाद छोडीने भाववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ भावना केटली छे ? २ ते भावना कया तत्वमां गणाय छे ? ३ बार भावनाओनां नाम आपो. ४ आ संसारमां जीव एकलो आव्यो छे, अने एकलो जशे एम धारवुं, ते कइ भावना कहेवाय ? ५ दर्भना अग्र भाग

उपर रहेला जळना टीपानी जेम सर्व अनित्य धारवुं, ते कइ भावना कहेवाय ? ६ अशरण भावना अने एकत्व भावना विषे समजावो. ७ जे जे संवर आदरवाथी आश्रव रोकाय, ते ते संवरने आदरवा, अने आश्रवने रोकवा, ते कइ भावना कहेवाय ? ८ शरीर अने आत्माने जुदा जुदा मानवा, ते कइ भावना कहेवाय ? ९ अशुचि भावना अने आश्रव भावनानुं स्वरुप कहो. १० बार प्रकारनां तपथी कर्मनें पचाववां, ए कइ भावना कहेवाय ? ११ आ संसाररुप समुद्रने तारनार दश प्रकारनो धर्म तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररुप त्रण प्रकारनो धर्म छे एम चिंतववुं, ते कइ भावना कहेवाय ? १२ लोक स्वरुप भावना, अने बोधि दुर्लभ भावना विषे समजावो. १३ आ बार भावना शिवाय बीजी कइ भावना भाववी जोइए ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

यौवन, दर्भ, अग्रभाग, अनित्य, अस्थिर, जरा, विचित्रता, ज्ञानस्वरुप, रुधिर, रस, वीर्य, अशुचि, नव द्वार, बार द्वार, संकीर्ण स्थानक, निर्जरा, सकाम, अकाम, षट् द्रव्य, पर्याय, निश्चळ, उत्पाद, व्यय, ध्रुव स्वरुप, चपणा, मृदंग, पुद्गल परावर्त्त, यथा प्रवृत्तिकरण, श्री जिन प्रणीत, साधक, मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, उपेक्षा.

पाठ ६२ मो.

बार भावना विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भली भावना भावजो जे अनित्यं,
रह्युं सर्व आ विश्वमां सर्व रीते;
धरो धर्मनुं शरण जे एक सारुं,
बीजुं सर्व छे ते विना जे अकारुं. १

जुवो भवतणो भेद केवो विचित्र,
विचारो हृदे भावथी भव्य मित्र;
अहो आ भवे एकला सर्व आव्या,
जवानुं हवे एकला तेह भाव्या. २

स्वरुपे जुवो आतमनुं रुप भारी,
जुदुं ते शरीरे हृदे ल्यो विचारी;
परु मांस ने हाडकां वीर्य आदि,
अशुचि भर्युं आ वपु गंधवादी. ३

सदा भावजो आश्रवो कर्म बंधे,
शुभाशुभ विवेके करी सर्व संधे;
वळी रोकजो आश्रवो संवरेथी,
घणो लाभ ते भावनाने धरेथी. ४

तपस्या करी कर्म सर्व तपावो,
खरी निर्जरा भावना तेह भावो;
करो व्रत पच्चखाण चित्ते विचारी,
वळी पाप आलोयणा टेक धारी. ५

हृदे चौद आ राजलोके विचारो,
वधी आकृति लोकनी चित्त धारो;
हृदे बोधि छे दुर्लभा एम मानो,
मळ्यो जन्म मानुष्यनो ते प्रमाणो. ६

पछी धर्मनी भावना नित्य भावो,
क्षमा आदि जे भेद ते नित्य गावो;
धरो भावना बार ते भव्यराज,
थयुं जाणजो धर्मनुं सिद्ध काज. ७

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

अनित्ये, भवतणो, विचित्र, भव्य, आत्मनुं, भारी, हृदे, आदि, अशुचि, वपु, गंधमादी, कर्मबंधे, राजलोके, आकृति, बोधि, दुर्लभा, क्षमाआदि, भव्यराज.

पाठ ६३ मो.

[संवर तत्वना सत्तावन भेद.]

बावीश परिषह.

संवर तत्वना सत्तावन भेदनी अंदर बावीश परिषह पण गणाय छे. सर्व प्रकारे कर्मनी निर्जरा करवाने माटे जे सहन करवुं, ते परिषह कहेवाय छे, ते परिषहना बावीश प्रकार छे. भुखथी उत्पन्न थती वेदनाने सहन करवी, ते पहेलो क्षुधा परिषह कहेवाय छे. तरस लागवाथी थती वेदनाने सहन करवी, ते बीजो पीपासा परिषह छे. टाढथी थती वेदनाने सहन करवी, ते त्रीजो शीत परिषह छे. ताप लागवाथी थती आतापना—पीडाने सहन करवी, ते चोथो उष्ण परिषह छे. डांस, मच्छर, जू, मांकड विगेरेना डंसने समभावे सहन करवो, ते पांचमो दंश परिषह छे. जुनां वस्त्र होय तो, तेथी खेद न पामे, अने नवां वस्त्र होय तो, तेथी हर्ष न पामे, ते छठो अचेलक परिषह छे. टाढ, तडको विगेरेना संभवथी जे अरति—अणगमो उत्पन्न थाय, तेने सहन करवी, ते सातमो अरति परिषह छे. स्त्रीओनां अंग, उपांग तथा हावभावने देखी पोताना मनने स्थिर राखवुं, ते आठमो स्त्री परिषह छे. आळस छोडी

गामोगाम विहार करवो, अने जे कष्ट सहन करवुं, ते नवमो चर्या परिषह छे. शून्य घर तथा स्मशान विगेरेमां कायोत्सर्ग विगेरे क्रिया करतां सिंह प्रमुखनो भय थतां, जे डरवुं नहीं, ते दशमो निषिधिका परिषह छे. चढतां, उतरतां, उंची, नीची, शीतळ, उष्ण, कोमळ, अथवा कठण भूमि उपर आसन के शय्या पामी उद्वेग धरे नहीं, पण सारी रीते ते दुःख सहन करे, ते अगीयारमो शय्या परिषह कहेवाय छे. क्रोधनां वचन सांभळीने सांखी रहेवां, ते बारमो आक्रोश परिषह छे. कोइ लपडाक, पाटु, चाबुक, तथा लाकडीनो घा करे, अथवा वध करे, पण पोते जरा पण रोष न लावतां सम परिणामे सहन करे, ते तेरमो वध परिषह छे. पोते राजा के चक्रवर्त्ति होय, पण संयम लइने निच, के उंच कुळमां भिक्षा लेवा जतां लज्जा न पामे, ते चौदमो याचना परिषह छे. कोइ पण चीजनी याचना करे, अने ते चीज गृहस्थना घरमां होय, ते छतां वे न आपे, तोपण उद्वेग न पामे, अनिष्ट चिंतवे नहीं, बोले नहिं पण ते समता भावे सहन करे, ते पंदरमो अलाभ परिषह छे. कोइ पण रोग उत्पन्न थतां, तेनी अति वेदना थाय, तोपण आर्त्त ध्यान करे नहीं, अने ते सारी रीते सहन करे, ते सोळमो रोग परिषह छे. जमीनपर डाभ विगेरेनी शय्या उपर सुतां, तेना अग्र भाग भोंकावाथी जे वेदना थाय, तेने सारी रीते सहन करे, ते सत्तरमो

तृणस्पर्श परिषह छे, तेने मागधी भाषामां तणफास परिषह पण कहे छे. शरीरे पसीनाना संयोगे मेल थाय, अने तेथी करीने शरीर गंधाय, तोपण स्नाननी इच्छा न करे, अथवा तेथी कंटाळीने एवुं न चिंतवे के, " हुं क्यारे आमांथी छुटुं ? " आवा कष्टने सहन करवुं, ते अढारमो मल परिषह छे. आदर सत्कार मळवाथी उत्कर्ष न आणे, अने न मळवाथी खेद न पामे, ते ओगणीशमो सत्कार परिषह छे. शास्त्रनुं ज्ञान विशेष होवाथी कोइना प्रश्ननो उत्तर तरत आपवानी शक्ति होय, तेथी वहु मान अने पोतानो जय देखी गर्व धरे नहीं, अने तेना अभावे खेद धरे नहीं, ते वीशमो प्रज्ञा परिषह छे. पोतानामां शास्त्र के तत्वनुं ज्ञान न होय, तेथी दिनता धरे नहीं, पण " मारे ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय छे, ते भोगववाथी अथवा तप आचरवाथी दूर थशे. " एवुं धारी उद्वेग राखे नहीं, ते एकवीशमो अज्ञान परिषह छे.

उपर कहेला अज्ञानने लीधे शास्त्रनी झीणी वातोमां कदि समजण पडे नहीं, तेथी देव, गुरु, अने धर्मनी उपर अश्रद्धा राखे नहीं, तथा शास्त्रमां इंद्र विगेरे सम्यग् द्रष्टि देवता छे, एम संभळाय छे, पण ते प्रत्यक्ष नजरे देखाता नथी, माटे ते हशे के नहीं होय, तेवो वहेम न लावे, तथा अन्य मतिओनी समृद्धि के सिद्धिनी उन्नति जोइ, तथा तपस्यानां कष्ट देखी मूढ वनी न जाय, ते बावीशमो सम्यक्त्व परिषह छे.

आ बाविश परिषहोने समभावे सहन करवा, ते संवर छे.

सारांश प्रश्नो.

१ परिषह क्या तत्वमां गणाय छे, अने ते केटला छे ? २ परिषह एटले शुं ? ३ शून्य घर के स्मशान विगेरेमां कायोत्सर्ग विगेरे क्रिया करतां सिंहादिकनो भय थाय, तथापि डरवुं नहीं, ते कयो परिषह ? ४ गामोगाम विहार करवानुं कष्ट वेठे, ते कयो परिषह छे ? ५ क्षुधा परिषह, अने पीपासा परिषह विषे समजावो. ६ स्त्रीनां अंगोपांग देखी मनने स्थिर राखवुं, ते कयो परिषह ? ७ ताढ, तडका विगेरेना संभवथी अणगमो थाय, ते कयो परिषह ? ८ शीत परिषह, अने उष्ण परिषह विषे समजावो, ९ अचेलक परिषह, दंश परिषह, शय्या परिषह, अने आक्रोश परिषहनां लक्षण कहो. १० आदर के सत्कार मळवाथी उत्कर्ष न आणे, अने ते न मळवाथी खेद न पामे, ते कयो परिषह ? ११ याचना परिषह, अलाभ परिषह, तृण स्पर्श परिषह विषे समजावो. १२ तणफास परिषह ए कइ भाषानो शब्द छे ? १३ वध परिषह, निषिधिकी परिषह, प्रज्ञा परिषह, अने सम्यक्त्व परिषह विषे समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वेदना, आतापना, दंश, अरति, शून्य घर, सम परिणामे, अनिष्ट, आर्त्तध्यान, बहुमान, अश्रद्धा, उन्नति.

पाठ ६४ मो.

बावीश परिषह विषे कविता.

भुजंगी छंद.

क्षुधा[1] कष्ट वेठे खरी टेक राखी,
भलो संजमे धर्मनो स्वाद चाखी;
पिपासा[2] तणुं ते सहे कष्ट प्रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १

सहे शीतने सर्वदा प्रेम धारी,
करे वांछना वस्त्रनी नै विहारी[3];
न इच्छे कदि अग्निनो ताप प्रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. २

फरे सूर्यना तापमां मध्य काळे[4],
कदि ते नहिं चरणमां चर्म[5] घाले;

---

१ भुख. २ तृषा. ३ विहार करनारा. ४ मध्यान्हकाळे. ५ जोटा–उपान.

न इच्छे कदि वायु पंखानी रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ३

नडे मच्छरो मांकडो डांस जंतु[१],
निवारे न ते जे सहे छे परंतु;
न धारे कदि आर्त्तता[२] आप चित्ते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ४

धरे फाटलां तुटलां वस्त्र अंगे,
न च्हाहे रुडा ते वधारे उमंगे;
सदा एषणा[३] धर्मने आप जीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ५

अभावो[४] बने संयमे वर्त्तता जो;
सहे ते वधुं राखीने समता जो,
वधुं ते सहे जे नडे सर्व रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ६

विलोके कदि अंगनां[५] अंग सारां,
रहे स्वस्थ चित्ते गणी ते नठारां;
न मोहे कदि राग रंगे सुगीते[६],
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ७

विहारो करे सर्वदा सर्व गामे,
वनी आलसु ते थकी नै विरामे[७];

---

१ प्राणी. २ आर्त्तध्यान. ३ इच्छा धर्म. ४ अरति. ५ स्त्री. ६ सा-
रा गीते. ७ विराम पामे नहीं.

वधे नित्य चर्या[1] करे एक रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ८

करे काउसग्गादि शून्य स्मशाने,
सुणे गर्जना सिंहनी सद्य काने;
डगे नहीं कदि तोय मृत्युनी भीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ९

सहे नित्य शय्यासने[2] कष्ट भारे,
नहीं क्रोधना वाक्यथी खेद धारे;
डगे नहीं कदि मारथी दुःख वीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १०

नहीं याचनाथी हृदे आप लाजे,
मळे लाभ नहीं तो स्वचित्ते[3] न दाझे;
सहे वेदना रोगनी शांत चित्ते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ११

कदि अंगमां डाभ ने घास वागे,
तथापि नहीं खेदथी चित्त जागे;
सहे मेल दुर्गंध अंगे सुरीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १२

नहीं आदरे हर्षने चित्त धारे,
अनादर थकी खेदने नहीं वधारे;

---

१ चर्या परीषह. २ शय्या—संथारो अने आसन उपर बेसवाथी. ३ पोताना चित्तमां.

रहे नित्य मानापमाने[१] सुरीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १३

नहीं पूर्ण प्रज्ञा[२] थकी गर्व जामे,
नहीं अल्प बुद्धि धरी खेद पामे;
सहे कष्ट अज्ञाननुं[३] तेज रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १४

अश्रद्धा न राखे धरी व्हेम चित्ते,
न लोभाय जे अन्यना धर्मवित्तें[४];
परिषह पुरा धारतां ते सुरीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १५

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी,

तथा कवितामां बावीश परिषह अनुक्रमे आप्या छे, ते समजाववा.

क्षुधाकष्ट, पिपासा, शीत, वांच्छना, मध्यकाले, चर्म, जंतु, आर्त्तता, एषणा धर्म, ताजो, अंगना, स्वच्छ चित्ते, सुरीते, विरामे, चर्या, स्मशान, शय्यासने, स्वचित्ते, मानापमाने, प्रज्ञा, अश्रद्धा.

---

१ मान, अपमान. २ बुद्धि. ३ अज्ञान परिषह. ४ धर्मना तत्वमां.

पाठ ६५ मो.

(संवर तत्वना सत्तावन भेद.)

पांच प्रकारनुं चारित्र.

संवर तत्वना सत्तावन भेदमां चारित्रना पांच भेदनी गणना थाय छे. १ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहार विशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र, अने ५ यथाख्यात चारित्र—एवा ते पांच भेदनां जुदां जुदां नाम छे; ज्यां राग द्वेषना अभावने माटे जवुं थाय, अथवा ज्यां ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो लाभ थाय, ते पहेलुं **सामायिक चारित्र** कहेवाय छे, ते चारित्रना देशविरति अने सर्वविरति—एवा वे भेद थाय छे, जेमां सावद्य योगनो त्याग करवो, अने निरवद्य योगनुं सेवन करवुं, ते देशे करी श्रावकने अने सर्वे करी साधुने होय छे.

जेमां पूर्व पर्यायनो छेद करवामां आवे, ते वीजुं छेदोपस्थापनीय नामे चारित्र छे. आ चारित्र आचार्ये आपेला पंचमहाव्रतरुपे होय छे, ते छेदोपस्थापनीय चारित्रना **सातिचार** अने **निरतिचार** एवा वे भेद थाय छे. जे मूळ गुणने घात करनाराने प्रायश्चित आपवारुप चारित्र होय, ते सातिचार छेदोपस्थापनीय

कहेवाय छे, अने नवा दीक्षा लीधेला शिष्यने " छज्जीवणीया " अध्ययन भण्या पछी, अथवा वीजा तीर्थने आश्रयी होय, ते निरतिचार छेदोपस्थापनीय कहेवाय छे; जेम श्री पार्श्वनाथ स्वामीना तीर्थथी श्री वीरस्वामीना तीर्थे आवी चार महाव्रतरुप धर्मनो त्याग करी पंचमहाव्रतरुप धर्मने आदरे, ते निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र छे. जेमां विशेष तप करवाथी कर्मनी निर्जरा थाय, ते त्रीजुं परिहार विशुद्धि चारित्र कहेवाय छे. ते चारित्रना निर्विश मानसिक अने निर्विष्टकायिक एवा बे भेद छे, जे चार जण आ चारित्रना आसेवक होय, अने ए कल्पमां प्रवर्त्तता होय, तेनुं जे चारित्र ते निर्विश मानसिक परिहार विशुद्धि चारित्र कहेवाय छे. चार जण तेना अनुचारी होय, तेने जे चारित्र होय, ते निर्विष्टकायिक परिहार विशुद्धि नामे चारित्र कहेवाय छे, तेमां नवमो एक वांचनाचार्य होय छे. एवी रीते नव जणना समूहथी आ चारित्र आदरवामां आवे छे.

चोथा चारित्रनुं नाम सूक्ष्म संपराय चारित्र कहेवाय छे, ते चारित्रमां कषाय सूक्ष्म होय छे, तेथी तेनुं सूक्ष्म संपराय एवुं नाम छे. उपशम श्रेणिए कर्मने शमावतां अने क्षपक श्रेणिए कर्मने खपावता होय, त्यां नवमे गुणठाणे लोभना संख्याता खंड करी, तेने उपशम श्रेणीवाळो होय, ते उपशमावे, तथा क्षपक श्रेणीवाळो होय ते खपावे, ते संख्याता खंड मांहेलो जे वारे छेल्लो एक खंड रहे,

तेना असंख्यता सूक्ष्म खंड करीने दशमे गुणठाणे उपशमावे, अथवा क्षपक होय, ते खपावे, ते दशमा गुणठाणनुं नाम अने चारित्रनुं नाम पण सूक्ष्म संपराय छे. आ सूक्ष्म संपराय चारित्रना **विशुद्ध मानसिक** अने **संक्लिष्ट मानसिक** एवा बे भेद थाय छे; जे श्रेणी चढता होय तेने **विशुद्ध मानसिक** चारित्र होय छे, अने जे उपशम श्रेणीथी पडता होय, तेने **संक्लिष्ट मानसिक** चारित्र होय छे.

पांचमुं यथाख्यात चारित्र कहेवाय छे, ते चारित्रमां सर्व प्रकारे कषायनो अभाव होय छे. तेना छाद्मस्थिक अने कैवलिक एवा बे भेद छे. छद्मावस्थामां रहेला उपशमिकने अगीयारमे गुण ठाणे, अने क्षपकने बारमे गुणठाणे छाद्मस्थिक चारित्र होय छे. केवलीने तेरमे, अने चौदमे गुणठाणे कैवलिक चारित्र होय छे. ए चारित्र एवुं प्रभाविक छे के, तेनाथी सत्वर मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.

आ पांच प्रकारना चारित्रने धारण करनारा साधु पण पांच प्रकारना थाय छे. चालता पंचम काळमां पहेलां बे प्रकारनां चारित्रने धारण करनाराज साधुओ छे, अने पाछळना त्रण प्रकारनां चारित्र विछेद पाम्या छे.

सारांश प्रश्नो.

१ चारित्रना केटला भेद छे ? २ पांच प्रकारनां चारित्रनां नाम आपो. ३ ज्यां ज्ञान, दर्शन, अने चारित्रनो लाभ थाय, ते चारित्रनुं शुं नाम ? ४ सामायिक चारित्रना केटला भेद छे ? ५ सावद्य योगनो त्याग अने निरवद्य योगनुं सेवन करवुं, ते शुं कहेवाय, अने श्रावकने तथा साधुने ते केवी रीते होय ? ६ यथाख्यात चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते समजावो. ७ छाद्मस्थिक अने कैवलिक चारित्र कोना भेद छे, अने ते चारित्र केवी रीते होय ? तेनी बराबर समजूती आपो. ८ जेमां सत्वर मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, ते कयुं चारित्र ? ९ उपशमिक अने क्षपकने केटलामे गुणठाणे कयुं चारित्र होय छे ? ते कहो. १० छेदोपस्थापनीय चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते कहो. ११ नवा दीक्षा लीधेला शिष्यने बीजा तीर्थने आश्रीने जे चारित्र होय, तेवा चारित्रनुं शुं नाम ? १२ निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्रनो दाखलो आपो. १३ परिहार विशुद्धि चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते समजावो. १४ निर्विश मानसिक अने निर्विष्ट कायिक एटले शुं ? १५ जे श्रेणी चडता होय, अने जे उपशम श्रेणीथी पडता होय, ते कया चारित्रमां आवे छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रवर्त्तन, देशविरति, सर्व विरति, सावद्य योग, निरवद्य योग, पूर्व पर्याय, मूळ गुण, प्रायश्चित, छज्जीवणीया, अध्ययन, आ सेवक, कल्पमां, अनुचारी, उपशम श्रेणी, क्षपक श्रेणी, खपावतां, गुणठाणे, संख्याता खंड, सर्व प्रकारे, छद्मावस्था, उपशामिक, क्षपक, प्रभाविक.

पाठ ६६ मो.

७ निर्जरा तत्व.

निर्जरा तत्व ए नव तत्वमां सातमुं तत्व छे. जेनाथी जीवनी साथे बंधाएलां कर्मनो देशथी अने सर्वथी क्षय थाय, ते निर्जरा कहेवाय छे. निर्जराना सकाम निर्जरा अने अकाम निर्जरा एवा बे भेद छे. जे साधुओ तथा श्रावको पुद्गलीक सुखनी इच्छा विना फक्त मुमुक्षु थइ, मोक्षने माटे धर्म करे छे, तेमने सकाम निर्जरा होय छे, अने बीजा अज्ञानी मिथ्यात्वी जीवोने अकाम निर्जरा होय छे. कर्मनो पाक (नाश) पोतानी मेळे थाय छे, तथा उपायथी पण कर्मनो नाश थाय छे. तेनी उपर आंबानां फळ (केरी) नुं द्रष्टांत अपाय छे. जेम आंबानुं फळ वृक्षनी डाली उपर रहेलुं होय, ते छतां पोतानी मे-

ळेज पाकी जाय छे, अने कोदरा विगेरे पराळनी अंदर दाखल करवाथी पण पाकी जाय छे, तेवीज रीते कर्म निर्जरा पण बे प्रकारे थाय छे. एकेंद्रिय विगेरे जे जीव छे, तेओने जडपणाने लइ विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु टाढ, तडको, वर्षाद, अग्नि, छेदन, अने बंध विगेरे कष्ट भोगववाथी कर्मनी अकाम निर्जरा कहेवाय छे.

आ निर्जरा जे साधनथी थइ शके, तेनुं नाम तप कहेवाय छे. ते तपना बार प्रकार छे.



सारांश प्रश्नो.

१ निर्जरा तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ निर्जरा एटले शुं ? ३ निर्जराना केटला भेद छे ? ४ सकाम निर्जरा अने अकाम निर्जरा एटले शुं ? ५ अकाम निर्जरा केवा जीवोने थाय छे ? ६ निर्जरा उपर कयुं द्रष्टांत छे ? ते समजावो. ७ सकाम निर्जरा विषे समजावो. ८ तप एटले शुं ? ९ तपना केटला भेद छे.



शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

मुमुक्षु, कोदरा, पराळ, पाक, वर्षा, तप.



पाठ ६७ मो.

तप.

निर्जरा ए तपथी थाय छे. कर्मनी निर्जरा करवानुं मुख्य साधन तप छे. ते तपना बार भेद छे. छ प्रकारे बाह्य तप, अने छ प्रकारे अभ्यंतर तप–एम मळीने तपना बार भेद गणाय छे. १ अनशन, २ उणोदरी, ३ वृत्ति संक्षेप, ४ रस त्याग, ५ काय क्लेश, अने ६ संलीनता ए छ प्रकारनुं बाह्य तप कहेवाय छे. जेमां आहारनो त्याग एटले उपवास विगेरे करवामां आवे, ते अनशन नामे पहेलुं तप छे. जेमां आहार, वस्त्र, तथा राग द्वेषने ओछा करवामां आवे, ते उणोदरी नामे बीजुं तप छे. द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भावे करी, आजीविकानो संक्षेप करवो, तथा अभिग्रह करवो, के नियम धारवा, ते वृत्ति संक्षेप नामे त्रीजुं तप छे. विगय विगेरेनो त्याग करवो, अने आंबील, नीवी प्रमुख करवां ते रस त्याग नामे चोथुं तप छे. लोच, तथा उत्कट आसन विगेरे करी कष्ट सहेवुं, ते काय क्लेश नामे पांचमुं तप छे.अंग तथा उपांग विगेरेनुं संवरवुं—गोपन करवुं, ते संलीनता नामे छठुं तप छे.

आ छ प्रकारनां बाह्य तप कहेवाय छे. ते तपनी क्रिया बाहेरनी होवाथी तेनुं नाम बाह्य तप छे.

बीजां छ प्रकारनां आभ्यंतर तप छे. कीधेला अप-राधनी शुद्धि करवी, ते प्रायश्चित नामे पहेलुं तप छे. गुणवंतनी भक्ति करवी, तथा आशातना टाळवी, ते विनय नामे बीजुं तप छे. आचार्य विगेरेने आहार विगेरे लावी आपवा, तथा तेमनां अंग चांपवां, ते वैयावृत्य नामे त्रीजुं तप छे. भणवुं, भणाववुं, संदेह दूर करवो, भणेलाने फरी संभारवुं, अर्थ चिंतववो, अने धर्मोपदेश करवो, ते स्वाध्याय मामे चोथुं तप छे. आर्त्त तथा रौद्रध्यानने निवारवुं, अने धर्मध्यान तथा शुक्ल-ध्यान ध्याववुं, ते ध्यान नामे पांचमुं तप छे. कर्मना क्षय माटे कायोत्सर्ग करवो, ते कायोत्सर्ग नामे छट्टुं तप छे.

आ छ प्रकारना आभ्यंतर तप कहेवाय छे, ते तपनी क्रिया अंदरनी होवाथी तेनुं नाम आभ्यंतर तप छे.

आ बंने प्रकारना तपना साधनथी प्राणी कर्मनी निर्जरा करी शके छे; आथी करीने ते बार प्रकारनां तप निर्जरा तत्वनी अंदर गणवामां आव्या छे.

सारांश प्रश्नो.

१ निर्जरा शेनाथी थाय छे ? २ तपना केटला

भेद छे ? ३ आभ्यंतर अने बाह्य तपना केटला केटला भेद छे ? ४ अनशन अने उणोदरी तपनुं लक्षण शुं ? ५ लोच, अने उत्कट आसनथी कष्ट सहेवुं, ते कयुं तप कहेवाय ? ६ आंबील तथा नीवी विगेरे करवां ते कयुं तप ? ७ वृत्ति संक्षेप अने संलीनता तप विषे समजावो. ८ बाह्यतप एटले शुं ? ९ प्रायश्चित अने विनय तपमां शुं थाय छे ? १० आर्त्त तथा रौद्र ध्यानने निवारवुं, अने धर्म तथा शुक्ल ध्यान ध्यावुं, ते कयुं तप ? ११ स्वाध्याय अने वैयावृत्य तप विषे समजावो. १२ आभ्यंतर तप एटले शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

साधन, बाह्य, आभ्यंतर, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव, आजीविका, संक्षेप, अभिग्रह, नियम, विगय, आंबील, नीवी, उत्कट आसन, संवरवुं, गोपन, शुद्धि, आशातना, वैयावृत्य, संदेह, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान, क्षय.

पाठ ६८ मो.

तप विषे कविता.

दोहरा.

सर्व कर्मनी निर्जरा, तप करवाथी थाय;
ते तप बार प्रकारनुं. साधन श्रेष्ट गणाय. १
प्रकार छे छो बाह्यना, आभ्यंतरना तेम;
शुद्ध हृदे ते सेववा, थाय निर्जरा जेम. २
ज्यां उपवास करी रहे, ते अनशन कहेवाय;
खानपान ओछां करे, उणोदरीज गणाय. ३
नियम धरी संक्षेप ज्यां, वृत्तितणो जो थाय;
ए वृत्ति संक्षेपने, नामे तप कहेवाय. ४
तजी विगय रसनो करे, त्याग महा तप तेह;
उत्कट आसन लोचथी, काय क्लेश तप जेह. ५
ज्यां गोपन छे अंगनुं, ते संलीन गणाय;
एह बाह्य तप जाणवा, षट् भेदे ते थाय. ६
आभ्यंतर तप ते कहे, जेनो अंदर योग;
तेना पण छो भेद छे, आपे निर्जर योग. ७
कीधेला अपराधनी, शुद्धि करवी जेह;
ते प्रायश्चित जाणवुं, तेमां नहीं संदेह. ८

भक्ति जे गुणवंतनी, विनय कहे तप तेह;
सेवा वैयावृत्य छे, सर्वोत्तम तप जेह. ९

भणवुं तथा भणाववुं, ए स्वाध्याय गणाय;
धर्म शुकलनुं ध्यान ते, ध्यानतणुं तप थाय. १०

कर्म क्षय उद्देशथी, दिलमां धारी लाग;
करे काय उत्सर्गने, जाय कर्मनो डाग. ११

तप आ बार प्रकारनुं, भविजन सेवे नित्य;
थाय कर्मनी निर्जरा, धर्म तणी ए रीत. १२

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुद्ध हृदे, संक्षेप, वृत्तितणो, विगयरस, उत्कट आसन, संलीन, निर्जर योग, कर्मक्षय उद्देशथी, उत्सर्ग, काय, लाग.

पाठ ६९ मो.

बंध तत्व.

नव तत्वोमां बंध तत्वने आठमुं तत्व कहे छे, जेम दूध अने पाणी एकठां थइ मळी जाय, तेम जीवना प्रदेश अने कर्मना पुद्गलो परस्पर मळे, ते बंध कहेवाय

છે. આ બંધ શબ્દનો અર્થ બંદીવાન થાય છે; જેમ કેદમાં પડેલો કેદી સ્વતંત્ર રહી શકતો નથી, તેમ આત્મા જ્ઞાનાવરણીય, વિગેરે કર્મના બંધથી સ્વતંત્ર રહી શકતો નથી એ બંધ તત્વના ચાર ભેદ છે. પ્રકૃતિ બંધ, સ્થિતિ બંધ, અનુભાગ બંધ અને પ્રદેશ બંધ, એવાં તેમનાં નામ છે.

સ્વભાવપણે જે કર્મનું પરિણમવું, તે પહેલો પ્રકૃતિબંધ કહેવાય છે. કર્મના કાળના પરિમાણનો જે નિશ્ચય, તે બીજો સ્થિતિબંધ છે. તીવ્ર અને મંદ વિગેરે રસપણે જે કર્મનું પરિણમવું, તે ત્રીજો અનુભાગબંધ કહેવાય છે, અને કર્મ પુદ્ગલોના પ્રદેશના સમુદાયનું જે એકઠું થવું, તે ચોથો પ્રદેશબંધ કહેવાય છે.

આ ચારે બંધને સ્પષ્ટ રીતે સમજવાને માટે એક લાડવાનુ દ્રષ્ટાંત આપવામાં આવે છે. સુંઠ, પીપર, અને મરીનો બનાવેલો એક લાડવો હોય, તે જુદા જુદા સ્વભાવને ધારણ કરે છે. સુંઠ, પીપર, અને મરી એ ત્રિકટુ કહેવાય છે. જે વસ્તુ તે ત્રિકટુથી બનેલી હોય, તેનો સ્વભાવ વાયુને હરણ કરવાનો છે, તેવીજ રીતે શીત દ્રવ્યથી બનેલી વસ્તુનો સ્વભાવ પિત્તને હરણ કરવાનો છે, તથા અરડુસો અને ક્ષાર વિગેરે વસ્તુનો સ્વભાવ કફને હરવાનો છે; તેજ પ્રમાણે કર્મનો પણ જુદો જુદો સ્વભાવ છે. કોઇ કર્મનો જ્ઞાનાવરણ સ્વભાવ છે, તો કોઇનો દ- દર્શનાવરણ સ્વભાવ છે, આનું નામ પ્રકૃતિબંધ કહેવાય છે.

हवे कोइ लाडवो एक दिवस रही वगडी जाय छे, कोइ बे दिवस, कोइ चार दिवस, कोइ आठ, कोइ दश, कोइ पखवाडीयुं, अने कोइ एक मास सुधी रहे छे, अने पछी वगडी जाय छे. तेवीज रीते कोइ कर्मनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्त सुधीनी होय छे. कोइनी प्रहर, दिवस, पखवाडीयुं, मास, अने छेवटे सीत्तेर कोटाकोटी सागरोपम सुधीनी होय छे. ज्यां सुधीनी स्थिति होय, त्यां सुधी फळ आपीने नाश पामे छे, आनुं नाम स्थीतिबंध कहेवाय छे.

जेम कोइ लाडवानो रस कडवो होय छे, कोइनो मीठो होय छे, अने कोइनो कषाएलो होय छे, तेवी रीते कोइ कर्मनो रस ओछुं वधतुं सुख आपे छे, अने कोइ कर्मनो रस ओछुं वधतुं दुःख आपे छे. आ संसारमां जीवोमां जे जे अवस्था देखाय छे, ते ते अवस्था भेद कर्मना रसथीज देखाय छे. कर्मना रसने अनुभाग पण कहे छे, आनुं नाम रसबंध कहेवाय छे.

जेम कोइ लाडवो वजनमां पांच तोलानो होय छे, कोइ पाशेरनो, कोइ अडधा शेरनो, अने कोइ शेरनो होय छे, तेम कोइ कर्मना प्रदेश गणत्रीमां थोडा होय छे, अने कोइना घणा होय छे, आनुं नाम प्रदेशबंध कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ बंध तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ बंध एटले शुं ? ते दाखला साथे समजावो. ३ बंध शब्दनो अर्थ शुं छे ? ४ बंध तत्वना केटला भेद छे ? ५ प्रकृतिबंध एटले शुं ? ६ काळनो जेमां निश्चय छे, तेने कयो बंध कहे छे ? ७ अनुभागबंधनुं स्वरुप समजावो. ८ पुद्गलोना प्रदेशनो समुदाय ते कयो बंध ? ९ चार बंध माटे लाडवानो दाखलो समजावो. १० त्रिकटु एटले शुं ? ११ चार बंधने लाडवानो दाखलो आपी जुदी जुदी रीते समजावो. १२ अनुभागबंधनुं बीजुं नाम शुं कहेवाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रदेश, बंदीवान्, परिणमवुं, तीव्र, मंद, रस, शीत द्रव्य, पित्त, क्षार, अंतर्मुहूर्त्त, प्रहर, कोटाकोटी, सागरोपम, अनुभाग, कर्मना प्रदेश.

पाठ ७० मो.

बंध हेतु.

जेनाथी बंध थाय, ते बंधना हेतु कहेवाय छे, ते

हेतुना बे भाग छे. एक बंधना मूळ हेतु, अने बीजा बंधना उत्तर हेतु. बंधना मूळ हेतु चार प्रकारना छे, अने उत्तर हेतु सत्तावन प्रकारना छे. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग—ए चार मूळ हेतु छे, तेना उत्तर भेद सत्तावन थाय छे. मिथ्यात्वना पांच भेद छे, अविरतिना बार भेद छे, कषायना पचीश भेद छे, अने योगना पंदर भेद छे, एवी रीते बधा मळीने सत्तावन भेद थाय छे. आ कर्मना बंधमां वादीओ जुदा जुदा छ विकल्प करे छे, ते बधा मिथ्या छे. मिथ्या कल्पना करवी, ते विकल्प कहेवाय छे. पहेला विकल्पमां तेओ एवी शंका उठावे छे के, प्रथम जीव निर्मळ हतो; एटले पुण्य पापना बंधथी रहित हतो. पछी तेने पुण्य पापनो बंध थयो छे. आ तेनी वात तद्दन मिथ्या छे. कारण के, निर्मळ जीव कर्मनो बंध करी शकतो नथी, तेमज कर्म विना ते संसारमां पण उत्पन्न थइ शकतो नथी. जो निर्मळ जीवने कर्मनो बंध थाय, तो पछी मोक्षना जीवने पण कर्मनो बंध थाय, तो मोक्षनोज अभाव थाय, माटे ए विकल्प तद्दन मिथ्या छे.

बीजा विकल्पमां वादी एवी वात करे छे के, कर्म पहेलां हतां, अने जीव पछीथी बन्यो छे. आ वात पण तद्दन मिथ्या छे; कारण के, जीव विना कर्म कोणे कर्यां हतां ? कर्त्ता विना कर्म थइ शकतां नथी.

त्रीजा विकल्पमां कहे छे के, जीव अने कर्म एकज

साथे उत्पन्न थयां छे. आ वात पण संभवती नथी; जे वस्तु साथे उत्पन्न थाय, ते परस्पर कार्य अने कारण थइ शके नहीं, अने तेमां एवो विरोध आवशे के, जो कर्म जीवनां करेलां सिद्ध न थया, तो जीव कर्मनुं फळ पण भोगवशे नहीं.

चोथा विकल्पमां कहे छे के, जीव तो छे, पण जीवने कर्म नथी; आ वात पण मिथ्या छे. जो जीवने कर्म न होय, तो जीव सुख दुःख केवी रीते भोगवी शके ?

पांचमा विकल्पमां " जीव अने कर्म वंने नथी, " एम कहे छे. आ विकल्प तो तद्दन असत्य छे; कारण के, " जीव अने कर्म वंने नथी, " एम कहेनारो कोण छे ? ते जीव छे के वीजो छे ?

छट्ठा विकल्पमां जीव अने कर्म (माया) वंने स्वतः अनादि छे, एम कहे छे. आ कहेवामां पण विरोध आवे छे; कारण के जीवनी जेम कर्मनो पण कदापि नाश न थवो जोइए, अने जैनमां जीव तथा कर्मनो प्रवाहथी अनादी संवंध छे, पण जुनां कर्म नाश थतां जाय छे, अने नवां कर्म वंधातां जाय छे, माटे पुद्गल द्रव्यरुपे कर्म नित्य छे, अने पर्यायथी अनित्य छे; ज्यारे जीव अने कर्मनो संवंध तद्दन नाश पामे छे, त्यारे जीव मोक्ष पामे छे. आ प्रमाणे छ विकल्प समजवाथी वंध

तत्वने माटे सारी समजण पडे छे, एथी करीने कर्मना बंधना जे हेतु छे, ते अवश्य जाणवा जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ बंध हेतु एटले शुं ? २ बंधना मूळ हेतु केटला छे ? ३ बंधना उत्तर हेतु केटला छे ? ४ उत्तर हेतुना बधा भेद संक्षेपथी गणावो. ५ मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग—ए चारेना केटला भेद छे ? ते जुदा जुदा गणावो. ६ विकल्प एटले शुं ? ७ आ निर्मळ जीवने पुण्य पापनो बंध पछी लाग्यो छे, एम कहेवुं ते कयो विकल्प छे ? ८ त्रीजा विकल्पमां शुं आवे छे ? ९ कर्म पहेलां हतां, अने जीव पछीथी बन्यो छे, ए कया विकल्पमां आवे छे ? १० जीव अने कर्म बंने नथी, ए कया विकल्पमां आवे छे ? ११ चोथा विकल्पमां शुं आवे छे ? १२ जीव अने कर्म बंने अनादि छे, एवी वात शेमां छे ? १३ जैन शुं माने छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

मूळ हेतु, उत्तर हेतु, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग, मिथ्या, कल्पना, निर्मळ, अनादि.

पाठ ७१ मो.

[बंधना उत्तर हेतुना सत्तावन भेद.]

मिथ्यात्व.

जे धर्मथी विरुद्ध होय, तेने सत्य मानवुं, ते मिथ्यात्व कहेवाय छे, ते मिथ्यात्वना पांच प्रकार छे. १ आभिग्रहीक मिथ्यात्व, २ अनभिग्रहीक मिथ्यात्व, ३ अभिनिवेश मिथ्यात्व, ४ संशय मिथ्यात्व, अने ५ अनाभोग मिथ्यात्व—एवां नाम छे.

जे जीव एम जाणे के, "जे कांइ हुं समज्यो छुं ते सत्य छे, बीजानी समज ठीक नथी" आवुं धारीने सत्य असत्यनी परीक्षा करवानी जे इच्छा थाय नहीं, तेमज ते सत्य असत्यनो निर्णय पण करे नहीं, जे मत पोते ग्रहण करेलो तेज सत्य छे, एम मानी लीधी वात न मुके, ते पहेलुं आभिग्रहीक मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीव एम माने के, सर्व मतो सारा छे, सर्व मतोनी अंदर मोक्ष मळे छे. कोइ पण मतने नठारो कहेवो न जोइए, वधा धर्मोने नमस्कार करवो, आ बीजुं अनभिग्रह मिथ्यात्व छे.

जे जीव जाणीने जुठुं बोले, कदि अजाणथी कांइ भुल पडी गइ होय, अने तेने जो कोइ विद्वान् बतावे, तोपण

ते ते वातनो कदाग्रह राखे, अभिमानथी पकडेली वातने छोडे नहीं, अने पोताना कपोळ कल्पित मतने नठारी युक्तिओथी सिद्ध करवा मथन करे, तेमज वादमां हारी जाय, तोपण पोतानो मत छोडे नहीं, ते त्रीजुं अभिनिवेश मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीव श्री जिन भगवंते कहेला तत्वमां शंका करे, जैन तत्वनी गहन वात पोताना समजवामां न आवे, तेथी तेमां वारंवार संशय कर्या करे, ते चोथुं संशय मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीवने धर्म के अधर्म शी वस्तु छे ? एवो उपयोग न होय, ते पांचमुं अनाभोग मिथ्यात्व कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ मिथ्यात्व एटले शुं ? २ मिथ्यात्वना केटला प्रकार छे ? ३ अनभिग्रह मिथ्यात्व एटले शुं ? ते समजावो. ४ जेमां जीवने सत्य असत्यनी परीक्षा करवानी समजण न होय, अने जे पोते मान्युं होय तेज सत्य छे एम माने, ते केवुं मिथ्यात्व ? ५ संशय मिथ्यात्व एटले शुं ? ६ जेमां जीवने पोते करेली भुलनो कदाग्रह थाय, अने तेने कपोळकल्पित युक्तिओथी सिद्ध करवा मथे,

ते केवुं मिथ्यात्व कहेवाय ? ७ अनाभोग मिथ्यात्वनुं लक्षण कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निर्णय, कदाग्रह, कपोलकल्पित, युक्ति, मथन, गहन, उपयोग.

पाठ ७२ मो.

(बंध हेतुना सत्तावन भेद.)

अविरति अने कषाय.

जे हिंसा थाय तेवा काममांथी विराम न पामवुं, ते अविरति कहेवाय छे. ते अविरतिना बार भेद थाय छे. पांच इंद्रिय, छठुं मन, अने छकाय मळी बार भेद थाय छे. पांच इंद्रियोने पोतपोताना विषयमां प्रवर्त्तावबी, कोइ पण पापमय वस्तुथी मननो निरोध करवो नहीं, अने छ जीव निकायनी हिंसामां प्रवृत्ति करवी, ते बधी मळीने बार प्रकारनी अविरति थाय छे.

क्रोध, मान, माया, अने लोभ—ए कषाय कहेवाय छे. ते कषायना पचवीश भेद थाय छे. अनंतानु-

बंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभ, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, अने लोभ. प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, अने लोभ अने संज्वलन. क्रोध, मान, माया, अने लोभ—ए सोळ, तथा १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ स्त्री वेद, ८ पुरुष वेद, अने ९ नपुंसक वेद—ए नव नोकषाय—ए पचवीश कषायना भेद कहेवाय छे, तेओ बधा संसारनी स्थितिना मूळ कारण छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अविरति एटले शुं ? २ अविरतिना केटला भेद छे ? ३ अविरतिना बार भेद गणावो. ४ कषाय कया ? ते कहो. ५ कषायना केटला भेद थाय छे ? ६ कषायना पचवीश भेद गणावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

विराम, प्रवर्त्तावधी, पापमय वस्तु, निरोध, प्रवृत्ति, मूळ कारण.

पाठ ७३ मो.

(बंध हेतुना सत्तावन भेद.)

योग—भाग १ लो.

मन, वचन, अने काया—ए योगना त्रण प्रकार छे, ते योग बंधना हेतुमां गणाय छे. ते त्रण प्रकारना योगना उत्तर भेद पंदर थाय छे. मनोयोगना चार भेद, वचनयोगना चार भेद, अने काययोगना सात भेद, एवी रीते सर्व मळीने पंदर भेद थाय छे.

सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग, अने व्यवहार मनोयोग—ए चार मनोयोगनां नाम छे. मननुं बीजुं नाम अंतःकरण छे. तेमना द्रव्यमन अने भावमन एवा बे भेद छे. मनोवर्गणानां पुद्गल ग्रहण करी ते पुद्गलोने चिंतन धर्मरुपे मनपणे परिणमावे ते द्रव्य मन कहेवाय छे, अने कर्मना क्षय उपशमथी जे मति ज्ञान उत्पन्न थाय, तेनुं नाम भावमन कहेवाय छे. तेवा ज्ञानथी आ बधो व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने व्यवहारथी तेम सत्य विगेरेनो व्यपदेश प्राप्त करे छे. वळी उपचारथी द्रव्य मन ज्ञाता थाय छे. इंद्रियना आवरण कर्मना क्षयोपशमथी जे मनोज्ञान उत्पन्न थाय, तेवडे परिणाम पामेला आत्माने असर करवावाळी मनोवर्गणाना

संबंधथी जे कोइ जातनुं वीर्य उत्पन्न थाय, ते पण मन कहेवाय छे. तेवीज रीते वचननी वर्गणा अर्थात् परमाणुओनो समूह, तेनाथी परिणतिरुप कोइ जातनुं सामर्थ्य उत्पन्न थाय, ते वचनयोग जाणवो. मनोयोगना अने वचनयोगना मळीने आठ प्रकार थाय छे.

मनमां सत्य व्यवहारनुं चिंतवन करवुं, ते सत्य मनोयोग कहेवाय छे. जेमके आ जीवादि पदार्थ द्रव्यरुपे नित्य छे, अने पर्यायरुपे अनित्य छे, एम अनेकांतपणे चिंतववुं, ते सत्य मनोयोगनुं खरेखरुं द्रष्टांत छे. तेनाथी विपरीतपणे चिंतववुं, एटले जीवादि पदार्थनुं स्वरुप सत्य नथी, धर्म नथी, पुण्य नथी, पाप नथी, स्वर्ग नथी, अने नरक नथी, आम चिंतववुं, ते असत्य मनोयोग कहेवाय छे. ते सत्य तथा असत्य चिंतवनने वचनरुपे बोलवुं, ते सत्य वचनयोग तथा असत्य वचन योग कहेवाय छे.

कांइक सत्य अने कांइक असत्य चिंतववुं, ते मिश्र मनोयोग कहेवाय छे. जेमके, " आ गाममां आजे दश जन्म्या, तथा दश मुवा. " आमां कांइक साचुं अने कांइक जुठुं छे, तेमज गायोना टोळांने देखीने चिंतववुं के, ' आ सघी गायो छे, ' पण तेमां बळद पण होय, आ मिश्र मनोयोग कहेवाय छे, अने ते प्रमाणे वचनथी बोलवुं, ते मिश्र वचनयोग कहेवाय छे, तथा कोइनी मागणी करवानुं चिंतववुं.

जेमके " [1]हरिचंद्र अहीं आवे " दामोदर आ वस्तु आप, आम चिंतववाथी जिन वचन विरोधाय नहीं, तेथी असत्य पण नहीं, अने आराधक पण नहीं, तेथी सत्य पण नहीं, माटे आ चिंतववुं, ते व्यवहार मनोयोग कहेवाय छे, अने तेज प्रमाणे बोलवुं, ते व्यवहार वचनयोग कहेवाय छे; एवी रीते मनोयोग तथा वचनयोगना आठ भेद थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ योगना केटला प्रकार छे ? २ योगना उत्तर भेद केटला थाय छे ? ते बधा गणावो. ३ मनोयोगना चार भेदनां नाम आपो. ४ मननुं बीजुं नाम शुं ? ५ मनना केटला प्रकार छे ? ६ द्रव्यमन अने भावमननां लक्षण कहो. ७ मन ए शी वस्तु छे ? ते समजावो. ८ वचनयोग एटले शुं ? ९ मनोयोग अने वचनयोगना केटला प्रकार छे ? १० सत्य मनोयोग अने असत्य मनोयोग एटले शुं ? ते द्रष्टांत साथे समजावो. ११ सत्य वचनयोग अने असत्य वचनयोग विषे समजावो. १२ मिश्र मनोयोग एटले शुं ? ते दाखला साथे समजावो. १३ मिश्र मनोयोग अने मिश्र वचनयोगमां शो तफावत छे ? १४ व्यवहार मनोयोगनो दाखलो आपो.

---

१ हरिचंद्र शब्दना अर्थनी जरूर नथी.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

उत्तर भेद, चिंतन धर्म, व्यपदेश, ज्ञाता, आवरण कर्म, मनोवर्गणा, वीर्य, परमाणुओ, सामर्थ्य, द्रव्यरुपे, नित्य, पर्यायरुपे, अनित्य, अनेकांतपणे, विरोधाय, आराधक.

पाठ ७४ मो.

योग भाग २ जो.

आत्माने निवास करवा जे पुद्गल द्रव्यथी बनेल अवलंबन, ते काययोग कहेवाय छे; जेम वृद्ध के दुर्बल माणसने टेकारुप लाकडी होय छे, तेम आत्माने टेकारुप काययोग छे, तेना योगथी जीवने पोताना वीर्यनुं परिणामरुप सामर्थ्य होय छे. जेम अग्निना योगथी उपर रहेला घडामां रताश थाय छे, तेम कायाना करण संबंधथी आत्माना वीर्यनुं परिणाम थाय छे.

ए काययोगना सात भेद छे. १ औदारिक काययोग, २ औदारिक मिश्र काययोग, ३ वैक्रिय काययोग, ४ वैक्रिय मिश्र काययोग, ५ आहारक काययोग, ६ आहारक मिश्र काययोग, अने ७ कार्मण काययोग— आवा ते सात भेदनां नाम छे.

पहेला बे औदारिक काययोग अने औदारिक मिश्र काययोग मनुष्य अने तिर्यंचमां होय छे. त्रीजो वैक्रिय काययोग, अने चोथो वैक्रिय मिश्र काययोग, ते स्वर्गवासी देवताओमां होय छे, पांचमो आहारक काययोग, अने छठ्ठो आहारक मिश्र काययोग ते चौद पूर्वधारी साधुओमां होय छे, सातमो कार्मण काययोग. जीव ज्यारे मृत्यु पामी बीजा भवमां जाय छे, त्यारे ते रस्तामां तेनी साथे रहे छे, तेमज ते समुद्घात अवस्थामां केवलीने होय छे.

कदि अहीं कोइ शंका करे के, ज्यारे कार्मण काययोगने गणवामां आव्यो, तो पछी तैजस शरीरने लइने आठमो तैजस काययोग केम न थाय ? तेना जवाबमां कहेवानुं के, ते तैजस शरीर आहारनुं पाचन करवामां समर्थ छे, तेथी तेनो कार्मण शरीरमां समावेश थइ जाय छे, माटे तेने जुदा काययोगमां गण्युं नथी.

आ प्रमाणे काययोगना सात भेद थाय छे, जे प्रथमना भेदनी साथे मेळवतां बधा मळीने योगना पंदर भेद थया. मिथ्यात्वना पांच, अविरतिना बार, कषायना पचीश, अने योग पंदर—एम एकंदर बंधना हेतुना सत्तावन उत्तर भेद थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ काययोग एटले शुं? ते समजावो. २ काययोगने माटे जे जे दाखलाओ होय ते कहो. ३ काययोगथी जीवने केवुं सामर्थ्य थाय ? ते कहो. ४ काययोगना सात भेदना नाम आपो. ५ त्रीजो अने चोथो काययोग कोने होय छे ? ६ पहेलो अने बीजो काययोग कोने होय छे ? ७ जीवने सातमो कार्मण काययोग क्यारे थाय छे ? ८ समुद्घात अवस्थामां केवलीने कयो काययोग होय छे ? ९ चौद पूर्वधारी साधुओने कयो काययोग होय ? १० स्वर्गवासी देवताओने कयो काययोग छे ? ११ तैजस शरीरने माटे जुदो काययोग केम नथी ? १२ तैजस शरीरमां केवी शक्ति छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निवास, अवलंबन, वीर्य, सामर्थ्य, करण संबंध, चौद पूर्वधारी, समुद्घात अवस्थामां, तैजस शरीर, पाचन.

पाठ ७५ मो.

बंध तत्त्व विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भवे जंतुओ जे थकी कर्म बांधे,
कहे बंधनुं तत्त्व ते कर्म सांधे;
जुवो जेम पाणी मळे दूध साथे,
मळे कर्मनां पुद्गलो तेम[1] साथे. १

रहे जेम केदी पराधीन छाप,
रहे जीव ते कर्म आधीन आप;
गण्या मूळ ते बंधना हेतु चार,
बीजा उत्तरे[2] ते सतावंन सार. २

गणे आदि[3] मिथ्यात्वना भेद पांच,
सदा ते थकी जीवने थाय आंच;[4]
वळी अविरतिना बधा भेद बार,
वधे जे थकी जीवने कर्म भार. ३

कषायोतणा भेद पूरा पचीश,
पडे भार संसारनो तेथी शीष;[5]

---

१ आत्मा साथे. २ बीजा बंधना उत्तर हेतु सतावन छे. ३ प्रथम. ४ दुःख. ५ माथे.

ગણ્યા દશ[1] અને પાંચ જે યોગ ભેદ,
ન થાયે કદિ તે થકી કર્મ છેદ. ૪

ધરે ક્લેશ તે બંધથી જીવરાશિ,[2]
પડે તે થકી જીવને કંઠ ફાંસી;
રહો દૂર સૌ તે થકી ભવ્ય પ્રાણી,
સદા અંતરે ધર્મની વાત આણી. ૫

શિક્ષકે નીચેના શબ્દોની સમજૂતી આપવી.

જંતુઓ, છાપ, ઉચરે, આદિ, આંચ, શીષ, જીવ-શશિ, અંતરે.

પાઠ ૭૬ મો.

મોક્ષ તત્ત્વ—ભાગ ૧ લો.

મોક્ષ તત્ત્વ એ નવ તત્ત્વોમાં છેલ્લું તત્ત્વ છે. જીવનાં જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે સર્વ કર્મનો ક્ષય થવાથી પછી જીવને પોતાના શુદ્ધ સ્વરુપમાં જે રહેવું, તે મોક્ષ કહેવાય છે. મોક્ષ એ જીવનો ધર્મ છે, અને જીવ ધર્મી છે. તે ધર્મ અને ધર્મીની વચ્ચે ભેદ નથી. ધર્મી જે સિદ્ધ થયેલો જીવ

---

1 દશ અને પાંચ એટલે પંદર. 2 જીવનો સમૂહ.

तेनी जे प्ररुपणा, ते पण मोक्षनी प्ररुपणा छे. कारण के जे मोक्ष छे, ते जीव पर्याय सिद्ध थयेला जीवथी जुदो नथी. जीवना पर्याय सर्वथा जीवथी भिन्न थइ शकता नथी.

ते सिद्धोनुं स्वरुप नव प्रकारे कहेलुं छे, तेथी ते मोक्ष तत्त्वना नव नव भेद गणाय छे, ते भेदनी प्ररुपणा नव द्वारथी थाय छे. १ सत्पद प्ररुपणाद्वार, २ द्रव्य प्रमाणद्वार, ३ क्षेत्रद्वार, ४ स्पर्शनाद्वार, ५ कालद्वार, ६ अंतद्वार, ७ भागद्वार, ८ भावद्वार, अने ९ अल्प बहुत्वद्वार, आवां तेनां नाम छे.

मोक्षने विषे छतां पदनी जे प्ररुपणा, ते सत्पद प्ररुपणा नामे पहेलुं द्वार छे. आ द्वारमां छतां पदनी प्ररुपणा एवी रीते छे के, मोक्ष ए पद सत्पद छे, एटले छतुं पद छे; कारण के ते एक पद छे. आ जगतमां जेटला एक पदवाची पदार्थो छे, ते बधा छतां छे, अने जे पदार्थ बे पदवाची एटले बे पदवाळा छे, ते छतां छे, अने अछतां पण छे. जेम घट—[घडो] पट [वस्त्र] ए एक पदवाळां पद छतां छे, अने वंध्या पुत्र [वांझणीनो पुत्र] अश्वशृंग (घोडानुं शींगडुं) आ बधां बे पदनां नाम छे, ते अछतां छे, अने राजपुत्र (राजानो पुत्र) केतकी पुष्प (केतकीनुं फुल) आ बे पदवाळा पदार्थ छतां पण छे, तेथी बे पदवाळा पदार्थ

छतां पण छे, अने अछतां पण छे. आ न्यायथी मोक्षपद एक पदवाळुं छे, तेथी ते छतुं पद छे.

ते मोक्षपद अथवा सिद्ध पदने गति विगेरे चौद मार्गणानी साथे जोडी देवुं. जेमके गति चार प्रकारनी छे. १ नरक गति, २ तिर्यग् गति, ३ मनुष्य गति, ४ देव गति. तेमां मनुष्य गति शिवायनी बाकीनी त्रण गतिओमांथी सिध्ध नथी थता. इंद्रियो पांच छे. १ एकेंद्रिय, २ द्वींद्रिय, ३ त्रींद्रिय, ४ चतुरिंद्रिय, अने ५ पंचेंद्रिय. आ पंचेंद्रियमांथी सिध्ध थाय छे. बाकीनी चार इंद्रियवाळा मोक्षे नथी जता.

छ काय छे. १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, अने ६ त्रसकाय. आ छए कायमांथी त्रसकायमांथी मोक्षे जवाय छे. बाकीनी पांच कायमांथी नथी जवातुं. योग त्रण प्रकारे छे. १ मनोयोग, २ वचनयोग, अने ३ काययोग. तेमां एकेंद्रिय जीवने केवळ काययोगज छे, अने द्वींद्रियथी ते पंचेंद्रिय सुधीना जीवने काययोग तथा वचनयोग छे, अने संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त जीवने त्रणे योग छे. आ त्रणे योगवाळा मोक्षे जाय छे, तेथी ओछा योगवाळा मोक्षे जता नथी. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद—आ त्रणे वेदमां सिध्धपणानो अभाव छे. ज्यारे त्रणे वेदनो क्षय करवामां आवे, त्यारेज सिध्धपणुं प्राप्त थाय छे.

क्रोध, मान, माया अने लोभ—ए चारे कषाय पण सिद्धमां होता नथी; कारण के, ज्यारे चारे कषायनो नाश थाय, त्यारेज सिद्धावस्था मेळवाय छे.

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अने केवळज्ञान—आ पांच प्रकारे ज्ञान छे, अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंग ज्ञान–आ त्रण प्रकारे अज्ञान छे. तेमां प्रथमना मति, श्रुत, अवधि अने मनःपर्यव—ए चार ज्ञानमां अने त्रण अज्ञानमां सिद्धपणुं होतुं नथी. एकला केवळज्ञानमांज सिद्धपणुं पमाय छे.

१ सामायिक, २ छेदोपस्थापनीय, ३ परिहार विशुद्धि, ४ सूक्ष्मसंपराय, अने ५ यथाख्यात—आ पांच प्रकारनां चारित्र तथा तेनां प्रतिपक्षी देशसंयम तथा असंयम—ए बधामांथी यथाख्यात चारित्रमांथी मोक्षे जवाय छे. बाकी चारमांथी जवातुं नथी.

१ चक्षु, २ अचक्षु, ३ अवधि अने ४ केवळ–आ चार दर्शनोमां पहेलां त्रण दर्शनोमांथी सिद्ध थवातुं नथी, मात्र केवळ दर्शनमांज सिद्धपणुं पमाय छे. १ कृष्ण, २ नील, ३ कापोत, ४ तेज, ५ पद्म, अने ६ शुक्ल—आ छ लेश्याओमांथी सिद्धपणुं पमातुं नथी. अलेशी भावे सिद्धपणुं पमाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ मोक्षतत्व एटले शुं ? २ मोक्ष कोने कहेवाय ? ३ मोक्ष ए कोनो धर्म छे ? ४ धर्म अने धर्मी कोण ? ते समजावो. ५ मोक्ष कोनो पर्याय छे ? ६ मोक्षतत्त्वना केटला भेद छे ? ७ ते नव भेद अथवा नव द्वारनां नाम गणावो. ८ पहेला सत्पद प्ररुपणा नामना द्वारनो अर्थ समजावो. ९ सत्पद एटले शुं ? १० केवा पदार्थो छतां कहेवाय छे ? ११ छतां अने अछतां पदार्थो केवा होय ? १२ एक पदवाळा अने वे पदवाळा पदार्थोनां नाम आपो. १३ राजपुत्र अने केतकी पुष्प, ए केवां पद कहेवाय ? १४ चार गतिमांथी सिद्ध कइ गतिमांथी थाय ? १५ पांच इंद्रियोवाळामांथी सिद्ध कइ इंद्रियवाळा थाय ? १६ छकायमांथी सिद्ध कइ कायमां होय ? ते समजावो. १७ त्रण योगवाळा सिद्ध थाय के नहीं ? १८ एकेंद्रिय जीवने कयो योग होय ? १९ काययोग तथा वचनयोग केवा जीवने होय छे ? २० त्रणे योग केवा जीवने होय ? २१ सिद्धमां चार कषाय होय के नहीं ? २२ ज्ञान अने अज्ञान केटला प्रकारना छे ? तेनां नाम आपो. २३ पांच ज्ञानमांथी कया ज्ञानमां सिद्धपणुं पमाय छे ? २४ वधां चारित्रमां अने देशसंयम तथा असंयममांथी सिद्धपणुं पमाय के नहीं ? अने कया चारित्रवाळो मोक्षे जाय ? २५ चार दर्शनोमां कया

दर्शनमांथी सिद्धपणुं पमाय ? २६ छ लेश्याओमांथी सिद्धपणुं पमाय के नहीं ? न पमाय तेनु शुं कारण छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

धर्म, धर्मी, प्ररुपणा, पर्याय, सत्पद, एक पदवाची न्यायथी, अवेदी, अकषायी, देशसंयम, असंयम.

पाठ ७७ मो.

मोक्षतत्व भाग २ जो.

प्राणीनी भव्य अने अभव्य, आवी बे प्रकारनी अवस्था छे. बंने अवस्थामांथी भव्यमां मोक्ष छे, अभव्यमां नथी. १ क्षायिक, २ क्षयोपशम, ३ उपशम, ४ सास्वादन अने ५ वेदक—आ पांच सम्यक्त्वना प्रकार छे. तेओना प्रतिपक्षी मिथ्यात्व अने मिश्र छे. तेओमांथी क्षायिक सम्यक्त्व शिवाय बीजां चार सम्यक्त्वोमांथी सिद्धपणुं न पमाय, तेमज जे मिथ्यात्व अने मिश्र छे, तेमांथी पण सिद्धपणुं होतुं नथी. कारण के, क्षायिक शिवायना बीजां सम्यक्त्वो क्षयोपशम विगेरे भावमां वर्त्तनारां छे, अने क्षायिक सम्यक्त्व तेवुं नथी, माटे तेमां सिध्धपणुं पमाय छे,

ते क्षायिक सम्यक्त्व पण शुद्ध अने अशुद्ध एवा बे प्रकारनुं छे, तेमां जे शुध्ध क्षायिक छे, ते अपाय, तथा सत् द्रव्य रहित, एवा भवस्थ केवळीओने होय छे, अने सिद्ध परमात्माने होय छे. सादि [आदि सहित] अने सपर्यवसान (अंत सहित) छे; जे अशुद्ध क्षायिक छे, ते अपाय सहचारी एवा श्रेणिक विगेरेनुं समजवुं. ते सादि तथा सपर्यवसित छे, आथी अशुध्ध क्षायिकवाळाने सिध्धपणुं मळतुं नथी. कारण के, तेने अपाय सहचारी छे, अने शुद्ध क्षायिकवाळाने सिद्धपणुं मळे छे; कारण के, सिध्धपणामां क्षायिक सम्यक्त्व विद्यमान छे. अहीं विशेष समजवानुं एटलुं छे के, अपायनो अर्थ मतिज्ञाननो अंश थाय छे, अने सत् द्रव्यनो अर्थ शुध्ध सम्यक्त्वनुं दलियुं थाय छे; ज्यारे ते अपाय अने सत् द्रव्य, बंनेनो अभाव थाय छे, त्यारे शुध्ध क्षायिक सम्यक्त्व थाय छे.

संज्ञाना त्रण प्रकार छे. १ हेतुवादोपदेशिनी, २ दृष्टिवादोपदेशिनी. अने ३ दीर्घकालिकी एवा तेनां नाम छे. आ त्रण संज्ञाओमां जेने दीर्घकालिकी संज्ञा, ते संज्ञी कहेवाय छे. तेनुंज प्राये करीने व्यवहारमां ग्रहण कराय छे; जेने संज्ञा होय, ते संज्ञी कहेवाय छे. " आ में कर्युं छे, आ हुं करुं छुं, अने आ हुं करीश. " आ प्रमाणे त्रिकाल विषयवाळुं मनोविज्ञान जे जीवने होय छे, तेवा जीवज संज्ञी कहेवाय छे, अने तेनाथी जे विपरीत होय, ते असंज्ञी कहेवाय छे, तेथी

संज्ञीमांथी मोक्षे जवाय छे, असंज्ञीमांथी जवातुं नथी. आहार त्रण प्रकारना छे. १ ओज आहार, २ लोम आहार, अने ३ प्रक्षेप आहार-एवां तेमनां नाम छे. आ त्रणे प्रकारना आहारमांथी सिद्धपणुं पमातुं नथी, अणाहारीपणामां पमाय छे.

आ प्रमाणे सत्पद प्ररुपणा नामे पहेलुं द्वार विस्तारथी जणावी, हवे बीजां द्वार संक्षेपथी कहेवामां आवे छे.

सिद्धना जीव गणत्रीमां अनंत छे, एम सिद्धना जीव द्रव्य विषे विचारवुं, ते द्रव्य प्रमाण नामे बीजुं द्वार छे. आकाशना एक देशमां सर्व सिद्धोनुं स्थान छे, ते आकाश देशनुं प्रमाण शुं छे ? धर्मास्तिकाय विगेरे पांच द्रव्य ज्यां सुधी छे, त्यां सुधी लोक छे, एवा लोक आकाशना असंख्यातमा भागमां सिद्ध रहे छे. आ प्रमाणे सिद्धना अवगाहना क्षेत्र विषे विचारवुं, ते त्रीजुं क्षेत्रद्वार छे. जेटला आकाशना भागमां सिद्ध रहे छे, तेनाथी स्पर्शनानो भाग कांइक अधिक छे, एटले केटला आकाश प्रदेशने सिद्धना जीव फरशे एम विचारवुं, ते चोथुं स्पर्शनाद्वार छे. एक सिद्धने आश्रीने सादि अनंतकाळ अने सर्व सिद्धने आश्रीने अनादि अनंतकाळ एटले सिध्धनो काळ आदि अनंत छे, एम कहेवुं, ते पांचमुं काळद्वार छे. सिध्धोनी वच्चे अंतर नथी, सर्व सिध्धो मांहोमाहे मळीने रहेल छे, तेमज फ-

रीथी संसारमां आववापणुं नथी, तेथी पण भवअंतर नथी एम कहेवुं, ते छठुं अंतरद्वार छे. सर्व सिध्ध सर्व जीव-राशिने अनंतमे भागे छे एम कहेवुं, अथवा सिध्धना जीव संसारी जीवना केटलामे भागे छे एम विचारवुं, ते सातमुं भागद्वार छे. क्षायिक विगेरे पांच भावमांथी सिध्धना जीव कया भावे छे एम विचारवुं, अथवा सि-ध्धोने क्षायिक पारिणामिक भाव छे, वाकीना भाव नथी एम कहेवुं, ते आठमुं भावद्वार छे. नपुंसक सिध्ध सर्वथी थोडा छे, तेथी स्त्री असंख्यातगुणी अने तेथी पुरुष अ-संख्यात गुणासिध्ध थया छे, आम विचारवुं, ते नवमुं अल्प बहुत्वद्वार छे.

आ प्रमाणे मोक्ष तत्वनां नव द्वार ए नव भेद कहेवाय छे, ते दरेक अभ्यासीए बराबर ध्यान आपीने समजवानां छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सिध्धमां भव्य जाय के अभव्य ? २ सम्यक्त्व-ना केटला प्रकार ? ते गणावो. ३ सम्यक्त्वना प्रतिपक्षी कोण छे ? ४ पांच सम्यक्त्वोमां कया सम्यक्त्वमां सि-ध्धपणुं पमाय छे ? ५ मिथ्यात्व अने मिश्रमां सिध्धप-णुं पमाय के नहि ? ६ क्षायिक सम्यक्त्वमां सिध्धपणुं

होय, तेनुं शुं कारण ? ७ क्षायिक सम्यक्त्वना केटला भेद छे ? ८ शुध्ध अने अशुध्ध क्षायिक विषे समजावो. ९ भवस्थ केवलीओने केवुं क्षायिक होय छे ? १० श्रेणिक विगेरेने केवुं क्षायिक हतुं ? ११ सादि अने सपर्यवसान एटले शुं ? १२ अशुध्ध क्षायिकमां सिध्धपणुं केम न होय ? ते समजावो. १३ अपाय अने सत् द्रव्यनो अर्थ शुं ? १४ शुध्ध क्षायिक सम्यक्त्व क्यारे थाय छे ? १५ संज्ञाना केटला प्रकार छे ? १६ कइ संज्ञाथी संज्ञी कहेवाय ? १७ व्यवहारमां केवा संज्ञीनुं ग्रहण कराय छे ? १८ केवो जीव संज्ञी कहेवाय छे, अने केवो जीव असंज्ञी कहेवाय छे ? १९ आहार केटला प्रकारना छे ? तेनां नाम आपो. २० त्रणे प्रकारना आहारमांथी सिध्धपणुं होय छे के नहि ? २१ द्रव्य प्रमाणद्वारमां शेनुं चिंतवन थाय छे ? २२ सिध्धना जीव केटला आकाश प्रदेशने फरशे, एवो विचार कया द्वारमां छे ? २३ क्षेत्रद्वारमां शुं विचारवानुं छे ? २४ सिध्धोनी वच्चे अंतर नथी, ए विचार क्या द्वारमां छे ? २५ कालद्वारमां शेनो विचार छे ? २६ क्षायिक विगेरे पांच भावमांथी सिध्धना जीव कया भावे छे ? ए विचार कया द्वारमां आवे छे ? २७ भागद्वारमां शुं आवे ? ते समजावो. २८ अंतरद्वारमां शेनो विचार करवानो छे ? ते कहो. २९ अल्पबहुत्वद्वार विषे सारी रीते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

अतीतकाळ, प्रतिपक्षी, मिश्र, क्षयोपशम विगेरे भाव, अपाय, सत् द्रव्य राहित, भवस्थ केवली, शुध्ध स्वभावरुप, सम्यग्द्रष्टि, सादि, सपर्यवसान, अपाय सहचारी, मतिज्ञाननो अंश, शुध्ध सम्यक्त्व, हेतुवादोपदेशिनी, द्रष्टिवादोपदेशिनी, दीर्घकालिकी, त्रिकाळ विषयवाळुं, मनोविज्ञान, ओज आहार, लोम आहार, प्रक्षेप आहार, अणाहारी, अवगाहना क्षेत्र, फरशे, अंतर, भाव, क्षायिक पारिणामिक भाव.

पाठ ७८ मो.

सिद्धना पंदर भेद.

जे जीव मोक्षे जाय, ते सिद्ध कहेवाय छे, ते सिद्धना पंदर भेद थाय छे. १ जिन सिद्ध, २ अजिन सिद्ध, ३ तीर्थ सिद्ध, ४ अतीर्थ सिद्ध, ५ गृहस्थलिंग सिद्ध, ६ अन्यलिंग सिद्ध, ७ स्वलिंग सिद्ध, ८ स्त्रीलिंग सिद्ध, ९ पुरुषलिंग सिद्ध, १० नपुंसकलिंग सिद्ध, ११ प्रत्येक बुद्ध सिद्ध, १२ स्वयंबुद्ध सिद्ध, १३ बुद्धबोधित सिद्ध, १४ एक सिद्ध अने १५ अनेक सिद्ध, आवा ते पंदर भेदनां नाम छे.

तीर्थंकर पदवी पामीने जे मोक्षे गयेला, ते जिनसिद्धा नामे पहेलो भेद छे. सामान्य केवळी थइने जे मोक्षे गया, ते अजिनसिद्धा नामे बीजो भेद छे. तीर्थंकरने केवळज्ञान उपज्या पछी जे मोक्षे गया, ते तीर्थसिद्धा नामे त्रीजो भेद छे. तीर्थंकरने केवळज्ञान उपज्या पहेलां जे मोक्षे गया, ते अतीर्थसिध्धा नामे चोथो भेद छे. गृहस्थना वेषमां रहीने मोक्षे गया, ते गृहस्थलिंग सिध्धा नामे पांचमो भेद छे. योगी, संन्यासी अने तापस वगेरेना वेषमां रहीने मोक्षे गया, ते अन्यलिंग सिध्धा नामे छठ्ठो भेद छे. साधुना वेषे जे मोक्षे गया, ते स्वलिंग सिध्धा नामे सातमो भेद छे. स्त्रीवेद पामीने जे मोक्षे गया, ते स्त्रीलिंग सिध्धा नामे आठमो भेद छे. पुरुषवेद पामीने जे मोक्षे गया, ते पुरुषलिंग सिध्धा नामे नवमो भेद छे. नपुंसकवेद पामीने जे मोक्षे गया, ते [1]नपुंसकलिंग सिध्धा नामे दशमो भेद छे. कोइ पदार्थने देखीने प्रतिबोध पामी जे मोक्षे गया, ते प्रत्येक बुध्ध सिध्धा नामे अगीयारमो भेद छे.

गुरुना उपदेश विना पोतानी मेळे जातिस्मरण विगेरेथी प्रतिबोध पामी जे मोक्षे गया, ते स्वयंबुध्ध सिध्धा नामे बारमो भेद छे. गुरुनो उपदेश सांभळी वैराग्य पामी मोक्षे गया, ते बुध्धबोधित सिध्धा नामे तेरमो भेद

---

१ पाछळथी थयेल, जन्मथी नहीं.

छे. एक समयने विषे एकज मोक्षे गया, ते एकसिध्धा नामे चौदमो भेद छे. एक समयमां घणा जीवो मोक्षे गया, ते अनेकसिध्धा नामे पंदरमो भेद छे.

आ प्रमाणे सिद्धना पंदर भेद थाय छे. ते सिद्धना पंदर भेद मोक्षतत्वनी अंदर रहेला छे. आ पंदर भेद जाणवाथी मोक्षतत्व समजवामां वधारे सरळता पडे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सिद्ध कोने कहेवाय ? २ सिद्धना केटला भेद छे ? ते नामथी वधा गणावो. ३ सामान्य केवळी थइने मोक्षे गया होय, ते केवा सिद्ध कहेवाय ? ४ जिनसिद्धा कोने कहेवाय ? ५ तीर्थंकरने केवळज्ञान उपज्या पहेलां जे मोक्षे गया होय, ते केवा सिद्ध कहेवाय ? ६ तीर्थसिद्धा कोने कहेवाय ? ७ योगी, संन्यासी अने तापसना वेषमां रहीने मोक्षे गया होय, ते केवा सिद्ध कहेवाय ? ८ गृहस्थलिंग सिद्धा कोने कहेवाय ? ९ स्त्रीवेद पामीने मोक्षे गया होय, ते केवा सिद्ध कहेवाय ? १० स्वलिंग सिद्धा कोण कहेवाय ? ११ नपुंसकवेद पामीने मोक्षे गया होय, ते केवा सिद्ध कहेवाय ? १२ पुरुषलिंग सिध्ध कोण ? १३ गुरुना उपदेश विना पोतानी मेळे प्रतिबोध पामी मोक्षे गया होय, ते केवा सिध्ध कहेवाय ? १४ प्रत्येक

बुध्ध सिध्ध कोने कहेवाय ? १५ एक समयने विषे एकज मोक्षे गया होय, ते केवा सिध्धा कहेवाय ? १६ बुध्धबोधित सिद्धा कोने कहेवाय ? १७ अनेक सिध्धा कोण ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सामान्य केवळी, योगी, संन्यासी, तापस, जाति स्मरण.



खंड ४ थो.

पाठ ७९ मो.

अजितनाथ भाग १ लो.

चोवीश तीर्थंकरोमां बीजा तीर्थंकर अजितनाथ भगवान् कहेवाय छे. भरत चक्रवर्ती पछी घणा राजाओ थइ गया, पछी इक्ष्वाकु वंशमां तेओ थया हता, तेमने निकाचित तीर्थंकर नामकर्म बांध्या पछी बे भव करवा पड्या हता. विमळवाहन अने विजयविमानना देवता ए बे भव पछी अजितनाथनो त्रीजो भव थयो हतो. महाविदेह क्षेत्रमां वत्स नामना विजयमां सुसीमा नगरीनी अंदर विमळवाहन राजा थयो हतो, तेणे अरिंदम नामना आचार्यनी देशनाथी प्रतिबोध पामी राज्य छोडी दीधुं हतुं. विमळवाहने पोतानो मुनिधर्म यथार्थ पाळ्यो हतो, पांच समिति, त्रण गुप्ति अने बावीश परीषह सहन करी, तथा बीजां वीश स्थानकोनुं सेवन करी, तेणे तीर्थंकर नाम कर्म उपार्ज्युं हतुं. त्यांथी काळ करी विजय नामना अनुत्तर विमानमां देवता थइ त्यांथी चवीने तेओ भरतक्षेत्रमां अवतर्या हता.

इक्ष्वाकु वंशनी राजधानी विनीता नगरी के जेनुं

बीजुं नाम अयोध्या छे, तेमां अजितनाथनो जन्म थयो हतो. तेमना पितानुं नाम जितशत्रु, अने मातानुं नाम विजयादेवी हतुं. जितशत्रु राजाने सुमित्र नामे एक भाइ हतो, तेने युवराज पद आपवामां आव्युं हतुं. ज्यारे अजितनाथ विजयादेवी माताना गर्भमां आव्या, त्यारे तेमनी माताए चौद स्वप्नां जोयां हतां. तेमनो जन्म माघ शुदी आठमने दिवसे थयो हतो. तेमना सूतिकागृह अने जन्म वखतनी बधी जातनी क्रियाओ ऋषभदेव भगवंतनी पेठे करवामां आवी हती. आज समये जितशत्रु राजाना भाइ सुमित्रनी वैजयंती नामनी स्त्रीथी एक पुत्रनो जन्म थयो हतो, तेनुं नाम सगर पाडवामां आव्युं हतुं. ते बंने कुमारो साथेज उछर्या हता, अने योग्य वये अभ्यासमां पण साथेज जोडाया हता. ज्यारे अजितनाथ जुवान थया, त्यारे तेमनो विवाह सैकडो राजकन्याओनी साथे थयो हतो. पोताना पिता जितशत्रु राजाना आग्रहथी प्रभुए ते विवाह स्वीकार्यो हतो. प्रभुनो विवाह कर्या पछी राजा जितशत्रुए तेमनी पासे दीक्षा लेवानी आज्ञा मागी हती. अजितनाथे पिताने दीक्षा लेवाने खुशी साथे रजा आपी, एटले राजा जितशत्रुए मोटा उत्सवथी अजित स्वामीनो राज्याभिषेक कर्यो हतो.

अजितस्वामी राजा थया पछी तेमणे पोताना पितानो मोटा आडंबरथी दीक्षा महोत्सव कर्यो हतो. राजा जितशत्रुने राज्यनी जेम अखंड व्रतनुं पालन करतां अनु-

क्रमे केवलज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं, अने छेवटे शैलेशीकरण करी, आठ कर्मनो क्षय करी, परमपद संपादन कर्युं हतुं.

पिताना मोक्ष पछी अजितस्वामी विनीता नगरीना स्वतंत्र महाराजा थया हता. तेमणे पोतानी प्रजाने पुत्रवत् पाळी हती, दंड विगेरे शिक्षाओ कर्या विना पण सारा सारथिवडे घोडानी जेम तेमणे सर्व प्रजाने मार्गे दोरी हती, शांतिरसना सागर ए महाराजाए पोतानी प्रजामां दंड नीति चलावी न हती, एटलुंज नहीं, पण कोइनी सामे जरा भ्रकुटी पण उंची करी न हती, तथापि सौभाग्यवान् पुरुषने जेम स्त्री वश थइने रहे, तेम सर्व पृथ्वी तेमने वश थइने रहेली हती. राज्य पाळतां अजित महाराजाने कुमार वयथी मांडीने त्रेपन लाख पूर्व सुखे निर्गमन थया हता.

एक वखते सभाने विसर्जन करी, एकांत स्थळे बेठेला प्रभुने एवो विचार थयो के, आज सुधीमां मारे भोगफळ कर्म भोगवाइ गयां, हवे मारे मारा पोताना कर्त्तव्यमां विमुख थइ न रहेवुं जोइए. आ संसारमां प्राणी एकलोज उत्पन्न थाय छे, एकलोज मृत्यु पामे छे, अने भवांतरे मेळवेलां कर्मोने एकलोज अनुभवे छे, तेमां तेने कोइ पण सहायकारी थतुं नथी, तेथी आ राज्य, धन तथा देह विगेरे परिग्रहथी विमुख थइ तेनो सदुपयोग

करी, आत्म स्वरुपमां रहेवुं, के जेथी आ संसार समुद्रनो पार आवे.

आ प्रमाणे ज्यारे अजितस्वामी वैराग्य पाम्या, त्यारे सारस्वत विगेरे लोकांतिक देवताओए आवी जणाव्युं के, भगवन् ! आप स्वयंबुद्ध छो, तेथी अमे आपने बोध आपवाने लायक नथी, तथापि एटलुं मात्र याद आपीए छीए के, "आप धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो." देवताओनां आवां वचनथी तरतज प्रभुनो वैराग्य वृद्धि पाम्यो, अने तेमणे सगर कुमारने बोलावी, आ प्रमाणे कह्युं—

"प्रिय भाइ सगर ! मारी इच्छा आ संसाररुप समुद्रने तरवानी थइ छे, हवे तमे आ राज्यने चलावो." प्रभुनां आवां वचनथी सगर कुमारना नेत्रमां आंसु आवी गयां, अने तेमणे रोतां रोतां कह्युं, पूज्य बंधु ! आ शुं बोलो छो ? में आपनो शो अपराध कर्यो छे, के जेथी मने जुदो पाडवानी आवी आज्ञा करो छो ? कदि में अपराध के अभक्ति करी होय, तो ते आपनी अप्रसन्नताने माटे न थवी जोइए; कारण के, पूज्य पुरुषो पोताना अभक्त के अपराधी शिशुने शिक्षा आपे छे, पण तेने छोडी देता नथी. स्वामी ! हुं तमारा चरणनी सेवा छोडीश नहीं. ज्यारे तमे राजा थया हता, त्यारे हुं युवराज थयो हतो, तेम तमे व्रतधारी थशो, तो हुं तमारो शिष्य थइश. सगर कुमारनां आवां वचन सांभळी प्रभुए

तेने घणी रीते समजाव्यो, अने छेवटे तेने प्रभुनी आज्ञा अंगीकार करवी पडी हती.

शुभ दिवसे अजितनाथे सगरनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो, अने पछी वार्षिक दान आपवानो आरंभ कर्यो हतो. प्रभु दररोज एक करोड ने आठ लाख सोनैया आपता हता. एकंदर एक वर्षमां तेमणे अठ्याशी क्रोड ने एशी लाख सोनैया आप्या हता. वार्षिक दानने अंते इंद्रनुं आसन कंपायमान थतां इंद्र पोते सामानिक विगेरे देवताओनी साथे प्रभुनी पासे आव्यो. बीजा पण सुरेंद्रो अने असुरेंद्रो विनीता नगरीमां आव्या. अनुक्रमे तेमणे प्रभुनो दीक्षा महोत्सव कर्यो. तेना वरघोडामां प्रभु सुप्रभा नामनी पालखीमां बेसी सहस्राम्रवन नामना उद्यानमां आव्या हता. माघ शुदी नवमीने दिवसे रोहिणी नक्षत्रमां प्रभुए सप्तपर्ण वृक्ष नीचे रही, पांच मुष्टिए लोच कर्यो हतो. सौधर्म इंद्रे प्रभुना केशने पोताना उत्तरीय वस्त्रना छेडामां लइ क्षीर समुद्रमां पधराव्या हता. एवी रीते महाराजा अजितनाथ मोक्ष मार्गमां वाहनरुप एवा चारित्ररुप रथ उपर आरुढ थया हता, ते वखते तेमने चोथुं मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं. प्रभुनी साथे बीजा एक हजार राजाओए दीक्षा लीधी हती. पछी अच्युत विगेरे इंद्रो स्तुति करीने देवताओना समूहनी साथे नंदीश्वर द्वीपे महोत्सव करवा माटे चाल्या गया हता.

पछी भक्तिथी सुशोभित एवो सगर राजा प्रभुनी भक्तिपूर्वक स्तुति तथा नमस्कार करी नेत्रमां आंसु पाडतो हळवे हळवे पोतानी राजधानीमां पाछो आव्यो हतो. अजित भगवाने दीक्षा लीधा पछी बीजे दिवसे ब्रह्मदत्त राजाने घेरे क्षीरवडे छठ्ठ तपनुं पारणुं कर्युं हतुं. प्रभुना पारणाना प्रभावथी ब्रह्मदत्त राजानां आंगणामां देवताओए साडाबार क्रोड सोनैयानी, उंची जातनां वस्त्रोनी, सुगंधी जळनी अने पंचरंगी पुष्पोनी वृष्टि करी हती, तथा दुंदुभिना नाद साथे "अहोदान, अहोदान" एम उच्चार करतां जयनाद कर्यो हतो. प्रभु ज्यारे ब्रह्मदत्त राजाना घरमांथी पारणुं करी बाहेर नीकळ्या एटले तेमनां पगलां उपर ब्रह्मदत्ते एक रत्ननी पीठ करावी हती. वायुनी जेम स्वतंत्र विहारी भगवान् अजितस्वामी निर्ग्रंथ, निर्मम अने निस्पृह थइ पोताना संसर्गथी ग्राम अने शहेरोने तीर्थरुप करता सर्व पृथ्वीमां विचर्या हता. ए महानुभावे उग्र तप कर्युं हतुं, विविध प्रकारना उग्र तपथी अने विविध प्रकारना अभिग्रहोथी परीषहने सहन करतां प्रभुए बार वर्ष निर्गमन कर्यां हतां.

दरेक गाम, दरेक शहेर अने दरेक अरण्यमां फरतां फरतां प्रभु सहस्राम्रवनमां आव्या, अने त्यां सप्तच्छेद वृक्ष नीचे कायोत्सर्गे रह्या हता. त्यां प्रभुनो ध्यानरुप अग्नि दीपायमान थवाथी अग्निवडे जेम बरफनो लय थइ जाय, तेम तेमनां घातिकर्मो सर्वथा लय पामी गयां, अने

प्रभुने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं. ते समये पोष मासनी शुक्ल एकादशीनो दिवस हतो, चंद्रनी साथे रोहिणी नक्षत्रनो योग थयो हतो.

प्रभुने केवळज्ञान थवाथी सौधर्मपति इंद्रनुं आसन कंपायमान थयुं, एटले अवधि ज्ञानथी ते वात जाणी, ते इंद्र तथा बीजा इंद्रो देवताओने साथे लइ केवळज्ञाननो उत्सव करवाने आव्या हता, अने त्यां प्रभुने माटे तेमणे समवसरण रच्युं हतुं. अजित प्रभु "तीर्थाय नमः" एम कही समवसरणनी मध्ये आवेला सिंहासन उपर आरुढ थया, अने पछी इंद्रोए प्रभुनी स्तुति करी हती.

आ वृत्तांत उद्यानपाळ पासेथी सांभळी सगरराजा हर्षथी प्रभुने वांदवा आव्या, अने तेमणे वधामणी आपनार उद्यानपाळने साडाबार क्रोड सोनैयानुं इनाम आप्युं हतुं. सगरे उत्तर द्वारथी समवसरणमां प्रवेश करी प्रभुनी विनयथी स्तुति करी हती. ते समये अजितनाथ प्रभुए एवी देशना आपी, के जेमां आज्ञा, अपाय, विपाक अने संस्थानना चिंतवनरुप चार प्रकारना ध्याननुं स्वरुप विस्तारथी कही संभळाववामां आव्युं हतुं, अने ते प्रसंगे आ लोक संस्थाननुं स्वरुप पण सविस्तर जणाववामां आव्युं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ अजितनाथ भगवान् केटलामा तीर्थंकर छे ? २ अजितनाथ कया वंशमां थया हता ? ३ तेमने केटला भव करवा पडया हता ? तेमणे करेला भवनां नाम शुं ? ५ विमळवाहन कया क्षेत्रमां, कया विजयमां अने कइ नगरीमां थया हता ? ६ विमळवाहने कोना बोधथी राज्यने छोडी दीधुं हतुं ? ७ तेणे तीर्थंकर नामकर्म केवी रीते बांध्युं हतुं ? ८ विमळवाहन कया विमानमां देवता थयो हतो ? ९ अजितनाथनो जन्म कइ नगरीमां थयो हतो ? १० तेमना पितानुं अने मातानुं शुं नाम हतुं ? ११ अजितनाथना पिताना भाइनुं शुं नाम हतुं ? १२ अजितनाथ प्रभुनो जन्म कया मासमां, कया पक्षमां, कइ तिथिए थयो हतो ? १३ अजितनाथना काका सुमित्रनी स्त्रीनुं शुं नाम हतुं ? १४ सुमित्रना पुत्रनुं शुं नाम ? १५ अजितकुमारनो विवाह थयो के नहीं ? १६ अजितनाथनो विवाह थया पछी तेमना पिता जितशत्रु राजाए शी आज्ञा मागी हती ? १७ राज्य पाळतां अजितनाथने कुमारवयथी मांडीने केटला पूर्व थया हता ? १८ अजितस्वामीने वैराग्य थयो, त्यारे केवो विचार थयो हतो ? ते संक्षेपमां समजावो. १९ प्रभुने वैराग्य थतां कया देवताओ आव्या हता ? अने तेमणे शुं कह्युं हतुं ? २० अजितनाथे वैराग्य थया पछी पोताना राज्य उपर कोनो

अभिषेक कर्यो हतो ? २१ वार्षिक दानमां अजितनाथे केटला सोनैयानुं दान कर्युं हतुं ? २२ प्रभुनी दीक्षानो समय कया मासमां, कया पक्षमां, कइ तिथिमां अने कया नक्षत्रमां हतो ? २३ प्रभुने चारित्र वखते कयुं ज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं ? २४ प्रभुनी साथे केटला राजाओए दीक्षा लीधी हती ? २५ अजित भगवाने पहेलुं पारणुं कोने घेर कर्युं हतुं ? २६ दीक्षा लीधा पछी परीषह सहन करतां प्रभुए केटलां वर्षो निर्गमन कर्यां हतां ? २७ प्रभुने केवळज्ञान क्यां थयुं हतुं ? २८ केवळज्ञाननो कयो दिवस हतो ? २९ अजितप्रभुए समवसरणमां कया विषय उपर देशना आपी हती ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

इक्ष्वाकु वंश, विजय, तीर्थंकर नामकर्म, विजय विमान, युवराज पद. सूतिका गृह, शैलेशीकरण, दंडनीति, पूर्व, विसर्जन, भोगफळकर्म, भवांतरे, विमुख, आत्मस्वरुप, स्वयंबुद्ध, धर्मतीर्थ, अभक्ति, अप्रसन्नता, वार्षिक दान, क्षीर. पीठ, स्वतंत्र विहारी, निर्ग्रंथ, निर्मम, निःस्पृह, अभिग्रह, घातिकर्म, आज्ञा, अपाय, विपाक, संस्थान, लोक संस्थान.

पाठ ८० मो.

अजितनाथ—भाग २ जो.

प्रभुनी देशना समाप्त थया पछी सिंहसेन नामना तेमना मुख्य गणधरे देशना आपी हती. गणधरनी देशना संपूर्ण थया पछी सर्व देवताओ अने सगर राजा पोत-पोताने स्थाने चाल्या गया हता.

भगवान् श्री अजितनाथना तीर्थनो अधिष्ठायक महायक्ष नामे एक यक्ष थयो हतो, तेने चार मुख हतां, हाथीनुं वाहन हतुं, अने वर्ण श्याम हतो. तेना आठ हाथमां जमणी तरफ वरद मुद्रा, मुद्गर, अक्षसूत्र, अने पास–ए चार अने डावी बाजु तरफ बीजोरुं, अभय मुद्रा, अंकुश, अने शक्ति हता. अजितबला नामे प्रभुनी शासन देवी थइ हती. ते सोनेरी रंगनी देवीने चार हाथ हता, अने ते लोढाना आसनपर बेठी हती. जमणी तरफना बे हाथमां वरद मुद्रा अने पाश, अने डावी तरफना बे हाथमां बीजोरुं, अने अंकुश तेणीए धारण कर्यां छे.

सगरचक्रीए ज्यारे विनीतानगरीना राज्य उपर पोताना पौत्र भगीरथने बेसार्यो हतो, त्यारे अजितनाथ प्रभु पाछा विनीतानगरीना उद्यानमां समोसर्या हता. ते खबर

सांभळी सगर पौत्र भगीरथने साथे लइ प्रभुने वांदवा गयो हतो. सगरे प्रभुने वंदना करी स्तुति करी हती, अने प्रभुनी देशना सांभळी हती. देशनाने अंते तेणे प्रभुने दीक्षा लेवाने विनंति करी, एटले प्रभुए तेने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी हती, जेथी सगर राजाए मोटा उत्सवनी साथे प्रभूनी पासे दीक्षा लीधी हती.

केवळज्ञान उत्पन्न थयुं, त्यारथी पृथ्वीमां विहार करतां अजीत प्रभुने पंचाणु गणधरो थया हता. तेमना परिवारमां एक लाख मुनि, त्रण लाख ने त्रीश हजार साध्वी, त्रण हजार ने सातसो चौद पूर्वधारी, एक हजार ने साडाचारसो मनःपर्यव ज्ञानी, नव हजार ने चारसो अवधि ज्ञानी, बाविश हजार केवली, बार हजार ने चारसो वादी, वीस हजार ने चारसो वैक्रिय लब्धिवाळा, बे लाख ने अठाणुं हजार श्रावक, अने पांच लाख ने पीस्तालीश हजार श्राविकाओ हती. दीक्षा कल्याणकथी एक पूर्वांगे एटले चोराशी लाख वर्षे ओछा एवा एक लाख पूर्व जतां पोतानो निर्वाण समय जाणी प्रभू समेतशिखर पर्वते आव्या हता. ज्यारे तेमनुं बोंतेर लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण थवा आव्युं, एटले तेमणे एक हजार मुनिओनी साथे ते पर्वत उपर पादपोपगमन अनशन कर्युं हतुं. ते वखते आसन कंपवाथी इंद्रो प्रभूनो निर्वाण उत्सव करवाने त्यां आव्या हता. ज्यारे एक मास पूर्ण थयो, त्यारे चैत्र शुक्ल पंचमीने दिवसे चंद्र मृगशिर नक्षत्र

साथे मळेलो हतो, ते समये प्रभु निर्वाण पदने पाम्या हता.

प्रभुने कौमार अवस्थामां अढार लाख पूर्व थया हता, राज्य स्थितिमां एक पुर्वांगे सहित त्रेपनलाख पूर्व गया हता, छद्मस्थावस्थामां बार वर्ष प्रसार थयां हतां, अने केवळज्ञानमां पूर्वांगे[1] तथा बार वर्षे वर्जित एवा लक्ष पूर्व थया हता. एकंदर तेमणे बोंतेर लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं हतुं. पहेला तीर्थंकर ऋषभदेवना निर्वाणथी पचाश लाख क्रोड सागरोपम जतां आजितनाथ निर्वाण पदने पाम्या हता. तेमनी साथे बीजा एक हजार मुनिओए पादपोपगम अनशन कर्युं हतुं. तेओ पण केवळज्ञान प्राप्त करी, मोक्ष पदने पाम्या हता. सगर चक्रवर्त्ती पण केवली समुद्घात करीने क्षणवारमां प्रभुना पदने प्राप्त थया हता.

देवताओ प्रभुना मृत शरीरने शणगारी शिविकामां बेसारी, गोशीर्षचंदननी चितामां लइ गया हता, त्यां अग्निकुमारे अग्नि कर्यो हतो, अने वायुकुमारे तेने प्रज्वलित कर्यो हतो. अस्थि विना प्रभुनी बीजी सर्व धातु बळी गइ हती. पछी मेघकुमार देवताए जळ वर्षावी, ते चिताने बुझावी हती. प्रभुनी उपरनी जमणी अने डावी तरफनी दाढो शक्र अने इशान इंद्र लइ गया, अने नीचेनी बंने दाढो चमर अने बलि इंद्र लइ गया हता, बी-

---

१ पूर्वांग एटले चोराशी लाख वर्ष.

जा इंद्रोए प्रभूना दांत लीधा, अने देवताओए अस्थि लीधां हतां. इंद्रोए पोतपोतानी सुधर्मा सभानी वचमां माणवक नामना स्तंभोनी अंदर वज्रमय गोळाकार डाबलामां ते प्रभूनी दाढो मुकी, तेनी गंध, पुष्प, अने धूपथी पूजा करवा लाग्या.

सारांश प्रश्नो.

१ प्रभुना पहेला गणधरनुं शुं नाम ? २ अजितनाथना तिर्थनो अधिष्टायक यक्ष कयो ? अने तेनुं स्वरुप केवुं छे ? ३ अजित प्रभुनी शासन देवीनुं शुं नाम ? अने तेनुं स्वरुप केवुं छे ? ४ सगरे कोने राज्य आपीने दीक्षा लीधी हती ? ५ अजितनाथने गणधरो, मुनिओ, अने साध्वीओनी संख्या केटली थइ हती ? ६ अजितस्वामीने चौद पूर्वधारी, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी केवळी, वादी अने वैक्रिय लब्धिवाळा केटला केटला हता ? ७ श्रावको अने श्राविकाओ केटली थइ हती ? ८ दीक्षा कल्याणकथी केटला पूर्व जतां प्रभु समेतशिखर उपर आव्या हता ? ९ अजितनाथ प्रभुए केटलुं आयुष्य पूर्ण थतां पादपोपगम अनशन कर्युं हतुं ? १० अजित प्रभु कये दिवसे निर्वाण पाम्या हता ? ११ ते वखते कयो मास, कइ तिथि अने कयुं नक्षत्र हतुं ? १२ अजितनाथ प्रभुने कौमार अवस्थामां, राज्य स्थितिमां, छद्म-

स्थावस्थामां अने केवळज्ञानमां केटला केटला पूर्व के वर्ष थयां हतां ? १३ एकंदर तेमणे केटला लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं हतुं ? १४ पहेला तीर्थंकरना निर्वाण पछी केटला सागरोपम जतां अजितनाथनुं निर्वाण थयुं हतुं ? १५ प्रभुनी साथे केटला मुनिओए पादपोपगम अनशन कर्युं हतुं ? १६ देवताओए प्रभुनां मृत शरीरने शुं कर्युं हतुं ? १७ प्रभुनी चिता उपर देवताओए शुं शुं कर्युं हतुं ? १८ प्रभुनी उपरनी जमणी अने डावी तरफनी दाढो कया कया इंद्रो लइ गया हता ? १९ नीचेनी बे दाढो कया कया इंद्रोए लीधी हती ? २० प्रभूनां दांत अने अस्थि कोण लइ गया हता ? २१ ते दाढो इंद्रोए क्यां राखी हती ? २२ ते दाढोनी पूजा शेनाथी करता हता ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अधिष्ठायक, वरदमुद्रा, अक्षसूत्र, अभयमुद्रा, अंकुश, पर्षदा, संकेत, अग्रहार, अणुव्रत, धर्म अंगीकार, जिनोक्त, दाहशक्ति, दानशील, पुष्करवर द्वीप, दीक्षा कल्याणक, पूर्वांग, पादपोपगम अनशन, पूर्व, केवली समुद्घात, मृत शरीर, शिबिका, चिता, अस्थि, वज्रमय.

पाठ ८१ मो.

अजितनाथ चरित्र विषे कविता.

मनहर छंद.

वीजा अरिहंत प्रभु इक्ष्वाकुना वंश मांहि,
प्रगट थया छे क्षेत्र भरतमां भावथी;
विमलवाहन तणा भव मांहि जिन नाम,
कर्म शुभ करी थया देव जे प्रभावथी. १

बे भव करीने त्रीजे भवे थया जिनवर,
जितशत्रु जनकने विजया छे जननी;
आदि जिन पेरे वधी जनमनी क्रिया बनी,
माघ सुदी अष्टमी ते बनी जिन जननी[1]. २

सुमित्रने घेर वैजयंति तणा उदरथी.
प्रगट्या कुमार नाम सगर ते दिनमां;
बंने बंधु साथे रही ज्ञान कळा मेळवीने,
ज्ञानकळा वधी तेमां सारी रीते जिनमां. ३

सैंकडो नरेशतणी कन्याओनी साथे प्रभु,
विवाहित थइ भोग कर्मने पतावता;
पिता व्रतधारी बन्या अजित नरेश थया,
लाख पूर्व त्रेपन थया राज्य पाळतां; ४

---

१ जिनने उत्पन्न करनारी.

सगरने राज्य आपी माघ शुदी नवमीए,
रोहणीमां चंद्रयोगे प्रभु व्रत धारता;
ब्रह्मदत्त तणे घेर पारणुं प्रथम करी,
उग्र तप आचरीने बार वर्ष काढता. ५

पोष मास तणी शुक्ल एकादशी तणे दिन,
केवळ धारण करी प्रभु थया केवळी;
समवसरण तणा खबर जाणीने ताही,
सगर नरेश आव्या वांदवा अतिवली[1]. ६

सिंहसेन आदि गणधर थया गुणधर,
महायक्ष नामे थयो यक्ष तीर्थनायक;
नामे तो अजितवला शासननी देवी थयां,
सगरने व्रत विषे थया प्रभु स्हायक. ७

गणधर पंचाणुं ने एक लाख मुनिवर,
त्रण लाख ने हजार त्रीश साध्वीजी छे;
त्रिहजार सातसो ने चौद पूर्वधारी थया,
साडाचारसो[2] हजार मनपरयवी छे. ९

नव हजार ने वळी चारसो अवधि ज्ञानी,
वीश हजार ने चारसो वैक्रिय लब्धिना[3];
बे लाख ने अठाणुं हजार श्रावको थया छे,
पांच लाख पिस्तालीश हजार छे श्राविका. १०

---

१ अतिशय बळवान्.

२ एक हजार ने साडाचारसो मनःपर्यव ज्ञानी थया. ३ वैक्रिय लब्धिवाळा.

लाख पूर्व बहोंतेरनुं आयुष्य पूरण करी,
चैत्र शुक्ल पंचमीए प्रभू शिव पामीआ,
समेतशिखरपर आवीने अजित प्रभू,
पादपोपगम अनशनमां विरामिआ. ११

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

जनक, जननी, विवाहित, अतिबली, तीर्थनायक, पर्षदा, पादपोपगम, अनशन.

पाठ ८२ मो.

सगर चक्रवर्त्ती—भाग १ लो.

सगर चक्रवर्त्तीनो जन्म विनीतानगरीमां इक्ष्वाकुवंशने विषे थयो हतो. तेना पितानुं नाम सुमित्रविजय अने मातानुं नाम वैजयंती हतुं. तेमना जन्म वखते वैशाख मासनी शुक्ल तेरस अने रोहिणी नक्षत्रनो योग हतो. ज्यारे सगर राजानो जीव वैजयंतीना गर्भमां आव्यो, त्यारे माताए आंखां चौद स्वप्नां जोयां हतां. सगर राजाए कुमार वयमांज सर्व प्रकारनी विद्याओनो अभ्यास कर्यो हतो. ते साथे संगीतविद्यामां अने शस्त्रविद्यामां ते घणां निपुण

थया हता. ते शिवाय बीजी केटलीएक कळाओ तेओ अजितनाथ पासेथी शीख्या हता. ज्यारे सगरचक्री लायक उम्मरना थया, त्यारे तेमने उत्तम राजकन्याओनी साथे परणाववामां आव्या हता. पछी राजा जितशत्रुए अजितनाथने राज्यपद्दी, सगरने युवराजपद्दी आपी हती. अजितस्वामीए ज्यारे दीक्षा लीधी, त्यारे प्रभुनी आज्ञाथी विनीतानगरीना राज्य उपर सगरराजा आव्या हता. दीक्षा लीधा पछी अजितस्वामी एक वार विनीतानगरीना उद्यानमां समोसर्या, ते वखते देवताओ तथा तेमना इंद्रोनी साथे सगर राजा पण तेमां हाजर थया हता. इंद्रनी पछवाडे बेसीने सगरे प्रभुनी देशना सांभळी हती. प्रभुए देशना आपी, विहार कर्या पछी सगर राजाना शस्त्र मंदिरमां सुदर्शन नामे चक्ररत्न उत्पन्न थयुं हतुं. ते पछी सगर भावथी शुद्ध थइने चक्रनी पूजा करी, अने खड्गरत्नने धारण करी सारा मुहूर्त्ते गजरत्न उपर बेसी, दिशाओने ताबे करवाने नीकळ्या हता. तेमनी साथे सेनापति दंडरत्नने लइने आगळ चाल्यो हतो. ते शिवाय सर्व उपद्रवने हरनार पुरोहितरत्न, दरेक मुकामे खानपान तथा मुकामनी सगवड करी आपनार गृहिरत्न, छावणी विगेरेनी मदद करनार वर्द्धकिरत्न, उपर तथा नीचे रक्षण करनार छत्ररत्न तथा चर्मरत्न, अने अंधकारमां रक्षण करनारा मणि अने कांकणीरत्न सगर चक्रीनी साथे चाल्या हता.

सगर राजा चक्रनी पछवाडे प्रथम पूर्व दिशा तरफ चाल्या हता. ते दिशामां तेणे मागध तीर्थनी पासे छावणी नाखी, त्यां गंगा नदीमां स्नान करी, तेणे ते तीर्थना कुमारदेवनी उपर बाण नाख्युं, ते बाण उपर चक्रीना नामना अक्षर वांची मागधपति जातजातनी उमदी भेटो लइने चक्रीने शरणे आव्यो हतो. तेने सेवकनी जेम त्यां राखी, ते ठेकाणे सगरे अठ्ठाइ उत्सव कर्यो हतो. त्यांथी चक्रनी पाछळ सगर राजा दक्षिण दिशामां गया, अने मार्गमां आवेला राजाओने तावे करी रथमां बेसी, तेनी धरी सुधी दक्षिण समुद्रना जळमां उतर्यो हतो, त्यां तेणे वरदाम तीर्थना नायक वरदाम कुमारने धारी अष्टम तप कर्युं हतुं, अने तेने पहेलानी जेम बाणथी खबर आपी, एटले ते देव चक्रीनी पासे आव्यो, अने उंची जातनां आभूषणोनी भेटो आपी, सगरचक्रीने तावे थइ गयो हतो. त्यांथी सगर राजा पश्चिम दिशा तरफ आव्या हता. ते दिशामां आवेला द्रविड देशना राजाओने तावे करी, चक्रीए पश्चिमना समुद्रने कांठे छावणी नाखी हती. पहेलानी माफक ते दिशाना स्वामी प्रभासदेवने पण बाण मुकी बोलावी, तेनी भेट लइ तावे करी लीधो. ते पछी त्यांथी पाछा फरी सगरचक्री चक्रनी पछवाडे सिंधुना दक्षिण तरफना कांठेथी पूर्व तरफ चाली सिंधुदेवीना मंदिरनी पासे आव्या, अने त्यां पोतानी छावणी नाखी हती. चक्रीए अष्टम तप करवाथी सिंधुदे-

वीनुं आसन कंपी चाल्युं, अने ते देवी एक हजार ने आठ रत्नना घडा तथा बीजी उत्तम भेटो लइ, सगरचक्रीनी पासे हाजर थइ. सिंधुदेवीने तावे करी, चक्रवर्त्ती इशान दिशा तरफ कुच करी, वैताढ्य पर्वतना दक्षिण भागमां आव्या हता. त्यांना नायक वैताढ्य कुमारने तावे करी, तमिस्रा नामनी गुफा पासे आव्या हता, त्यां तेणे कृतमाल नामना देवने तावे करी दीधो हतो. पछी पोते त्यां रोकाइने पश्चिम दिशाना सिंधुना निष्कूटने जीतवा पोताना सेनापतिने अरधी सेना लइ मोकल्यो हतो.

सेनापति चर्मरत्नथी सिंधुने उतरी यवनद्वीपमां आव्यो, अने त्यां रहेला जुदीजुदी जातना म्लेच्छ लोकोने तेणे शिक्षा करी हती. ते शिवाय कच्छ देशना नायकोने तावे करी, जात जातनी उंची भेटो लइ, सिंधु उतरी ते पाछो चक्रवर्त्तीनी पासे आव्यो, अने ते वधी भेटो तेणे चक्रवर्त्तीने अर्पण करी हती.

सारांश प्रश्नो.

१ सगर चक्रवर्त्तीनो जन्म कइ नगरीमां अने कया वंशमां थयो हतो ? २ सगरचक्रीनो जन्म कया मासमां अने कइ तिथिए थयो हतो ? ३ सगरचक्रीनां माता पितानां नाम शुं हतां ? ४ जितशत्रु राजा सगरने शुं थता हता ? ५ जितशत्रु राजाए सगरने केवी पद्वी आपी

हती ? ६ सगरराजा विनीतानगरीना राज्य उपर क्यारे आव्या हता ? ७ सगरराजाना शस्त्र मंदिरमां चक्ररत्न क्यारे प्रगट थयुं हतुं ? ८ सगरराजा दिशाओने तावे करवाने नीकळ्या, त्यारे तेनी साथे कयां कयां रत्नो हतां ? ९ पुरोहितरत्न, गृहिरत्न, वर्द्धकिरत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, मणिरत्न, अने कांकणीरत्न, चक्रवर्त्तीनां शा शा काम करे छे ? १० सगरचक्रीए पूर्व, दक्षिण, अनें पश्चिम दिशामां कया कया नायकने तावे कर्या हता ? ११ सिंधुदेवीए चक्रवर्त्ती सगरने शुं भेट आपी हती ? १२ सगरराजा तमिस्रा गुफानी पासे क्यां थइने अने कोने तावे करीने आव्या हता ? १३ सगरे सेनापतिने मोकली कयो भाग जीत्यो हतो ? १४ सेनापति कइ रीते यवनद्वीपमां आव्यो, अने त्यां तेणे कोने जीत्या हता ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

रोहिणी नक्षत्र, संगीत विद्या, शस्त्र विद्या, निपुण, युवराज पदवी, उद्यान, समोसर्या, विहार, शस्त्र मंदिर, खड्गरत्न, गजरत्न, दंडरत्न, उपद्रव, पुरोहितरत्न, गृहिरत्न, वर्द्धकिरत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, कांकणीरत्न, अष्टम तप, निष्कूट, यवनद्वीप.

पाठ ८३ मो.

सगर चक्रवर्त्ती भाग २ जो.

सगरे एक वखते तमिस्रा गुफानां दक्षिण द्वारनां कमाड उघाडवानी सेनापतिने आज्ञा करी, तेथी सेनापतिए दंडरत्नथी ते द्वार उघाडी दीधां हतां. पछी सगरे हाथी उपर मणिरत्न मुकी, प्रकाश पाडी, ते गुफामां प्रवेश कर्यो हतो; त्यां वर्द्धकिरत्ननी मददथी निम्नगा अने उन्नगा नामनी बे नदीओ उतरी सगर राजा गुफानी बाहेर नीकळ्या. ते वखते आपात नामना भिल्ल लोकोए चक्रवर्त्ती उपर हुमलो कर्यो हतो, पण तेओने सगरे क्षणवारमां तावे करी दीधा हता. ते आपात जातना भिलोनी उपासनाथी मेघकुमारोए चक्री उपर वरसादनुं तोफान मचाव्युं, तेने चक्रीए चर्मरत्न अने छत्ररत्नथी दूर करी दीधुं हतुं. छेवटे तेओने पण हारी जइ चक्रीने शरण आववुं पड्युं हतुं, अने पोते करेला अपराधनी क्षमा मागी हती. त्यारपछी चक्रीए सिंधुना पश्चिम निष्कूटने जीतवा सेनापतिने मोकल्यो, अने पोते त्यांज मुकाम नाखी रह्या.

ते पछी सगरचक्री इशानमां रहेला क्षुद्र हिमालयना देवने जीतीने रूषभकूट पर्वते गया हता, अने ते पर्वतना पूर्व भाग उपर " आ अवसर्पिणी काळमां हुं सगर नामे

बीजो चक्रवर्त्ती थयो छुं." एवा अक्षरो तेणे कांकणी रत्नथी लख्या हता. त्यांथी उत्तर पूर्वने रस्ते थइ चक्रवर्त्ती गंगादेवीनी पासे आव्या हता. तेने साधी लइ दक्षिण दिशा तरफ रहेली खंडप्रपाता नामनी गुफा पासे आवी, त्याना देव नाट्यमालने तेणे तावे करी दीधो हतो. पछी चक्रीनी आज्ञाथी सेनापति अरधी सेना लइ गंगाना पूर्व निष्कूटने साधी आव्यो. ते पछी सगरचक्रीए वैताढ्य पर्वतनी बंने श्रेणीना विद्याधरोने तावे कर्या, अने तेमनी मोटी भेटो ग्रहण करी हती. पछी सेनापति पासे खंडप्रपाता गुफा उघडावी सगरचक्रीए तेमां हाथी उपर मणि राखी प्रवेश कर्यो हतो, अने तेना दक्षिण तरफना द्वारमांथी पाछा तेओ नीकळ्या हता. पछी वहार आवी तेमणे गंगाना पश्चिमना कीनारा उपर छावणी नाखी, अष्टम तप करी नव नीधिओने साधी मेळवी लीधा हता. पछी सगर राजानी आज्ञाथी सेनापतिए गंगादेवीनी पूर्वमां रहेलुं वीजुं निष्कूट साधी लीधुं हतुं. एवी रीते गंगा अने सिंधु नदीनी बंने बाजुना चार निष्कूटो अने तेनी बचे रहेला बे खंड मळी आ छ खंडवाळुं भरतक्षेत्र सगरचक्रीए पोताने तावे कर्युं हतुं. ते छ खंड साधतां सगरचक्रीने बत्रीश हजार वर्ष थयां हतां. भरतचक्रीना जेवी तेने पण बधी जातनी समृद्धि प्राप्त थइ हती. तेवी समृद्धि मेळवी तेओ पाछा पोतानी राजधानी विनीतानगरीमां आव्या हता.

एक वखते सगरचक्री एक तोफानी अने अवळी

शिक्षावाळा घोडा उपर बेसी फरवा नीकळ्या हता. ते तोफानी घोडो सगरने लइ आकाशमां उडी एक मोटा जंगलमां दोडी गयो, त्यां सगरराजा घोडानी लगामने मुकी कबजे राखी तेनी उपरथी कुदी पड्या हता. पछी चक्री पगे चाली आगळ गया, त्यां एक मोटुं सरोवर जोवामां आव्युं, तेमां न्हाइ, पाणी पी तेने कीनारे आसन कीधुं, त्यां एक सुंदर स्त्री जोवामां आवी हती. ते स्त्री वैताढ्य पर्वत उपर आवेला गगनवल्लभ नामना नगरना एक विद्याधर राजा सुलोचननी सुकेशा नामनी पुत्री हती, तेने जोतांज सगरराजाने मोह उत्पन्न थयो हतो. तेवामां कोइ सेवके आवी सगरराजाने जणाव्युं के आ सुकेशा आजथी तमारी स्त्री छे, तेनी रक्षा करो. रथनूपुर नगरना राजा पूर्णमेघे परणवाने माटे आ सुकेशानी मागणी करी हती. तेना पिताए पूर्णमेघने सुकेशाने आपी नहीं, एटले पूर्णमेघे सुलोचनने मारी नाख्यो, एटले आ स्त्रीनो भाइ सहस्रलोचन तेने लइने अहीं छुपी रीते रह्यो हतो. ते आजे तेने तमारो मेळाप थयो. पछी सहस्रलोचने आवी, ते सुकेशाने सगरराजानी साथे परणावी हती. त्यांथी सगरराजा वैताढ्य गिरि उपर आवेला गगनवल्लभ नगरमां आव्या हता, अने सहस्रलोचनने तेना राज्य उपर बेसारी विद्याधरोनो स्वामी कर्यो हतो, अने पछी पोते पाछा विनीतानगरीमां आव्या हता. ते वखते लोकोए मोटो उत्सव कर्यो हतो. ज्यारे सगर चक्रवर्त्ती

महाराणी सुकेशानी साथे राजधानीमां आव्या, एटले देवताओ सगरचक्रीनी पासे आव्या हता. तेमणे चक्रीनी आज्ञा लइ तेमनो चक्रवर्त्तीपणानो अभिषेक कर्यो हतो. अने ते वखते सगरराजा खरेखरा छ खंड पृथ्वीना पति चक्रवर्त्ती कहेवाया हता. ए महोत्सव दरेक दुकानोमां, दरेक मंदिरोमां अने दरेक रस्ताओमां बार वर्ष सुधी चाल्यो हतो.

सारांश प्रश्नो.

१ तमिस्रा गुहानां कमाड कोणे उघाड्यां हतां ? २ तेमां पेठा पछी चक्री उपर केवा भिलोए हुमलो कर्यो हतो ? ३ मेघकुमारोए चक्री उपर शुं कर्युं हतुं ? अने चक्रीए तेनाथी शीरीते बचाव कर्यो हतो ? ४ सिंधुना पश्चिम निष्कूटने चक्रीए शी रीते जीत्युं हतुं ? ५ ऋषभकूट पर्वत उपर चक्रीए केवा अक्षरो लख्या हता ? ६ खंडप्रपाता गुफामां जइ कोने तावे कर्यो हतो ? ७ गंगाना पूर्व निष्कूटने सेनापति पासे सधाव्या पछी चक्री क्यां आव्या हता ? अने कोने तावे कर्या हता ? ८ चक्रीए क्यांथी नीकळीने. कये ठेकाणे अने कयुं तप करीने नव नीधिओ मेळव्या हता ? ९ आ भरतक्षेत्रना छ खंड केवी रीते [illegible] ? १० छ खंड भरतने साधतां चक्रीने केटलां वर्ष थयां हतां ? ११ सगरराजा केवा घोडा उपर बेसी

जंगलमां आवी चड्या हता ? जंगलमां सरोवरने कांठे शुं जोयुं हतुं ? सुकेशा कोण हती ? अने कोनी पुत्री हती ? तथा सुकेशाना पिता सुलोचनने शुं थयुं हतुं ? अने तेनो भाइ सहस्रनयन तेने जंगलमां शा माटे लाव्यो हतो ? १२ सगरचक्री ते सुकेशाने परणी क्यां गया हता ? १३ सुकेशाना भाइ सहस्रलोचनने चक्रीए शुं कर्युं हतुं ? चक्रवर्त्ति महाराणी सुकेशाने लइ विनीता नगरीमां आव्या, ते पछी देवताओए शुं कर्युं हतुं ? अने चक्रवर्त्तिपणाना अभिषेकनो महोत्सव क्यां सुधी चाल्यो हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुति आपवी.

उपासना, अवसर्पिणीकाल, नवनिधि, समृद्धि, अवळी शिक्षावाळा, अभिषेक.

पाठ ८४ मो.

सगर चक्रवर्त्ति—भाग ३ जो.

सगरराजाने बधी मळी चोसठ हजार स्त्रीओ हती. तेओनाथी साठ हजार पुत्रो थया हता. तेमां सौथी मोटो

जन्हुकुमार नामे पुत्र हतो. तेओ मोटी उम्मरे विद्या तथा शस्त्र कळामां घणा निपुण थया हता. घोडाओनि खेलाधानी कळामां तेओए सारी नामना मेळवी हती. एक वखते तेमणे पोताना पिता सगरराजाने जणाव्युं के, पिताजी! तमे बधी दिशाओ जीती लीधी छे, अमारे माटे कांइ पण जीतवानुं बाकी राख्युं नथी, के जेथी अमे अमारुं पराक्रम बतावीए. तेथी जो अमने आज्ञा आपो, तो अमे मरजी प्रमाणे फरीने विहार करवानी इच्छा राखीए छीए. सगरराजाए ते पुत्रोनी मागणी कबुल करी रजा आपी, एटले ते साठ हजार कुमारो स्वेच्छाए पृथ्वी उपर फरवा नीकळ्या. ज्यारे तेओ फरवा नीकळ्या, त्यारे तेमने घणां माठां शुकन थयां हतां, तोपण तेओए भवितव्यता उपर आधार राखी, हिंमतथी बाहेर नीकळ्या हता. सगरराजाए तेमनी साथे पोतानी सेना मोकली हती. रस्तामां निशानबाजी विगेरे अनेक जातनां हथीयारना खेल करता, अने शत्रुओने ताबे करता फरता फरता तेओ अष्टापद पर्वतनी पासे आवी पहोंच्या. ते पर्वतनी सुंदर शोभा जोइ तेओ खुशी थइ गया. पछी पोताना पूर्वज भरत चक्रवर्त्तिए करावेल सिंहनिषद्या नामना चैत्यमां गया, अने त्यां श्री ऋषभदेव प्रभुनी देह प्रमाणवाळी सुंदर प्रतिमा अने भरतना तथा बाहुबलि विगेरे नवाणु भाइओनां पगलां तेमना जोवामां आव्यां. सगरना कुमारोए तेमने प्रणाम करी, भाव सहित विधिथी पूजा करी, अने

भरते आ गिरिने आठ आठ पगथीयां करेलां छे, तेथी आ गिरिनुं नाम अष्टापद पडयुं छे. ए बधी हकीकत पोताना मंत्रिओ पासेथी जाणी लीधी. पछी तेमणे त्यां भरतना जेवुं बीजुं एक मोटुं चैत्य करावानी धारणा करी. सर्वे एकठा थइने दंडरत्न हाथमां लइ, चार हजार गाउ सुधी उंडी एक मोटी खाइ खोदवा मांडी. ज्यारे आवी उंडी खाइ खोदवा मांडी, एटले नीचे आवेला नाग कुमार देवताना मंदिरो भांगवा लाग्यां. ते मोटो उपद्रव जोइ, नागलोकोमां भारे त्रास थइ गयो, एटले नागकुमारोनो राजा ज्वलनप्रभ बाहेर आव्यो, अने तेणे सगरना कुमारोने समजावी तेम करतां अटकाव्या. त्यारे जन्हुए कह्युं के, अमारा पूर्वजना आ जुना पर्वतने अचल करवा माटे अमारो प्रयत्न हतो, ते छतां आ दंडरत्ननी मोटी शक्तिथी तमने नुकशानी थइ होय तो क्षमा करो, अमे फरीथी तेम करीशुं नहीं. पछी नागराज शांत थइ पाछो गयो. पछवाडे ते खाइ पाणीथी पूरवानो विचार करी, तेओ गंगा नदीने त्यां लाव्या, अने तेनाथी ते खाइ पूरवा मांडी. जन्हुकुमार गंगा नदी खेंची त्यां आव्यो, तेथी गंगानुं “ जान्हवी ” एवुं नाम पडयुं. गंगाना जळथी पाछी नागकुमारोने मोटी हरकत थइ, एटले नागराज ज्वलनप्रभ कोपथी बाहेर आव्यो, अने पोतानी झेरवाळी द्रष्टिथी सगरना साठ हजार कुमारोने बाळी भस्म करी दीधा, तेथी चारे तरफ हाहाकार थइ रह्यो. आ

बनावथी तेमनी साथे आवेला सेनापति, सामंत, राजा अने मंडलेश विगेरे वधा गभराइ गया हता. तेमना म-नमां एवुं थइ आव्युं के, आपणे सगरराजाने शी रीते मुख वतावीशुं ? माटे अहिं मरवुं सारुं छे. आवो विचार क-रता हता, त्यां इंद्र भगवां लुगडां पहेरी ब्राह्मणने रुपे आव्यो. इंद्र तेमने धीरज आपी सगरराजाने समजाववाने रस्तामांथी कोइ अनाथ मुडदुं लइ विनिता नगरीमां आ-व्यो हतो. ते जुलम जुलम एम पोकार करतो सगरराजा-नी पासे आव्यो. राजा सगरे तेने दुःख थवानुं कारण पुछयुं, एटले ते ब्राह्मण रुपे वोल्यो, महाराज ! हुं अवंति देशनो रहेवाशी अग्निहोत्री ब्राह्मण छुं, आ मरेलो मारो पुत्र छे, हुं वाहेर गाम विद्या भणवा गयो हतो, त्यां पछवाडे मारा पुत्रने सर्पे करड्यो, अने ते मरी गयो छे. अपशु-कन थवाथी कांइ माठा थवानी शंका लावी हुं घेर आ-व्यो, त्यां में पुत्रने मरेलो जोयो, अने मारी स्त्रीने वि-लाप करती जोइ, मने भारे शोक थयो, अने रात्रे तेना अफसोसथी हुं घरमां वेसी रह्यो. तेवामां मारी उपर दया लावी, मारी कुळदेवीए आवी मने कह्युं के, पुत्र ! शोक कर नहीं. जेना घरमां कोइ मरी गयुं न होय, तेवा घ-रमांथी मंगलिक अग्नि लावी आप तो हुं तारा पुत्रने जीवतो करुं. पछी तेवुं घर शोधवाने हुं घेर घेर फर्यो, पण मने कोइ तेवुं घर मळ्युं नहीं. पछी आप चक्रवर्त्तिने घेर आव्यो छुं. आपना घरमांथी अथवा वीजा कोइना

घरमांथी मने तेवो अग्नि मंगावी आपो, जेथी मारो पुत्र जीवतो थाय.

पछी सगरराजाए तेने समजाव्यो के, अरे भाइ ! तेवुं घर कोइनुं पण होय नहीं. दरेक माणसने माथे काळ फरे छे, माटे तारे पुत्रनो शोक करवो न जोइए. पछी ब्राह्मणे सगरराजाने जणाव्युं के, राजा ! तमे बीजाने बोध आपो छो, पण जो तमारे तेवो अनुभव थाय, तो आवो बोध याद राखजो. पछी तेणे कह्युं के, राजा ! तमारा साठ हजार पुत्रो बळीने भस्म थइ गया छे, अने तमारा सामंत, मंत्रि विगेरे मरवाने तैयार थता हता, तेमने धीरज आपवानी खातर आ बधो देखाव करवामां आव्यो छे. राजा सगर ते सांभळी घणो खेद पाम्या हता. तेने ब्राह्मणरुपे थयेला ते इंद्रे राजानो मोह तोडवाने माटे केटलाएक दाखला आप्या हता, जेथी सगरराजानो शोक समाइ गयो हतो. पछी अष्टापद पर्वतनी आसपास रहेनारा लोकोए आवी फरीयाद करीके खाइने पूरतां बाहेर उछळेली गंगा नदी अमारा गामडानो नाश करे छे. पछी सगरे पोताना मोटा पुत्र जन्हुना भगीरथ नामना पुत्रने आज्ञा करी हती के, पुत्र ! तुं दंडरत्न लइने त्यां जा, अने तेवडे गंगाने खेंची पूर्व समुद्रमां मेळवी दे. पितामहनी आज्ञाथी भगीरथ अष्टापद गिरि पासे आव्यो अने अष्टम तप करी, तेणे नागकुमारोना राजा ज्वलनप्रभने प्रसन्न करी, तेनी रजा लइ गंगाने दंडरत्नथी

खेंचीने पूर्व समुद्रमां मेळवी दीधी हती. त्यारथी गंगानुं नाम भागीरथी पड्युं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ सगर राजाने वधी मळीने केटली स्त्रीओ हती? २ सगर राजाना सौथी मोटा दिकरानुं शुं नाम हतुं? ३ सगर राजानी पासे तेना साठ हजार पुत्रोए शी आज्ञा मागी हती? ४ तेओ फरता फरता कया पर्वतनी पासे गया हता? ५ अष्टापद पर्वत उपर तेमणे शुं जोयुं हतुं? ६ ते पर्वतनुं अष्टापद एवुं नाम केम पड्युं हतुं? ७ तेमणे दंडरत्नथी केटली उंडी खाइ खोदी हती? ८ खाइ खोदवाथी कोने नुकशान थयुं हतुं? ९ गंगा नदीने त्यां शामाटे लाव्या हता? १० गंगानुं नाम जान्हवी शा उपरथी पड्युं हतुं? ११ नागराज ज्वलनप्रभे सगरराजाना साठ हजार कुमारोने शामाटे बाळ्या हता? १२ साठ हजार कुमारोना बळवाथी सामंत विगेरे शुं करवाने तैयार थया हता? १३ तेमने इंद्रे केवा रुपथी शो बोध कर्यो हतो? १४ इंद्रे सगरराजानी पासे आवी शी वात कही हती? १५ ब्राह्मणरुपी इंद्रे केवी युक्तिथी सगरराजाने समजाव्या हता? १६ सगरराजानी आगळ आवीने कया लोकोए फरीयाद करी हती? १७ गंगानुं नाम भगीरथी शाथी पड्युं हतुं?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शस्त्रकळा, निपुण, विहार, स्वेच्छा, भवितव्यता, पूर्वज, देह प्रमाणवाळी, उपद्रव, अचळ, सामंत, मंडलेश, अग्निहोत्री, मंगलिक, पितामह, प्रसन्न.

पाठ ८५ मो.

सगरचक्री भाग ४ थो.

भगीरथे पोताना बळी गयेला साठ हजार काकाओनां अस्थिने गंगाना जळमां नाखी पवित्र कर्यां हतां. ते रीवाज हजु सुधी लोकोमां चाले छे. ज्यारे भगीरथ त्यांथी पाछो फर्यो, त्यारे रस्तामां एक झाडनी नीचे रहेला केवळी तेना जोवामां आव्या हता. केवळीने नमस्कार करी भगीरथे पुछ्युं हतुं के, मारा काका एकी साथे केम मृत्यु पाम्या ? तेना उत्तरमां त्रण काळने जाणनारा केवळी भगवाने[1] कह्युं के, भगीरथ ! पूर्वे एक मोटो संघ तीर्थयात्रा करवाने नीकळ्यो हतो. ते नजीकना[2] कोइ गाममां कुंभारना घरनी पासे उतर्यो. संघनी साथे

---

१ शत्रुंजय महात्म्यमां अजितनाथ प्रभुए सगर चक्रवर्तीने कह्युं छे, एम लखेल छे. २ शत्रुंजय महात्म्यमां एक लुटारु टोळी हती, तेमां एक कुंभार हतो, इत्यादिक रूपे लखेल छे.

घणी समृद्धि जोइ ते गामना लोको तेने लुंटवाने आव्या; ते वखते भला दिलना कुंभारे तेमने समजावी पाछा वाळ्या. आ खबर जाणी राजाए ते चोरना गामने बाळी नाख्युं, तेमांथी ते कुंभार वची गयो. कुंभारने मृत्यु आवतां ते मरीने विराट देशमां मोटो पैसादार वाणीयो थयो, अने पेला वळी गयेला गामना लोको ते विराट देशनी वस्तीरूपे अवतर्या. ते कुंभारनो जीव पछी उत्तम थइ अवतर्यो, त्यांथी मृत्यु पामी देवता थयो, अने ते पछी तुं भगीरथ थइ अवतर्यो छुं, अने पेला गामना लोको संसारमां घणुं भमीने तारा पिता जन्हु अने तारा काकाओ थया हता. ते संघने लुंटवाना मोटा पापथी तेओ एकी साथे वळी मुवां छे, अने तें संघने वचाव्यो हतो, माटे तुं वची गयो छुं. केवळी पासेथी आवां वचन सांभळी भगीरथने वैराग्य थयो हतो, पण पोताना पितामहने दुःख न थाय, ते माटे तेणे दीक्षा लीधी न हती. पछी भगीरथ केवळीने वांदी रथमां बेसीने विनीतानगरीमां आव्यो हतो. पोतानी आज्ञा प्रमाणे काम करी आवेला भगीरथने सगरराजाए साबासी आपी हती. पछी सगरराजा भगीरथने राज्यगादी उपर बेसारी पोते व्रत लेवाने तैयार थया. ते वखते उद्यानपाळोए अजितप्रभु समोसर्याना खबर आप्या हता. ते खबर जाणी सगरचक्री भगीरथने साथे लइ प्रभुने समवसरणमां वांदवा गया हता. प्रभुए आपेली देशना सांभळी सगरराजाए प्रभुनी स्तुति

करी, अने दीक्षा आपवानी प्रार्थना करी. प्रभुए ते वात मान्य करी, एटले भगीरथे पोताना पितामहनो नीकळवानो मोटो वरघोडो चडाव्यो, अने प्रभुनी पासे आवी, तेमने मुनिनो वेष अपाव्यो. सगरराजाए ज्यारे दीक्षा लीधी. त्यारे तेनी साथे सामंत अने बीजा मंत्रीओए पण दीक्षा लीधी हती. पछी प्रभुए देशना आपी सगरराजा विगेरेने साथे लइने त्यांथी विहार कर्यो हतो, अने भगीरथ विगेरे राजाओ अने देवताओ पोतपोताने ठेकाणे चाल्या गया हता.

सगर चक्रवर्त्ती प्रभुनी साथे रही बार अंग भण्या हता. तेमणे सारी रीते चारित्रने पाळ्युं हतुं. "हुं चक्रवर्त्ती अने तीर्थंकरनो भाइ छुं," एवो तेमणे कदी पण गर्व राख्यो न हतो, अने भारे आकरा परीषह सहन कर्या हतां. सगरराजाए पाछळथी दीक्षा लीधी हती, पण तपस्या अने भणतरना भारे गुणथी तेओ मोटेरा मुनिओथी पण अधिक थइ पड्या हता. छेवटे घातिकर्मनो क्षय थवाथी तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ भगीरथे पोताना काकाओनां अस्थि शेमां नाख्यां हतां ? २ भगीरथ गंगा लावी पाछा फर्या, त्यारे रस्तामां तेमणे कोने जोया हता ? अने तेमने शुं पुछ्युं

हतुं ? ३ भगीरथ अने सगरराजाना साठ हजार पुत्रो पूर्वे कोण हता ? तेओ बधा साथे शामाटे वळी मुआ हता ? ४ भगीरथ शामाटे बची गयो हतो ? ५ केवळी पासे भगीरथे केम दीक्षा लीधी न हती ? ६ भगीरथने राज्यगादीए वेसारी सगरराजाए शुं कर्युं हतुं ? ७ सगर-राजानी साथे कोणे कोणे दीक्षा लीधी हती ? ८ सगर-राजा प्रभुनी पासे शुं शीख्या हता ? ९ सगरराजा मोटेरा मुनिओथी पण अधिक शामाटे थइ पड्या हता ? १० छेवटे सगरराजाने केवुं ज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं ?



जैन धर्म पहेली चोपडी.

जैन धर्म वांचनमाळानी पहेली चोपडीना विद्वान मुनिराजो अने न्युसपेरवाळाओना अभिप्रायो मांहेना थोडा अभिप्रायो अहीं आपेला छे.

शियाजी विजय ता. १८-८-०६

जैन धर्मना तेम इतरने पण ए धर्मनुं शरुआतनुं सारुं ज्ञान मळे, एवुं प्राचीन सिद्धांतो साथेनुं वांचनमाळानी शैली उपर लखाएलुं आ उत्तम पुस्तक अमने पालीताणाना जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी मळ्युं छे, ने तेनी सुंदर छाप उंचा कागळोना मोटा कदनां एकसो साठ पानां तथा पाका कापडी पुंठां छतां छ आनानी कीमते एक अमूल्य पुस्तक छे. दरेक जैन घरमां, तेम बाळकना हाथमां राखवा जोग छे. पर्युसणना तहेवारोमां प्रभावना आपी, ज्ञान वस्तु बाळकने भेट अपाय, तो घणीज योग्य शरुआत अने सखावत थशे.

देशाइपोळ सुरत ता. ७–९–०६

धर्मस्नेही जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्गना

सेक्रेटरी साहेब मु. पालीताणा.

आपनी सभा तरफथी प्रगट थयेल " श्री जैन धर्म पहेली चोपडी " पुस्तक मळ्युं छे, तेनी पहोंच उपकार साथे स्वीकारीए छीए. ए पुस्तक आवती वार्षीक परीक्षा जे एकथी दोढ मासमां थनार छे, ते पछी अत्रेनी श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाळामां चलाववामां आवशे. ए लघु पुस्तक माटे अमारो नम्र अभिप्राय नीचे मुजब छे.

आ पुस्तक प्रगट करी आपनी सभाए एक खरी खोट पुरी पाडी छे. हालमां स्थळे स्थळे नवी नीकळती जैनशाळामां चलाववा माटे ए घणुं उपयोगी थइ पडशे. धर्मनुं स्वरुप धीमे धीमे बाळकोना मनपर ठसाववाने पुस्तकनी संकलना ठीक करी छे. धर्म संबंधी ऐतिहासीक बाबतोनुं धर्मना बोध साथे ज्ञान मळे, एवा कथाना पाठोनी बहु सारी योजना छे. जैन तरीके अवश्य करवा योग्य नित्य करणी जेवी के, " जीन पूजा " विगेरेनी विधिनुं जाणपणुं आ पुस्तकथी सहेजे थाय एम छे.

कविताना रचना सरल, अने बाळकोने सहेलाइथी अर्थ समजाय एवी छे. हालमां केटलाक लखनारा जाणी जोइ पुस्तकनी भाषा संस्कृत शब्दोथी भरपुर, अने लांबी

वाक्य रचनाथी मुश्केल करी नाखे छे, तेवुं आ पुस्तकमां थयेल नथी. बल्के बाळकोने तुरत समजाय, एवी व्यवहारमां वपराती भाषा राखवामां आवी छे. उपर दर्शावेल कारणोथी आ पुस्तकने अमे आवकार आपीए छीए. तेनी साथे तेना लेखकने तेमज प्रगटकर्त्ताने अभिवंदन आपीए छीए.

ली. सेवक,

CHUNILAL CHHAGANCHAND.

ओनररी मेनेजर,

श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाळा.

मुंबइ समाचार.

नवीन पद्धति उपर तैयार करवामां आवेली श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी—पालीताणा खातेना श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी श्री जैन धर्म पहेली चोपडी प्रगट करीने शाळामां शीखता विद्यार्थीओने धार्मिक ज्ञान जाणवा माटे ठीक सगवडता करवामां आवी छे. आ पुस्तकनी योजना एवी सुगम रीते करवामां आवी छे के, साधारण भाषाज्ञान धरावनारा गुजराती पांचमा धोरण सुधीना जैन विद्यार्थीओ पोताना धर्मनां प्राथमीक तत्वो

सहेलाइथी समजीने शीखी शकशे. आ पुस्तकनुं नाम जो के पहेली चोपडी आप्युं छे, तोपण तेमां समाववामां आवेली वातो उपरथी लखी वांची जाणनारा मोटी वयनां स्त्री पुरुषोने धर्मज्ञाननो सारांश जाणवामां जे मुश्केली पडे छे, ते दुर थशे. आ पुस्तकने त्रण भागमां वहेंची नांखवामां आव्युं छे, अने पहेला भागमां नवकार मंत्र, पंचपरमेष्टी, अढार दुषण, शुद्ध देव तथा धर्म, जीन प्रतिमा, पुजा तथा श्रावक दिनकृत्य विगेरे विषयो; बीजा भागमां जीवनां पांच द्वार, संसारी स्थावर जीव, पंचेंद्रिय तिर्यंच जीव, पंचेंद्रिय मनुष्य जीव, अने जीवविचार विगेरे विषयो; अने त्रीजा भागमां श्री ऋषभदेव, भरत चक्रवर्त्ती, प्रश्नचंद्र राजर्षी विगेरे चरित्रो पाठरुपे आपेलां छे. आ उपरथी जणाय छे के, आ ग्रंथावळीनो मुख्य हेतु जैन धर्मना ज्ञाननुं अध्ययन सुगम करवानुं छे. हालनो वखत केळवणीनो योग्य छे, अने जैन कोमना प्रत्येक श्रावक तथा श्राविकाए पोताना धर्मनुं ज्ञान संपादन करवुं जोइए, के जेने लगतां साधनो आवी नवा प्रकारनी पद्धति उपर पाठावळीरुपे रचाएलां पुस्तको छे. आवां सुगम साधनो जैन पाठशाळाओ सत्कार करशे, एवी आशा आपणे राखीशुं.

P. & P.

केळवणी पुस्तक १८ मुं, अंक ११ मो,

संवत १९६२ भादरवो.

श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी—पालीताणाना जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी प्रसिद्ध थयेली छे. किम्मत रु. ०—६—० छे, ते पुस्तकना प्रमाणमां घणीज ओछी छे. लीपी बाळबोध छे, अने भाषा सुगम छे. बाळकोने अने अन्यने पण जैन धर्म संबंधी कांइ ज्ञान आपवानी तथा खास करीने नीति धर्म समजाववानी एमां व्यवस्था उत्तम छे. धर्मना प्रसार माटे बाळकोना हाथमां सहेलथी आपी शके, अने तेओ सहेलथी समजी शके, एवां पुस्तकोनी घणी अगत्य छे. जैन धर्मनी शाळाओमां चलाववाने आ पुस्तक उपयोगी थशे, एम लागे छे.

जैनोदय पुस्तक १ लुं अंक १२ मो आश्विन.

श्री जैन धर्म पहेली चोपडी—आ पुस्तक श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी तेमनी उच्च श्रेणीनी वांचनमाळाना प्रथम पुस्तक तरीके बाळबोध लिपिमां बहार पडेल छे. सदरहु पुस्तकनी प्रस्तावनामां लखेल छे के—" ग्रंथावळीनो मुख्य उद्देश जैनोना द्रव्यानुयोग, चरणकरणानुयोग, अने कथानुयोगना ग्रंथो अने जैन साहित्य वांचवा तरफ अभिरुची उपजाववी ते छे. " आ

पुस्तक उक्त उद्देश केटलेक अंशे सफळ करी शके तेम छे.

कुल ६८ पाठमां त्रण विभागो पाडवामां आव्या छे. पहेला विभागमां आवश्यक संबंधी पाठो छे, बीजामां जीव तत्व संबंधी अने त्रीजामां केटलाक महा पुरुषनां जीवन चरित्रो संबंधी पाठो छे. पुस्तक मूर्तिपूजक जैन वर्गमां खास उपयोगी थइ पडे तेवुं छे. केटलीक कविता-ओमां काव्य—मेळ सचवायो नथी, तेमज कविताओमां जेवुं रहस्य होवुं जोइए तेवुं नथी. पुस्तकनुं कद १५० पृष्टनुं होवा छतां किमत रु. ०–६–० छ आना छे.

श्री जैन धर्म पहेली चोपडी—सदर ग्रंथ प्रमोदथी स्वीकारतां तत्संबंधी स्वतंत्र अभिप्राय—आ जैनी वांचनमाळामां शुद्ध देव, गुरु, धर्म, जीन पुजा, जीव विचार, चरित्रो विगेरे उत्तम रीते योग्य भाषामां लखवामां आवेल छे. कविताओ रसीक तेमज बोधक छे. चारित्रविजयजीना प्रयासने धन्यवाद घटे छे. दरेक पाठो जैन धर्म प्रवेशकने खास उपयोगी छे. पाठशाळाओमां चलाववा योग्य छे. कोन्फरन्स पण आ सीरीझ स्वीकारतां वांध जेवुं नथी. दरेक प्रकारे प्रसंशनीय छे. वर्गनो प्रयास हितकर्ता छे. दरेक जैन बंधुओने आ सीरीझ

जोवा खरीदवा खास आग्रहपूर्वक भलामण छे. इत्यलम्.

शांति.

आ वर्गनां कार्योने श्रीमंतोए सहायभूत थवुं जरुरनुं छे.

निकपरार्थी मुनि नीतिविजयजीना धर्मलाभ.

वी. स. २४३३ मागशर वदी १० सोमवासरे.

जैन धर्म पहेली चोपडी—उपरोक्त पुस्तक पण उपरोक्त वर्ग द्वारा प्रसिद्ध थयेलुं अमने अभिप्रायार्थे मळेल छे, जे स्वीकारतां हर्ष थाय छे.

वर्गनो प्रयत्न योग्य छे. चालता समयनी खामी आ पुस्तकथी पुराइ छे. विद्वान मुनि महाराजो वि. नी. संमतिथी कार्य केवुं थाय छे, तेनो नमुनो आ पुस्तक छे.

आस्तिक जैन अभ्यासीने धर्मज्ञानना उत्तम साधन रूप छे. जैन शैलिथी विरुद्ध एक वाक्य पण अंदर नथी, जे बाबतनुं मान चारित्रविजयजी महाराजने आभारी छे. बीजा भागो जलदी बहार पाडी, जैन वर्गने आश्रय आपवानी उत्तम तक छे.

वधारेमां पुस्तक खंतथी छपायेल जेथी शुद्धि पत्रक नथी, ए पण वर्गनी चडती दशानुं कारण छे.

जुदा जुदा विद्वानो तरफथी जुदी जुदी हिलचाल सीरीझ माटे थाय, ते करतां मंडळो एकत्र मळी, एकज जैन सीरीझ पसार करे तो, ते विशेष उपयोगी थाय, एम मारी धारणा छे.

इत्यलम् शान्ति शान्ति शान्ति.

मुनि मणीविजयजीना धर्मलाभ,

नीकोरा.

संवत १९६२ भाद्रपद कृष्ण ४ गुरुवार.

बनारसथी ली. कर्पूरविजयजी तरफथी.

तत्र श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग योग धर्मलाभ पूर्वक विदित थाय के, तमारो पत्र तथा जैन धर्म पहेली चोपडी बंने पहोंच्यां. तत् पुस्तक संबंधी अमारो अभिप्राय नीचे मुजब छे.

" पुस्तकमां लीधेला विषयो प्रवेशकने खास ध्यानमां लेवा जेवा छे; छतां भाषा सहज कठण वापरवामां आवी छे. कविताओ विषयने बंधबेसती अने रसिक बनेली छे. पाठशाळामां अभ्यास दाखल करवाने तत्संबंधी आ चोपडी अनुकूळ पडशे. तेमांना विषयो सारा होवाथी वांचनारने बहु अंशे लाभ थवा संभव छे. "

श्री पार्श्वजिन प्रणम्यः

पाटण खेतरवाशीपाडा,
आशो शुद ४ शनीवार.

श्री पाटणथी मुनि मोहनविजयजी तथा चारित्रविजयजी आदि ठाणाओ जोग. मु. पालीताणा मध्ये देवगुरु भक्तिकारक प्रभावक सुश्रावक शिवजीभाइ देवशी आदि वर्गना मेम्बरो जोग धर्मलाभ पहोंचे.

विशेषमां तमारा तरफथी श्री जैन धर्म पहेली चोपडी मळी छे, जेमांना दरेक पाठना विषयो एटला उपयोगी छे के, आ चोपडी दरेक पाठशाळामां ग्रहण करवामां आवे तो, हालना जमानाना उछरती वयना युवान बाळको घणुं सारुं शिक्षण प्राप्त करे, एम हुं खातरीथी कही शकुं छुं. मुंबइनी जैन कोन्फरन्स तरफथी जैन सीरीझ तैयार करवा माटे जे आर्टीकल प्रगट थयो छे, ते आर्टीकलना संबंधमां कोन्फरन्सना सेक्रेटरीओ जैन सीरीझ तैयार करवामां आवी चोपडीनो समावेश करशे, तो ते अति श्रेय गणाशे. आवी प्रथमनी पहेली चोपडी माफक धोरणोने अनुसार बीजी चोपडीओ बहार पाडवाने आ वर्ग शक्तिमान थाओ, एम हुं अंतःकरणथी इच्छुं छुं.

एज. देवदर्शने याद करशो, धर्म साधना विशेष करता रहेशो. मीति सदर.

MUNI MOHAN V.
Khetarwasi Pada, Patan.

श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग,

पालीताणा.

मुळीथी ली. श्री जैनशाळाना सेक्रेटरी शा. मगन चतुरना जयजीनेंद्र वांचशो. विनति साथे लखवानुं के; आपना तरफथी चोपडीओ नंग २ भेट तरीके मोकली, ते पहोंची छे. विशेष लखवानुं के, आपे जे प्रवेश पोथी भाग १ तथा २ नी छपावी बहार पाड्यो छे, ते जैन-शाळाओमां घणोज उपयोगी तेमज बाळवर्गमां तुरत ज्ञान संपादन थाय तेवो छे.

लखवा विनति के, अहीं हाल प्लेगना सबबथी लगभग मास छथी अत्रेनी जैनशाळा बंध छे, तेमज हवे मास्तरनी पुरेपुरी खोटने लीधे बंध छे, तो तमारा तरफ कोइ सारो हुशीयार मास्तर होय, तो पगार दर मासे रु. ८-१० सुधी आपशुं, माटे तपास करी तुरत मोकलाववा बंदोबस्त करशो. आ पत्रनो जवाब तुरत लखवा महेर-बानी करशो. एज अरज. संवत १९६३ना पेला चैत्र शुदी १४ दा. पोताना.